

## Awadhi Easy-to-Read Version

Language: अवधी (Awadhi)

Provided by: Bible League International.

Copyright and Permission to Copy

Taken from the Awadhi Easy-to-Read Version © 2005 by Bible League International.

PDF generated on 2017-08-25 from source files dated 2017-08-25.

a1ae5774-2ca2-500b-8aeb-2c74229c4519

ISBN: 978-1-5313-1308-1

## अय्यूब

अय्यूब एक ईमानदार मनई

१ ऊज नाउँ क प्रदेस मँ एक ठु मनई रहा करत रहा। ओकर नाउँ अय्यूब रहा। अय्यूब एक बहोत ईमानदार अउ बिस्सासी मनई रहा। अय्यूब परमेस्सर क उपासना करत रहत रहा अउ बुराई स दूर रहा करत रहा। २ ओकरे सात ठु बेटहना अउ तीन ठु बिटिहनी रहिन। ३ अय्यूब सात हजार भेड़िन, तीन हजार ऊँटन, एक हजार बर्धन अउ पाँच सौ गदहियन क सुआमी रहा। ओकरे लगे बहोत स नौकर रहेन। अय्यूब पूरब क सब स जियादा धन्नासेठ मँ स एक रहा।

४ अय्यूब क बेटहनन बारी-बारी स आपन घरन मँ एक दूसर क खइया क खाइ बरे बोलवा करत रहेन। उ पचे आपन बहिनियन क भी हुआँ ओकरे खाइ अउ पिइ बरे बोलावत रहेन। ५ अय्यूब क गदेलन जब भोज खाइ चुकतेन, तउ अय्यूब तड़के भिन्सारे उठत अउ आपन हर गदेलन क बदले होमबलि अर्पित करत रहा। काहेकि उ सोचत, “होइ सकत ह, मोर गदेलन आपन हिरदइ मँ परमेस्सर क निन्दा कइ के पाप किहे रहेन।” एह बरे अय्यूब हमेसा अइसा करत रहत रहा।

६ फिन सरगदूतन बरे यहोवा क सुचना देइ क दिन्हू आवा। सइतान भी ओनकर संग आवा।

७ यहोवा सइतान स कहेस, “तू कहाँ रह्या?”

सइतान जवाब देत भए यहोवा स कहेस, “मई धरती पइ एहर ओहर घूमत रहेउँ।”

८ एह पइ यहोवा सइतान स कहेस, “का तू मोर सेवक अय्यूब क लख्या? इ धरती पइ ओकरे तरह कउनो दूसर मनई नाहीं अहइ। अय्यूब एक ठु ईमानदार अउ बिस्सासी मनई अहइ। उ हमेसा परमेस्सर क आराधना करत ह अउर बुराई स सदा दूर रहत ह।”

९ सइतान जवाब दिहस, “निहचय ही! मुला अय्यूब परमेस्सर क एक खास कारण स आराधना करत ह! १० तू सदा ओकर, ओकरे घराने क अउर जउन कछू ओकरे लगे अहइ ओकर रच्छा करत ह। जउन कछू उ करत ह तू ओका सफल बनावत ह। हाँ तू ओका बहोत सारा जनावरन झुण्ड अउर रेवड़ पूरे देस मँ फइलावइ बरे दिहेस ह। ११ मुला

जउन कछू ओकरे लगे अहइ उ सब कछू क अगर तू बबाँद कइ दया तउ मई तोहका बिस्सास दियावत हउँ कि उ तोहरे मुँहे पइ तोहरे बिरुद्ध बोलइ लागी।”

१२ यहोवा सइतान स कहेस, “अगर अइसा अहइ, अय्यूब क लगे जउन कछू अहइ ओकरे संग जइसा तू चाहत ह, करा। मुला ओकरे देह का चोट न पहुँचावा।”

ओकरे पाछे, सइतान यहोवा क लगे स चला गवा।

अय्यूब क सब कछू जात रहा

१३ एक दिन, अय्यूब क पूत अउ बिटियन आपन सब स बड़का भइया क घर खइया क खात रहेन अउ दाखरस पिअत रहेन। १४ ठीक तबहिं अय्यूब क लगे एक ठु संदेसवाहक आवा अउ ओका बोला, “जब बर्धा हर जोतत रहेन अउर गदहन मइदान चरत रहेन, १५ कि सबा \*क लोग हम पचन पइ धावा बोल दिहन अउ तोहरे गोरुअन क लइ गएन। मोका तजिके तोहार सबहिं दासन क सबा क लोग मार डिएन। आप क इ खबर देइ बरे मई बचिके पराइ निकरि आवा हउँ।”

१६ अबहिं उ सन्देसवाहक कछू कहत ही रहा कि अय्यूब क लगे दूसर संदेसवाहक आवा। दूसर संदेसवाहक कहेस, “अकासे स बिजुरी गिरी अउ आप क भेड़िन अउ दास जरिके राखी होइ गएन है। आप क खबर देइ बरे मई ही बचिके निकरि पावा हउँ।”

१७ अबहिं उ संदेसवाहक आपन बात कहत ही रहा कि एक ठु अउर संदेसवाहक आइ गवा। इ तीसर संदेसवाहक कहेस, “कसदी क लोग तीन टोलियन क पठए रहेन, जउन हम पइ हमला बोल दिहन अउर उ पचे सेवकन क मारि डाई क पाछे ऊँटन क छीन लइ गएन। आपक खबर देइ बरे सिरिफ मई ही बचिके निकरि पाएउँ ह।”

१८ इ तीसर दूत अबहिं बोलत ही रहा कि एक अउर संदेसवाहक आइ गवा। इ चउथा संदेसवाहक कहेस, “आप क बेटवन अउ बिटियन सब स बड़का भाई क घर खइया क खात रहेन अउ दाखरस पिअत रहेन। १९ ठीक तबहिं रेगिस्तान स एका-एक एक ठु तेज आँधी उठी अउर उ मकान क उड़ाइके ढहाइ दिहस मकान आप क पूतन, अउ बिटियन क ऊपर आइ पड़ा अउर उ पचे मरि

\*१:१५ सबा रेगिस्तान क लोगन क एक समूह। उ पचे लोगन पइ हमला कइके ओनकर धन दौलत लूट लेत रहेन।

गएन। आप क खबर देइ बरे सिरिफ मई ही बचिके निकरि पावा हउँ।”

२० अय्यूब जब इ सुनेस तउ उ आपन ओढ़ना फारि डाएस अउर इ देखावइ बरे उ दुःखी अउर वियाकुल अहइ, उ आपन मूँडे मुड़ाइ लिहेस। अय्यूब तब धरती पइ गिरिके दण्डवत किहेस।

२१ उ कहेस:

“मोर जब इ संसारे क बीच जनम भवा रहा, मई तब नंगा रहेउँ, मोरे लगे तब कछू भी नाही रहा।

जब मई मरब अउ इ संसारे क तजब, मई नंगा होब अउर मोरे लगे कछू न होइ।

यहोवा ही देत ह

अउर यहोवा ही लेत,

यहोवा क नाउँ क बड़कई करा।”

२२ जब इ सबहि कछू घटना घटत रहा, अय्यूब न ही कउनो पाप किहस अउर न ही परमेस्सर क दोख दिहस।

सइतान फुन अय्यूब क दुःख देत ह

१ फुन एक दिन, यहोवा स मिलइ बरे सरगदूत आएन। सइतान भी ओनके संग रहा। सइतान यहोवा स मिलइ आवा रहा। २ यहोवा सइतान स पूछेस, “तू कहाँ रहया”

सइतान यहोवा क जवाब दिहेस, “मई धरती पइ एहर-ओहर घूमत रहेउँ।”

३ एह पइ यहोवा सइतान स पूछेस, “का तू मोर सेवक अय्यूब पइ धियान देत रहत अहा? ओकर जइसा धरती पइ कउनो नाही अहइ। अय्यूब ईमानदार अउ बिस्सासी मनई अहइ। उ हमेसा परमेस्सर क उपासना करत ह, बुराई स दूर रहत ह। उ अबहुँ भी ईमानदारी राखत ह हालाँकि तू मोका प्रेरित किहे रहया कि मई बिना कारण ही ओका नस्ट कइ देउँ।”

४ सइतान जवाब दिहस, “खाल क बदले खाल! कउनो मनई जिअत रहइ बरे, जउन कछू ओकरे लगे अहइ, सब कछू दइ डावत ह। ५ यह बरे अगर तू आपन सक्ती क प्रयोग ओकरे देह क नोस्कान पहोँचावइ बरे करा, तउ उ सीधा ही तोहका कोसइ लागी।”

६ तउ यहोवा सइतान स कहेस, “अगर अइसा अहइ, तउ मई अय्यूब क तोहरे हवाले करत हउँ, मुला तोहका ओका मार डावइ क छूट नाही अहइ।”

७ ओकरे पाछे सइतान यहोवा क लगे स चला गवा। उ अय्यूब क दुःख देइवाला फोड़न क दइ

दिहस। इ सबइ पीरा देइवाला फोड़न ओकरे गोड़े क तलवा स लइके ओकरे मूँडे क ऊपर तलक देह मँ फइल गएन। ५ तउ अय्यूब कूड़ा क ढेरी क लगे बइठ गवा। ओकरे लगे एक ठु टीकरा रहा, जेहसे उ आपन पीरा दायक फोड़न क खजुआवा करत रहा। ९ अय्यूब क पत्नी ओसे कहेस, “का तू अबहुँ तलक ईमानदार रहइ चाहत ही? तू परमेस्सर क कोसिके मर काहे नाही जात्या!”

१० अय्यूब जवाब देत भए आपन पत्नी स कहेस, “तू तउ एक मूरख मेहरारू क तरह बातन करति अहा। देखा, जब परमेस्सर उत्तम वस्तुअन क देत ह, हम ओनका अंगीकार कइ लेइत ह। तउ हमका दुःख भी अपनावइ चाही अउ सिकाइत नाही करइ चाही।” इ सचमूइ दुःखे मँ भी अय्यूब कउनो पाप नाही किहस। परमेस्सर क खिलाफ उ कछू नाही बोला।

अय्यूब क तीन मीतन क ओसे भेटइ आउब

११ अय्यूब क तीन मितर रहेन: तेमानी क एलीपज, सूही क बिलदद अउर नामाती क सोपर। एन तीनहुँ मीतन अय्यूब क संग जउन बुरी घटना भइ रहिन, ओन सबन क बारे मँ सुनेन। एन तीनहुँ मीत आपन-आपन घर तजिके आपुस मँ एक दूसर स भेटेन। उ पचे इ निहचय किहेन कि उ पचे अय्यूब क लगे जाइके ओकरे बरे सहानुभूति परगट करइ अउ ओकर हिम्मत बँधावइ। १२ जब इ तीनहुँ मीत दूर स अय्यूब क लखेन, तउ उ पचे ओका बहोत मुस्किल स पहिचान पाएन। उ पचे भोकारा मारिके रोवइ लागेन। उ पचे आपन ओढ़ना फाड़ि डाएन। आपन दुःख अउ आपन बेचैनी देखावइ बरे उ पचे आपन-आपन मूँडन पइ माटी डाएन। १३ फुन उ सबइ तीनहुँ मीत अय्यूब क संग सात दिन अउ सात रात तलक भुँडया पइ बइठा रहेन। अय्यूब स कउनो एक सब्द तलक नाही कहेस काहेकि उ पचे लखत रहेन कि अय्यूब भयानक पीरा मँ रहा।

अय्यूब क उ दिना क कोसब जब उ जन्मा रहा

३ १ तब अय्यूब आपन मुँह खोलेस अउर उ दिन क कोसइ लग जब उ पइदा भवा रहा। २ उ कहेस:

३ “जउने दिन मई पइदा भवा रहेउँ, बर्बाद होइ चाही रहा।

उ राति कबहुँ न आइ होइ चाही जब उ पचे कहे रहेन कि ‘एक ठु लरिका’ पइदा भवा अहइ।

४ उ दिन अधियारा स भरा जाइ चाही रहा।

परमेस्सर उ दिन क बिसारि जात चाही रहा ।  
 उ दिन प्रकास न चमका चाही रहा ।  
 ५ उ दिन अंधियारा स पूर्ण बना होत चाही रहा  
 जेतना कि मउत अहई ।  
 बादर उ दिन क घेरे रहतेन चाही रहा ।  
 जउनो दिन मई पइदा भवा करिया बादर प्रकास  
 क डेरवाइ क खेरे देतेन चाही रहा ।  
 ६ उ राति क गहिर अंधियारा जकरि लेइ,  
 उ राति क गनती न होइ ।  
 उ राति क कउनो महीना मँ सामिल जिन करा ।  
 ७ उ राति कछू भी पइदा न करइ ।  
 कउनो भी आनन्द क ध्वनि उ राति क सुनाइ न  
 देइ ।  
 ८ सराप देइ मँ माहिर मनइयन क उ मनइयन  
 क साथ जउन लिब्यातान क जगवाइ मँ  
 सामर्थ अहइ,  
 क उ दिना क सराप देइ दया जउन दिना मई पइदा  
 भएउँ ।  
 ९ उ दिन क साँझ तारा करिया पइ जाइ दया ।  
 उ रात भिन्सारे क रोसनी बरे तरसइ अउर उ  
 प्रकास कबहुँ न आवइ दया ।  
 उ सूरज क पहिली किरन न लखि सकइ ।  
 १० काहेकि उ रात मोका पइदा होइ स नाही रोकेस ।  
 उ रात मोका इ सबइ कस्ट झेलइ स नाही रोकेस ।  
 ११ मई काहे नाही मरि गएउँ जब मई पइदा भवा  
 रहेउँ ?  
 जन्म क समइ ही मई काहे नाही मरि के बाहर आए  
 रहेउँ ?  
 १२ काहे मोर महतारी गोदी मँ मोका राखेस ?  
 काहे मोर महतारी क छुतियन मोका दूध पियाएन ।  
 १३ अगर मई तबहि मरि गवा होतेउँ जब मई पइदा  
 भवा रहेउँ  
 तउ अब मई सान्ति स होतउँ ।  
 अगर अइसा होतेन मई सोवत रहतेउँ अउर  
 आराम पउतेउँ ।  
 १४ राजा लोगन अउ बुद्धिमान मनइयन क संग  
 जउन पृथ्वी पइ पहिले रहेन ।  
 ओन लोग आपन बरे ठउर जगह बनाएन, जउन  
 अब नस्ट होइक मिट चुका अहई ।  
 १५ मोका ओन सासक लोगन क संग दफनावा जात  
 रहतेउँ  
 जउन सोना-चादी स आपन घर भरे होतेन ।  
 १६ मई गर्भपात मँ ही मरि जात रहतेउँ ।

मई दिन क प्रकास नाही देखि रहतेउँ ।  
 १७ दुट्ट जन दुःख देब तब तजि देत ही जब उ पचे  
 कबूर मँ होत ही  
 अउर थके लोग कबूर मँ आराम पावत ही ।  
 १८ हिआँ तलक कि बंदी भी सुख स कबूर मँ रहत  
 ही ।  
 हुआँ उ पचे आपन अत्याचारियन क आवाज नाही  
 सुनत ही ।  
 १९ हर तरह क लोग कबूर मँ रहत ही चाहे उ पचे  
 महत्व नामा होई या साधारण ।  
 हुआँ दास आपन सुआमी स छुटकारा पावत ह ।  
 २० “अइसे मनई क प्रकास काहे देत रहा जउन  
 दुःख झेल रहा ह ?  
 अइसे मनई क काहे जिन्गी देत रहा ह जेकर  
 जिन्गी कडुवापन स भरा रहत ह ?  
 २१ अइसा मनई मनइ चाहत ह मुला ओकर मउत  
 नाही आवत ।  
 अइसा दुःखी मरई मउत पावइ क उहइ तरह  
 तरसत ह जइसे कउनो छुपे खजाना बरे ।  
 २२ अइसे मनइयन कबूर पाइके खुस होत ही  
 अउर आनन्द मनावत ही ।  
 २३ परमेस्सर ओनसे ओनकर भविस्स छिपाए  
 राखत ह  
 अउर ओनकर चारिहुँ कइँती सुरच्छा बरे देवार  
 खड़ी करत ह ।  
 २४ मोर गहरी उदासी मोर बरे रोटी बन गवा ह ।  
 मोर विलाप जल धारा क तरह बाहेर फूट पडत ह ।  
 २५ मई जउने डेराउनी बात स डेरात रहेउँ कि कहुँ  
 उहइ मोरे संग न घटि जाइ अहइ मोरे संग  
 घटि गइ ।  
 अउर जउने बाते स मई सबन त जियादा डरेउँ,  
 उहइ मोरे संग होइ गइ ।  
 २६ नही मई सान्त होइ सकत हउँ, न ही मई आराम  
 कइ सकत हउँ ।  
 मई बहोत ही विपत्ति मँ हउँ ।”

### एलीपज क कथन

१ तब तेमान क एलीपज जवाब दिहेसः  
 २ “अगर मई तोहका कउनो राय देउँ  
 तउ का तू नाराज होब्या ? अगर अइसा अहइ तउ  
 भी मोका बोलइ चाही ।  
 ३ हे अय्युव, तू बहोत स लोगन क सिच्छा दिहा  
 अउर दुबल हाथन क तू सकती दिहा ।

१३ :८ लिब्यातान होइ सकत ह इ एक ठु भारि भरकम समुद्री दैत्य रहा । पुराने जमाने क साहित्य क अनुसार, परमेस्सर लिब्यातान क खिलाफ लड़त रहेन अउर एका सज्जन के सुरू मँ ही हराए दिहेन । लोग सोचत कि एकर मदद स सुर्य ग्रहन पइदा करत रहेन ।

४ जउन लोग लड़खड़ात रहत रहेन तोहार सब्दन ओनका हिम्मत बाँधाए रहेन  
 तू निर्बल गोइन क आपन उत्साह स सबल किहा ।  
 ५ मुला अब तोह पइ विपत्ति क पहाड़ टूट पड़ा बाटइ  
 अउर तोहार हिम्मत टूट गइ अहइ ।  
 विपदा क मार तोह पइ पड़ी  
 अउर तू ब्याकुल होइ उठ्या ।  
 ६ तोहका उ परमेस्सर पइ बिस्वास करइ चाही  
 जेका तू उपासना करत ह ।  
 आपन ईमानदारी क  
 आपन आसा बनने दया ।  
 ७ अय्यूब, इ बात क याद राखा कि कउनो भी  
 निर्दोष कबहुँ नाही नस्ट कीन्ह गएन ।  
 नीक मनई कबहुँ नाही तबाह कीन्ह गवा अहइ ।  
 ८ मई अहसे लोगन क लखेउँ ह जउन कस्टन क  
 बढ़ावत हीं  
 अउर जउन जिन्नगी क कठिन करत हीं ।  
 मुला उ पचे सदा ही दण्ड भोगत हीं ।  
 ९ परमेस्सर क दण्ड ओन लोगन क मारि डावत ह,  
 अउर ओकर किरोध ओनका नस्ट करत ह ।  
 १० दुर्जन सेर क तरह गुरांत अउ दहाड़त हीं ।  
 मुला परमेस्सर ओन दुर्जनन क चुप करावत ह ।  
 ११ बुरे लोग ओन सेरन क तरह होत हीं जेनके लगे  
 सिकार बरे कछु नाही होत ।  
 उ पचे मरि जात हीं अउर ओनकर गदेलन एहर-  
 ओहर बिखराइ जात हीं ।  
 १२ “मोरे लगे एक सँदेसा चुपचाप पहुँचावा गवा,  
 अउर मोरे काने मँ ओकर भनक पड़ी ।  
 १३ जउने तरह राति क बुरा सपना  
 नीद क उड़ाइ देत ह,  
 १४ मई डेराइ गएउँ अउ काँपते लगेउँ ।  
 मोर सबइ हडिडयन हिल गइन ।  
 १५ मोरे समन्वा स एक आतिमा जइसी गुजरी  
 जेहसे मोरे बदन मँ रोंगटा खड़ा होइ गएन ।  
 १६ उ आतिमा मोर समन्वा उटेस,  
 मुला मई एका नाही पहिचान सकउँ ।  
 मारी आँखिन क समन्वा एक सरुप खड़ा रहा ।  
 हुवाँ सन्नाटा स छावा रहा ।  
 फुन मई एक बहोत स सान्त आवाज सुनेउँ ।  
 उ पचे कहस,  
 १७ ‘का एक मनई परमेस्सर क समन्वा दोखरहित  
 होइ सकत ह ?

का एक मनई आपन सृजनहार स जियादा सुद्ध होइ  
 सकत ह ?  
 १८ परमेस्सर आपन सरग क सेवकन तक पइ  
 भरोसा नाही कइ सकत ।  
 परमेस्सर क आपन दूतन तलक मँ दोख मिलि जात  
 हीं ।  
 १९ तउ मनई तउ अउर भी जियादा गवा गुजरा बा ।  
 मनई तउ कच्ची माटा क धरौंदा मँ रहत हीं ।  
 एँन माटी क धरौंदन क नीव धूरि मँ रखी गइ  
 अहइ ।  
 इ सबइ लोगन क ओहसे भी जियादा आसानी स  
 मसलिके मार दीन्ह जात ह,  
 जउने तरह भुनगन मसलिके मार दीन्ह जात ह ।  
 २० लोग भोर स साँझ क बीच मँ मर जात हीं  
 मुला ओन पइ कउनो धियान तलक नाही देत ह ।  
 उ पचे मरि जात हीं अउर सदा बरे चला जात हीं ।  
 २१ ओनके तम्बूअन क खूटी उखाड़ दीन्ह जात हीं  
 अउर इ सबइ लोग बिना बुदधि क मरि जात हीं ।  
 २२ “अय्यूब अगर तू चाहा तउ पुकारिके लखि  
 ल्या मुला तोहका कउनो भी जवाब नाही  
 देइ ।  
 तू कउनो भी सरगदूत कइती मुड़ नाही सकत ह ।  
 २ मूरख क किरोध उहइ क नास कइ देइ ।  
 मूरख मनई क ईस्य्या ओका ही मरि डइहीं ।  
 ३ मई एक मूरख क लखे रहेउँ जउन सोचत रहा कि  
 उ सुराच्छित बाटइ ।  
 जेकर घर एका-एक सरापित कइ दीन्ह ग रहा † ।  
 ४ अइसे मूरख मनई क सन्तानन क कउनो भी  
 मदद नाही कइ सका ।  
 कचहरी मँ ओनका बचइया कउनो नाही रहा ।  
 ५ ओकरी फसल क भूखे लोग खाइ गएन ।  
 हिआँ तलक कि भूखे लोग काँटन क झाड़ियन क  
 बीच जमा भवा अन्न क उठाइ लइ गएन ।  
 जउन कछु भी ओन लोगन क लगे रहा उ सबइ  
 चिजियन क लालची मनइयन उठाइके लइ  
 गएन ।  
 ६ मुसीबत माटी स नाही निकरत ह,  
 न ही विपत्ति मैदान मँ जामत ह ।  
 ७ मनई क जन्म दुःख भोगइ बरे भवा ह ।  
 इ ओतना ही फुरइ अहइ जेतना फुरइ अहइ कि  
 आगी स चिनगारी ऊपर उठत ह ।  
 ८ मुला अय्यूब, अगर तोहरी जगह मई होतेउँ तउ  
 मई परमेस्सर क लगे जाइके

† ३ जेकर ... रहा या मुला मई ओकरे घरे क एका-एक सरापेतउँ ।

आपन दुःखड़ा कहितेउँ अउर ओकरे लगे राय माँगतेउँ।

१ परमेस्सर क कारनामा समुझइ मँ बहोत अदभुत अहइँ।

परमेस्सर क अजूबा गना नाही जाई।

१० परमेस्सर धरती पइ बर्खा क पठवत ह, अउर उहइ खेतन मँ पानी पठवा करत ह।

११ परमेस्सर विनम्र लोगन क ऊपर उठावत ह। उ ओका ऊपर उठाइके दुःखी क जन क बचावत ह।

१२ परमेस्सर चालाक अउ दुट्ट लोगन क कुचाल क रोक देत ह।

एह बरे ओनका सफलता नाही मिला करत।

१३ परमेस्सर चतुर क उहइ क चतुराइ भरी जोजना मँ पखरि लेत ह।

एह बरे ओनकर चतुराइ भरी सबइ जोजना असफल होतिन।

१४ उ सबइ चालाक लोग दिन क प्रकास अँन्धियारा क नाई होइ गवा।

हिआँ तलक कि दुपहर मँ भी उ पचे आधी-रात क जइसा टोकर खात हीं।

१५ परमेस्सर दीन मनई क मउत स बचावत ह अउर ओनका सक्तीसाली चतुर लोगन क सक्ती स बचावत ह।

१६ एह बरे दीन मनई क भरोसा अहइ कि परमेस्सर इ होइ क निआव नाही करब।

१७ “उ मनई भाग्यवान अहइ, जेकर परमेस्सर सुधार करत ह

एह बरे जब सर्व सक्तीसाली परमेस्सर तू पचन्क सजा देत होइ तउ तू आपन दुःखड़ा जिन रोआ।

१८ परमेस्सर ओन घावन पइ पट्टी बाधँत ह जेनका उ दिहस ह।

उ चोट पहाँचावत ह मुला ओकर ही हाथ चंगा भी करत हीं।

१९ उ तोहका छुः विपत्तियन स बचावा।

हा! सात विपत्तियन मँ तोहका कउनो नोस्कान न होइ।

२० अकाल क समइ परमेस्सर तोहका मउत स बचाइ

अउर परमेस्सर जुद्ध मँ तोहर मउत रच्छा करी।

२१ जब लोग आपन कठोर सब्दन स तोहरे बरे बुरी बात बोलिहीं,

तब परमेस्सर तोहर रच्छा करी।

विपत्तियन क समइ तोहका डेराइ क जरूरत नाही होइ।

२२ तू विनास अउ भुखमरी स समइ मँ भी खुस रहब्या।

अउर तोहका जंगली जनावरन स भी कबहुँ नाही डेराइ चाहीं।

२३ मैदानन क चट्टानन तोहार साथी क होइ।

जंगली जनावरन भी तोहरे संग सान्ति रखत हीं।

२४ तू सान्ति स रहब्या काहेकि तोहार तम्बू सुरच्छित अहइ।

तू पचे आपन भेड़न क बाड़ा भी लखब्या, अउर ओहमाँ एक भी भेड़ हेराइ नाही।

२५ तोहर बहोत सन्तानन होइहीं।

उ सबइ एँतना होइहीं जेतना घासे क पाती भुइयाँ पइ अहइँ।

२६ तू उ पका भवा गोहूँ जइसा होब्या जउन कटनी क समइ तलक पकत ह।

हाँ, तू पूरी उमर तलक जिअत रहब्या।

२७ “अय्यूब, हम पचे इ सबइ बातन जाँचित ह अउर हम पचे जानित ह कि इ सबइ फुर अहइँ।

एह बरे अय्यूब मोर सुना अउर तू इ सबन्क खुद आपन समुझ ल्या।”

अय्यूब एलिपाज क जवाब देत ह

१ फुन अय्यूब जवाब दिहेस,

२ “मोरे पीरा अउ दुःख क तराजु मँ तउलइ दया।

३ मोर व्यथा समुदर क समूची रेत स भी जियादा भारी होइ।

एह बरे मईँ गँवार जइसा बात किहेउँ ह।

४ सर्वसक्तीमान परमेस्सर क बाण मोह माँ घुसा अहइँ

अउर मोर प्राण ओन बाणन क विख क पिअत रहत ह।

परमेस्सर क उ सबइ भयानक सस्त्र मोरे खिलाफ एक संग रखा भवा अहइँ।

५ तोहार सब्दन कहइ बरे सहज अहइ जब कछू भी बुरा नाही भएन ह।

हिआँ तलक कि जंगली गदहा भी नाही रेकंत अगर ओकरे लगे खाइ क रहइ।

इहइ तरह कउनो भी गइया तब तलक नाही रँभात जब तलक ओकरे लगे चइर क चारा अहइ।

६ बे नमक क भोजन बिना स्वाद क होत ह।

अउर अण्डा क सफेदी मँ भी स्वाद नाही होत ह।

७ मोरे बरे तोहार सब्द ठीक उहइ तरह अहइ।

इ भोजन क छुअइ स मईँ इन्कार करत हउँ।

इ तरह क भोजन मोका सड़ा भवा लागत ह।

८ “परमेस्सर क मोर माँग क अनुमोदन करइ दया अउर मोका उ देइ दया जे मँ चाहत हउँ।  
 ९ परमेस्सर क मोका सराप अउर मार डावइ दया !  
 १० अगर उ मोका मारत ह तउ एक ठु बात क चैन मोका रही,  
 आपन अनन्त पीरा मँ भी मोका एक ठु बाते क खुसी रही,  
 कि मई कबहुँ भी आपन पवित्र क हुकुमन पइ चलइ स इन्कार नाहीं किहउँ।  
 ११ “मोर सक्ती छीण होइ चुकी बाटइ एह बरे मोका जिअत रहइ क आसा नाहीं अहइ।  
 मोका पता नाहीं कि आखीर मँ मोरे संग का होइ ?  
 एह बरे धीरज धइर क मोरे लगे कउनो कारण नाहीं अहइ।  
 १२ मई चट्टान क नाई मजबूत नाहीं अहउँ।  
 न ही मोर देह काँसे स रची गइ अहइ।  
 १३ अब तउ मोहमाँ एतनी भी सक्ती नाहीं कि मई खुद क बचाइ लउँ।  
 काहेकि मोहसे कामयाबी छीन लीन्ह गइ अहइ।  
 १४ “काहेकि उ जउन आपन दोस्तन खातिर निस्टा देखावइ स इन्कार करत ह।  
 उ सर्वसक्तीमान परमेस्सर क भी अपमान करत ह।  
 १५ मुला मोरे बन्धु लोगो, तू बिस्वास क जोगग नाहीं रहया।  
 तू पचे नदी-तल क नाई अबिस्सासी ह  
 जेहमाँ बरिस क कछू भाग मँ ही जल रहत ह।  
 १६ उ सबहिँ अँन्धियारा नदी-तल, बरफ स उमडि जात ह जब बरफ टेघरत ही।  
 १७ मुला जब मौसम गरम अउ सूखा होत ह,  
 तब पानी बहब बंद होइ जात ह,  
 अउर जल क धारा झुराइ जात ही।  
 १८ बइपारी लोगन क दल आपन रास्ता क तजि देत ही  
 अउर रेगिस्ताने मँ प्रवेस कइ जात ही अउर उ पचे लुप्त होइ जात ही।  
 १९ तेमा क बइपारी दल जल क हेरत रहेन  
 अउर सबा क राही आसा क संग लखत रहेन।  
 २० उ पचन्क विस्वास रहा कि पानी मिली मुला ओनका निरासा मिली।  
 २१ अब तू पचे ओन जल धारन क समान अहा।  
 तू पचे मोर सबइ यातना क लखत अहा अउ डेरान अहा।  
 २२ का मई कहेउँ कि ‘मोका उपहार द्या ?’  
 का मई कहेउँ कि ‘मोर बरे रिस्वत क रूप मँ एक भेंट द्या ?’

२३ का मई तू पचन्स कहेउँ, ‘मोर दुस्मनन स मोका बचाइ ल्या ?’  
 का मई तोहका कहेउँ कि ‘ओका मुक्ती-धन द्या जउन मोका पकरेस ह !’  
 २४ “एह बरे अब मोका सिच्छा दया अउर मई सान्त होइ जाब।  
 मोका देखौं दया कि मई का बूरा किहेउँ ह।  
 २५ सच्चा सव्व ताकतवर होत ही,  
 मुला तू पचे का आलोचना करत ह  
 २६ का तू आलोचना क अविस्कार करत ह  
 का तू एहसे भी जिआदा निरासाजनक सव्व बोलव्या ?  
 २७ हिआँ तलक कि जुआ मँ अनाथ क भी वस्तुअन क लेइ चाहत ह।  
 हिआँ तलक कि तू आपन निज मीत क भी बेचइ चाहत ह।  
 २८ मुला अब, मोरे मुख क परखा।  
 मई तोहसे झूठ नाहीं बोलब।  
 २९ एह बरे, आपन मने क बदल डावा।  
 एक भी अनियाय जिन होइ दया,  
 फुन स जरा सोचा काहेकि मई कउनो बुरा काम नाहीं किहेउँ ह।  
 ३० मई झूठ नाहीं कहत हउँ।  
 मोका भला अउ बुरे लोगन क पहिचान अहइ।  
 ३१ “अय्यूब कहेस, “मनई क धरती पइ कड़ा सघर्ष करइ क पड़त ह।  
 ओकर जिन्नगी भाड़े क मजदूर क जिन्नगी जइसी होत ह।  
 ३२ मनई उ भाड़ा क मजदूर जइसा अहइ, जउन दिन क अन्त मँ टंडी छौंह चाहत ह,  
 अउ मजदूरी क इन्तजार करत ह।  
 ३३ महीना दर महीना बेचइनी क बीत गवा अहइ  
 अउर पीरा भइ राति दर रात मोका दइ दीन्ह गइ अहइ।  
 ३४ जब मई ओलरत हउँ, मई सोचत रहत हउँ,  
 ‘मोरे उठइ क कबहुँ अउर कितनी देर अहइ ?’  
 मुला इ रात तउ घसेटत चला जात ह।  
 मई तउ पीरा झेल रहत हउँ अउ करवट बदलत हउँ जब तलक सूरज नाहीं निकरि आवत।  
 ३५ मोर तन कीरन अउ धूरि स ढाक लीन्ह अहइ।  
 मोर चमड़ी चटक गइ अहइ अउर एहमाँ रिसत भए फोड़ा भरि गवा अहइ।  
 ३६ “मोर दिन जुलाहा क फिरकी स भी जियादा तेज चाल स बीतत अहइ।  
 मोर जिन्नगी क आखीर बिना कउनो आसा क होत अहइ।

७ हे परमेस्सर, याद राखा मोर जिन्नगी सिरिफ एक तु साँस अहइ।  
 अब मोर आँखी कछू भी नाहीं लखिहीं।  
 ८ अबहिं तू मोका लखत अहा मुला फुन तू मोका नाहीं लख पउब्या।  
 तू मोका हेरब्या मुला तब तलक मई जाइ चुका होब।  
 ९ एक बादर छोटा होइ जात ह अउर आखर मँ लुप्त होइ जात ह।  
 इ तरह एक मनई जउन मर जात ह अउर कब्र मँ गाड़ दीन्ह जात ह, उ फुन वापिस नाहीं आवत ह।  
 १० उ आपन पुराना घरे क वापिस कबहुँ नाहीं लउटी।  
 ओकर घर ओका फुन कबहुँ भी नाहीं जानी।  
 ११ “एह बरे मई चुप नाहीं रहब।  
 मई सब कहि डाउब।  
 मोर आतिमा दुखी अहइ अउर मोर मन कडुआहट स भरा अहइ,  
 एह बरे मई उ सब बातन क बारे मँ सिकायत करब जउन मोर संग घटेस ह।  
 १२ हे परमेस्सर, तू मोर पइ पहेरदार काहे राखेस ह ?  
 का मई समुदर हुँ,  
 या समुदर क कउनो दैत्य ?  
 १३-१४ हे परमेस्सर, जब मोका लगत ह कि खाट मोका सान्ति देइ  
 अउर मोर पलंग मोका चइन अउ विस्राम देइ,  
 तब मोका सपना मँ डरावत ह।  
 १५ मई आपन गला घोटि जाइ पसन्द करब्या।  
 मउत इ देह मँ रहइ स बेहतर अहइ।  
 १६ मई आपन जिन्नगी स धिना करत हुँ।  
 मई हमेसा अइसा जिअत रहब नाहीं चाहत हुँ।  
 मोका अकेला रहइ दया।  
 मोर जिन्नगी बेकार अहइ।  
 १७ हे परमेस्सर, मनई तोहरे बरे काहे एँतना महत्वपूर्ण अहइ ?  
 काहे मनई पइ तोहका एँतना धियान देइ चाहीं ?  
 १८ हर भिन्सारे काहे तू मनई क लगे आवत ह  
 अउर हर छिन तू काहे ओका परखा करत अहा ?  
 १९ हे परमेस्सर, तू कबहुँ भी मोका नज़र अन्दाज नाहीं करत ह  
 अउर मोका एक छन अकेल्ला नाहीं छोड़त ह।  
 २० हे परमेस्सर, तू हरेक चिजियन पइ जउन हम पचे करत हीं निगाह रखत ह !  
 जदि मई पाप किहा तउ मई का किहा ?  
 तू मोका काहे निसाना बनाया ह ?

मई तोहार बरे काहे बोझ बन गवा हुँ ?  
 २१ का तू मोर सबइ गलती क छिमा नाहीं करत्या  
 अउर मोर पापन क तू काहे छिमा नाहीं करत्या ?  
 मई हाली ही मरि जाब अउर कब्र मँ चला जाब।  
 जब तू मोका हेरब्या मुला तब तलक मई जाइ चुका होब।”

बिलदद अय्यूब स बोलत ह

१ एकरे पाछे सूह प्रदेस क बिलदद जवाब देत भए कहेस  
 २ “तू कब तलक अइसी बातन करत रहब्या ?  
 तोहार सब तेज आँधी क तरह बहत अहइ।  
 ३ परमेस्सर सदा स्वच्छ रहत ह।  
 निआउवाली बातन क सर्वसक्तीवाला परमेस्सर कबहुँ नाहीं बदलत ह।  
 ४ एह बरे अगर तोहार सन्तानन परमेस्सर क खिलाफ पाप किहन ह तउ ओनका राजा दिहस ह।  
 आपन पापन खातिर ओनका भोगइ क पड़ा ह।  
 ५ मुला अब अय्यूब, परमेस्सर कइती निगाह करा,  
 अउर सर्वसक्तीमान परमेस्सर स ओकर दया पावइ खातिर बिनती करा।  
 ६ अगर तू पवित्तर अउर ईमानदार अहा,  
 तउ उ हाली तोहार मदद बरे आइ।  
 उ तोहार नीक घरे क रच्छा करब।  
 ७ जउन कछू भी खोया उ तोहका नान्ह स बात लगी।  
 काहेकि तोहार भविस्स बड़ा सुफल होइ।  
 ८ “ओन बुढ़वा लोगन स पूछा  
 अउर पता करा कि ओनकर पुरखन क सीखे रहने।  
 ९ काहेकि अइसा लागत ह जइसा कि हम तउ बस काल्ह ही पइदा भएन ह,  
 हम कछू नाहीं जानित।  
 परछाई क तरह हमार उमर भुइँया पइ बहोत छोट क अहइ।  
 १० होइ सकत ह कि बूढ़वा लोग तोहका कूछ सिखाइ सकइं।  
 होइ सकत ह जउन उ पचे सीखेन ह उ पचे मोका सिखाइ सकइं।”  
 ११ बिलदद कहेस, “का भोजपत्र क वृच्छ दलदल भुइँया क इलावा कहुँ बढ सकत ह  
 का नरकट बे पानी क बाढ़ि सकत ह ?  
 १२ नाहीं, अगर पानी झुराइ जात ह तउ उ पचे भी मुरझाइ जइहीं।  
 ओनका काटा जाइ जोगग काटिके काम मँ लिआवइ क उ पचे बहोत छोट रहि जइहीं।



१३ उ मनई जउन परमेस्सर क बिसारि जात ह, नरकट क तरह होत ह।  
 उ मनई जउन परमेस्सर क बिसारि जात ह ओकरे बरे कउनो आसा नाही अहइ।  
 १४ उ मनई क बिस्सास बहोत दुर्बल होत ह।  
 उ मनई मकड़ी क जाला क सहारे रहत ह।  
 १५ अगर कउनो मनई मकड़ी क जाले क सहारा लेत ह,  
 इ टुटि जाइ।  
 अगर उ मकड़ी क जाल क पकरत ह,  
 इ नस्त होइ जाइ।  
 १६ उ मनई उ पौधे क नाई अहइ जेकरे लगे पानी अउ सूरज क रोसनी बहोतइ अहइ।  
 ओकर डारियन बगिया मँ हर कइँती सँचरत हीं।  
 १७ उ पाथर क टीला क चारिहुँ कइँती आपन जड़न क फइलावत ह  
 अउ चटटान मँ जमइ बरे कउनो ठउर हेरत ह।  
 १८ जब पौधा आपन जगह स उखाड़ दीन्ह जात ह,  
 तउ कउनो भि नाही जान पात ह कि हुआँ कबहुँ कउनो पौधा रहा।  
 १९ मुला उ पौधा हुआँ खुस रहा,  
 अब दूसर पउधन हुआँ जमिहीं, जहाँ कबहुँ उ पउधा रहा।  
 २० मुला परमेस्सर कबहुँ भी निर्दोख मनई का नाही तजी  
 अउर उ बुरे मनई क सहारा नाही देइ।  
 २१ अबहुँ भी परमेस्सर तोहरे मुँह क हँसी स भरि देइ।  
 तोहरे ओठन क खुसी स चहकाइ देइ।  
 २२ परमेस्सर तोहरे दुट्ट दुस्मनन क लज्जा स झुकाइ देइ।  
 अउर ओनकर धरन क नास कइ देइ।”

अय्यूब बिलदद क जवाब देत ह

१ फुन अय्यूब जवाब दिहस।  
 २ “हाँ, मई जानत हउँ कि तू फुरइ कहत ह मुला मनई परमेस्सर क समन्वा निर्दोख कइसे होइ सकत ह ?  
 ३ मनई परमेस्सर स बहस नाही कइ सकत।  
 परमेस्सर मनई स हजारन सवाल कइ सकत ह अउर कउनो ओनमाँ स एक टु क भी जवाब नाही दइ सकत ह।  
 ४ परमेस्सर बुद्धिमान अउर सक्तीसाली बाटइ।

अइसा कउनो मनई नाही जउन परमेस्सर क कामयाबी क खिलाफ करी।  
 ५ जब परमेस्सर कोहाइ जात ह, उ पहाड़न क हटाइ देत ह, अउर उ सबइ समुझ तलक नाही पउतेन।  
 ६ परमेस्सर भुईया क कँपावइ बरे भुईडोल पठवत ह।  
 परमेस्सर भुईया क खम्भन क हिलाइ देत ह।  
 ७ परमेस्सर सूरज क आग्या दइ सकत ह अउर ओका उगइ स रोक सकत ह।  
 उ तारन क बंद कइ सकत ह ताकि उ सबइ न चमकइँ।  
 ८ सिरिफ परमेस्सर अकासन क रचेत ह।  
 उ सागरे क लहरन पर बिचरि सकत ह।  
 ९ “परमेस्सर सप्तर्सि, मृगसिरा अउर कचपचिया तारन क बनाएस ह।  
 उ ओन गरहन क बनाएस जउन दक्खिन क अकास पार करत हीं।  
 १० परमेस्सर अइसेन अदभुत करम करत ह जेनका मनई नाही समुझ सकत।  
 परमेस्सर क महान अचरज भरे करमन क कउनो अन्त नाही अहइ।  
 ११ परमेस्सर जब मोरे लगे स निकरत ह तउ मई ओका लख नाही पावत हउँ।  
 परमेस्सर जब मोरी बगल स निकरि जात ह तउ भी मई जान नाही पावत हउँ।  
 १२ अगर परमेस्सर छोरेइ लागत ह तउ कउनो भी ओका रोक नाही सकत।  
 कउनो भी ओहसे कह नाही सकत कि ‘तू का करत अहा ?’  
 १३ परमेस्सर आपन किरोध क रोकी नाही।  
 हिआँ तलक कि राहाब १क सहायक भी परमेस्सर क सकती क आगे झुकत ही।  
 १४ एह बरे परमेस्सर स मई बहस नाही कइ सकत।  
 मई नाही जानत कि ओहसे का कहा जाइ।  
 १५ यद्यपि मई तउ निर्दोख अहउँ, मोरे लगे कउनो विकल्प नाही अहइ  
 किन्तु ओहसे जउनो कि मोका निआव करत ह दाय्या क आग्रह कइ सकत हउँ।  
 मई सिरिफ ओसे जउन मोर निआउ करत ह, दाय्या क भीख माँग सकत हउँ।  
 १६ अगर मई ओका गोहरावउँ अउर उ जवाब देइ,

१९ :१३ राहाब अजगर या सागरे क दैत्य अहइ। लोग सोचत अहा कि राहाब सागरे पइ नियंतरन रखत ह। अकसर राहाब परमेस्सर क दुस्मन क या कउनो बुरा काम करइ क प्रतीक रहा।

तबहुँ मोका बिस्सास नाही होइ कि उ सच ही ओह पइ धियान देत ह, 'जउन मई कहत हउँ।'

१७ परमेस्सर मोका कुचरइ बरे तूफान पठइ अउर उ मोका अकारण ही जियादा धाव देइ।

१८ परमेस्सर मोका फुन साँस नाही लेइ देइ। उ मोका अउर जियादा दुख देइ।

१९ कउनो मनई परमेस्सर क सक्ती क मुकाबला मँ हराइ नाही सकत ह।

कउनो मनई परमेस्सर क अदालत मँ लइ बरे मजबूर नाही कइ सकत ह।

२० चाहे मई निर्दोख अहउँ, जउन कछू भी मई कहत हउँ उ मोका दोखी ठहराउव।

चाहे मई कउनो बुरा काम नाही किहा, उ मोका भ्रस्ट क जइसा बनाउब्या।

२१ मई पाप रहित हउँ। मुला मोका आपन ही परवाह नाही अहइ मई खुद आपन ही जिन्नगी स घिना करत हउँ।

२२ मई खुद स कहत हउँ, हर कउनो क संग एक समान ही घटित होइ।

निरपराध लोग वइसेन ही मरत हीं जइसे अपराधी मरत हीं।

परमेस्सर ओन सबक जिन्नगी क अन्त करत ह।' २३ का परमेस्सर मजाक करत ह जब अचानक विपत्ति आवत अउर कउनो निर्दोख मनई मारा जात ह

२४ अगर निआधीस क आँखिन क ढाँपि दीन्ह जाइ तउ धरती पइ दुट्टन क राज होइ जाब्या।

अगर इ परमेस्सर नाही किहस, तउ फुन कउन किहस ह ?

२५ "कउनो तेज धावक स तेज मोर दिन परात अहइँ।

मोर दिन उड़के बीतत अहइँ अउर ओनमाँ कउनो खुसी नाही अहइँ।

२६ तेजी स मोर दिन बीतत अहइँ जइसे भोजपत्र क नाव बहत चली जात ह।

मोर दिन अइसे हीं बीतत अहइँ जइसे उकाव आपन सिकारे पइ टूट पड़त होइ।

२७ "जदि मई कह सकव, 'मइ सिकाइत नाही करव।

मई आपन दर्द भुल जाव। अउर खुस होइ जाब्या।'

२८ किन्तु मई अबहुँ तलक पीरा स डेरात हउँ काहेकि मई जानत हउँ कि अबहुँ भी तू (परमेस्सर) मोका निर्दोख नाही बनाउब्या।

२९ मई परमेस्सर क संग आपन दलील क खोइ देव।

तउ कोसिस करइ मँ मोका आपन समइ काहे बरबाद करइ चाही।

३० चाहे मई आपन हाथ धोइ बरे सबन त सुद्ध पानी अउर बड़िया साबुन क प्रयोग करा।

३१ फुन भी परमेस्सर मोका घिनौना गइहा मँ ढकेल देइ

जहाँ मोर ओदना तलक मोहसे घिना करिहीं। ३२ परमेस्सर, मोर जइसा मनई नाही अहइ।

एह बरे ओका मई जवाब नाही दइ सकत। हम दुइनउँ अदालत मँ एक दूसरे स मिल सकित नाहीं।

३३ हुवाँ कउनो एक बिचौलिया नाही जउन हमार बीच क बातन सुन सकत।

हुवाँ कउनो एक नाही जउन हम दुइनउँ क ऊपर अधिकार रखइ सकत।

३४ अगर परमेस्सर मोका सज़ा देइ बन्द कइ देइ, अउर उ मोका बहोत जियादा नाही डेरावइ।

३५ तब मई बगैर डरे परमेस्सर स उ सब कहि सकत हउँ,

काहेकि मई जानत हउँ कि मई अइसा दोखी नाही हउँ जइसा मोह क दोखी ठहराइ गवा ह।

१ "मुला हाथ, अब मई वइसा नाही कइ सकत।

मोका खुद आपन जिन्नगी स घिना अहइ एह बरे मई अजाद भाव स आपन दुखड़ा रोउव।

मोरे मने मँ कइआहट भरी अहइ एह बरे अब मई बोलव।

२ मई परमेस्सर स कहव 'मोह पइ दोख जिन लगावा।

मोरे खिलाफ तोहरे लगे लगावइ बरे का अहइ ?

३ हे परमेस्सर, का तू मोका चोट पहाँचाइके खुस होत ह

अइसा लगत ह जइसे तोहका आपन सृस्टि बरे कउनो चिंता नाही अहइ।

अउर सायद, तू दुस्टन क कुचालन क पच्छ लेत अहा।

४ हे परमेस्सर, का तोहर आँखिन मनई क समान अहइँ ?

का तू चिजियन क अइसे ही लखत ह, जइसे मनइयन लखा करत हीं।

५ का तोहार आयु हम जइसे मनइयन क तरह अल्प अहइ ?

का तोहार जिन्नगी हम मनइयन क जइसे अल्प अहइ ?

६ तू मोर गलतियन खोजत ह अउर मोरे पापन क हेरत ह।

७ तू जानत ह कि मई निरपराध हउं  
मुला मोका कउनो भी तोहर सकती स बचाइ नाहीं  
सकत ।  
८ परमेस्सर, तू मोका रच्या अउर तोहर हाथन मोरे  
तन क सवारेन,  
मुला अब ही मोरे खिलाफ होइ गया अउर मोका  
नस्त करत अहा ।  
९ हे परमेस्सर, याद करा कि तू मोका चिकनी माटी  
स मढ़या,  
मुला अब तू ही मोका फुन स धूलि मँ बदलव्या ।  
१० तू मोका दुधे क नाई उडेरत ह,  
तब तू मोका दही बनावत ह अउर निचोड़त ह  
अउर फुन तू मोका दुधे स पनीर बनावत ह ।  
११ तू मोका हाड़न अउ माँस पेसियन स बनावेस ह ।  
तू मोका चमड़ी अउ माँस स ढँकेस ह ।  
१२ तू मोका जिन्नगी क दान दिहा अउर मोरे बरे  
दयालु रहया ।  
तू मोरे धियान राख्या अउर तू मोरे प्राणन क  
रखवारी किहा ।  
१३ मुला इ उ अहइ जेका तू आपन मने मँ छुपाए  
राख्या ।  
मई जानत हउं कि इ उ अहइ जेकर तू आपन मने  
मँ गुप्त रुप स योजना बनाया ह ।  
१४ अगर मई पाप किहेउं तउ तू मोका लखत  
रहया ।  
यह बरे तू मोका निर्दोख घोसित नाहीं कर सकत्या  
ह काहेकि मई बुरा काम किहेउं ह ।  
१५ अगर मई दुस्त जइसा बेउहार किहेउं ह  
तउ तू मोका इ सब झेलइ चाही ।  
अगर मई निरपराध भी हउं  
तउ भी आपन मूँड नाहीं उठाइ पउतेउ  
काहेकि मई लज्जा  
अउ पीरा स भरा भवा हउं ।  
१६ इ अइसा ही लागत ह  
कि तोहका सिंह क तरह मोर सिकार करइ पसन्द  
ह ।  
तू आपन सकती मोर खिलाफ बार-बार देखावत ह ।  
१७ तू मोरे खिलाफ सदा ही कउनो न कउनो क नवा  
गवाह बनावत ह ।  
तोहर किरोध मोरे खिलाफ  
अउर जियादा भड़क उठी  
अउर मोरे खिलाफ तू नई नई दुस्मन क सेना  
लिअउव्या ।  
१८ हे परमेस्सर, तू मोका काहे जन्म दिहा ?  
एहसे पहिले कि मोका कउनो लख सकत कास !  
मई मरि जातेउं !

१९ कास ! मई जिउत न रहतेउं ।  
कास ! मोका माता क गर्भ स सोझइ ही कब्रा मँ  
उतार दीन्ह जातेउं !  
२० मोर जिन्नगी करोब करीब खतम होइ चुकी  
अहइ ।  
कृपा कइके मोका अकेल्ले रही दया ।  
ताकि मई इ अल्प समइ क अनन्द लेइ सकब ।  
२१ एहसे पहिले कि मई हुआँ चला जाउं स कबहुँ  
मई वापस नाहीं आइ सकउं,  
जउन जगह पइ अँधियारा अउर घोर अन्धाकर  
वाटइ,  
२२ जउन तनिक समइ बचा अहइ मोका जिअइ लेइ  
दया ।  
एहसे पहिले कि मई हुआँ चला जाउं जउने जगह  
क कउनो लखि नाहीं पावत,  
अँधियारा क जगह, छाया अउर गड़वड़ क जगह,  
उ जगह पइ जहाँ रोसनी भी अँधियारा स भरी होत  
ह ।”

सोपर क अय्यूब स कहब

११ एह पइ नामात नाउं क पहुँटा क सोपर  
अय्यूब क जवाब देत भए कहेस,  
२ “इ सबदन क प्रवाह क जवाब मिलइ चाही !  
का कउनो मनई आपन क सिरिफ जियाद बोलइ के  
निर्दोख बनावइ सकत ह ।  
३ का तू सोचत ह कि तोहार सेखी  
हम लोगन क सांत कइ सकत ?  
का तू सोचत ह कि बिना हमार स  
डाँट खाए मज़ाक उड़ा सकत ह ।  
४ अय्यूब, तू परमेस्सर स कहत रह्या,  
‘मोर सिद्धान्त सुद्ध अहइ ।  
तू लख सकत ह कि मई निर्दोख अहउं ।’  
५ सचमुच मँ मोर इ इच्छा अहइ कि परमेस्सर  
बोलइ  
अउर तोहसे बात करिहीं ।  
६ तउ उ तोहका बुद्धि क रहस्य बताइ ।  
बुद्धि अनेक सच्चाइ राखत ह ।  
अय्यूब, मोर सुना ।  
परमेस्सर सचमुच ही तोहार कछू पापन क नज़र  
अन्दाज करत ह ।  
७ “अय्यूब का तू परमेस्सर क रहस्य समुझ सकत  
ह ?  
का तू सर्वसाक्तीमान परमेस्सर क बुद्धि क सीमा  
समुझ सकत ह ?  
८ ओकर बुद्धि अकासे स ऊँच अहइ,  
तू का कइ सकत्या ?

ओकर बुद्धि मृत्युलोक स गहिर अहइँ,  
 का तू एका समुझ सकत्या ?  
 १ उ सबइ सीमा धरती स बड़ा  
 अउर सागर स बिसाल अहइँ ।  
 १० “अगर परमेस्सर तोहका बन्दी बनावइ अउर  
 तोहका अदालत मँ लइ जाइ,  
 तउ कउन ओका रोक सकत्या ?  
 ११ परमेस्सर सचमुच जानत ह कि कउन धोखेबाज़  
 अहइ ।  
 परमेस्सर जब बुरी काम क लखत ह, तउ उ ओकर  
 नज़र अन्दाज़ नाही करब्या ।  
 १२ मुला कउनो मूरख मनई कबहुँ बुद्धिमान नाही  
 होइ सकत ह ।  
 जइसे एक जंगली गदहा एक मनई क जन्म नाही  
 देइ सकत ह ।  
 १३ तउ अय्यूब, तोहका आपन सोच-बिचार पइ  
 जरूर रोक लगावइ चाही,  
 अउर आपन हाथन पराथना मँ फइलावइ चाही ।  
 १४ कउनो दुट्टता जउन तोहरे हाथन मँ बसा  
 अहइ, ओका तू दूर करा ।  
 अउर आपन घरे मँ कउनो बुराइ क जिन रहइ दया ।  
 १५ तबहिँ सिरिफ तोहर दोख क छिमा कीन्ह  
 जाब्या ।  
 तू मजबूती स खड़ा रहब्या अउर नाही डेराब्या ।  
 १६ अय्यूब, तब तू आपन विपत्ति क बिसरि जाब्या ।  
 तू आपन दुखड़ा क बस उ पानी जइसा सुमिरन  
 करब्या जउन तोहरे लगे स बहिके चला  
 गवा ।  
 १७ तोहर जिन्नगी दुपहर क सूरज स भी जियादा  
 उज्जर होइ ।  
 जिन्नगी क अधियर घड़ियन अइसेन चमकिहीं  
 जइसे भिन्सारे क सूरज ।  
 १८ अय्यूब, तू सुरच्छित अनुभव करब्या काहेकि  
 हुआँ आसा होइ ।  
 परमेस्सर तोहार रखवारी करी अउर तोहका  
 आराम देइ ।  
 १९ चइन स तू सोउब्या, कउनो तोहका नाही डेराई  
 अउर बहोत स लोग तोहसे मदद मंगिहीं ।  
 २० मुला जब बुरे लोग आसरा हेरिहीं, तब ओनका  
 नाही मिली ।  
 ओनके लगे कउनो आस नाही होइ ।  
 मउत ही ओनकर सिरिफ आसा होइ ।”

सोपर क अय्यूब क जवाब

१२

१ फुन अय्यूब सोपर क जवाब दिहस ।

२ “बिना संदेह क तू सोचत अहा

कि सिरिफ तू ही लोग बुद्धिमान अहा,  
 तू सोचत अहा कि जब तू मरब्या  
 तउ विवेक मर जाइ तोहरे संग ।  
 ३ मुला तोहार जेतनी बुद्धि भी उत्तम बाटइ,  
 मई तोहसे कछू घटिके नाही अहउँ ।  
 अइसी बातन क जइसी तू कहत ह,  
 हर कउनो जानत ह ।  
 ४ “अब मोरे मीत मोरे मसखरी उड़ावत हीं ।  
 मई प्रतिदिन पराथना किहा करत रहा अउर उ  
 मोर पराथना क जवाब देत रहा ।’  
 किन्तु अब भी मई बेगुनाह अउर निर्दोष अहउँ,  
 मोर परोसी मोर खिल्ली उड़ावत हीं ।  
 ५ अइसे लोग जेह पइ कबहुँ विपत्ति नाही पड़ी,  
 विपदा स घिरा लागेन क हसी किया करत हीं ।  
 मगर विपदा हमेसा उ लोगन पइ आइ बरे तइयार  
 रहत ही  
 जेकर गोड़ दूढ़ नाही अहइँ ।  
 ६ डाकुअन आपन डेरन मँ बगैर चिन्ता क रहत हीं ।  
 अइसे लोग जउन परमेस्सर क क्रोधित करत हीं,  
 सान्ति स रहत हीं ।  
 परमेस्सर ओनका धियान रखत हीं ।  
 ७ “चाहे तू पसु स पूछिके लखा, उ पचे तोहका  
 सिखाइ देइहीं,  
 या हवा क पंछियन स पूछा उ पचे तोहका बताइ  
 देइहीं ।  
 ८ या तू धरती स पूछि ल्या उ तोहका सिखाइ देइ  
 या सागरे क मछरियन क आपन गियान तोहका  
 बतावइ दया ।  
 ९ हर कउनो जानत ह  
 कि यहीवा एँन सबइ चिजियन क रचेस ह ।  
 १० हर जिअत पसु अउर हर एक प्राणी जउन साँस  
 लेत ह,  
 परमेस्सर क आधीन अहइ ।  
 ११ जइसे जीभ भोजन क सुआद चखत ह  
 वइसे ही कानन क सबदन क परखत ह ।  
 १२ लोग कहित ह, ‘अइसा ही बूदन क लगे विवेक  
 रहत ह ।  
 अउर लम्बी उमर समुझ बुझ देत हीं ?’  
 १३ किन्तु उ परमेस्सर अहइ जेकर लगे बुद्धि अउर  
 सकती अहइ ।  
 उ अच्छा सलाह अउर सूझबूझ रखत हीं ।  
 १४ अगर परमेस्सर कउनो चिज क दहाइ क गिराइ  
 देइ तउ, फुन लोग ओका नाही बनाइ  
 सकतेन ।  
 अगर परमेस्सर कउनो मनई क बन्दी बनावइ,  
 तउ लोग ओका अजाद नाही कइ सकतेन ।

१५ अगर परमेस्सर बर्खा क रोकइ तउ धरती झुराइ जाइ ।  
 अगर परमेस्सर बर्खा क छूट दइ देइ, तउ उ धरती पइ बाढ़ लइ आई ।  
 १६ परमेस्सर सकतीसाली अहइ ।  
 उ सदा विजयी होत ह ।  
 उ मनई जउन छलत ह अउर उ मनई जउन छला जात ह दुउनउँ परमेस्सर क अहई ।  
 १७ परमेस्सर सलाहकारन स ओनकर बूद्धि लेइ लेत ह ।  
 उ प्रमुखन क अइसा बनाइ देत ह कि उ पचे मूर्ख मनइयन जइसा बेउहार करइ लागत हीं ।  
 १८ परमेस्सर राजा लोगन क अधिकार हटाइ लेत ह  
 अउर ओनका दास बना देत ह § ।  
 १९ परमेस्सर याजक लोगन ओनकर सकती स वंचित कर देत ह  
 अउर ओनकर दर्जा क सुरच्छा क छीन लेत ह ।  
 २० परमेस्सर बिस्सासनीय सलाहकार क चुप कराइ देत ह ।  
 उ बूढ़े लोगन क बूद्धि लइ लेत ह ।  
 २१ परमेस्सर महत्वपूर्ण अधिकारियन क साथ अइसा बेउहार करत ह जइसा उ कछू नाहीं अहइ ।  
 उ सासकन क सकती लेइ लेत हीं ।  
 २२ परमेस्सर अँधियारा स रहस्य स भरी सच्चाई क परगट करत ह ।  
 उ घना अँधियारा स घिरा जगहियन पइ, रोसनी पठवत ह ।  
 २३ परमेस्सर रास्ट्रन क विसाल अउर सकतीसाली होइ देत ह,  
 अउर फुन ओनका उ नस्ट कइ डावत ह ।  
 उ रास्ट्रन क विकसित कइके विसाल बनइ देत ह,  
 फुन ओनकर लोगन क उ तितर बितर कइ देत ह ।  
 २४ परमेस्सर धरती क रास्ट्रन क प्रमुखन क मूर्ख अउर नासमुझ बनाइ देत ह ।  
 उ ओनका मरुभूमि मँ जहाँ कउन राह नाहीं भटक बरे पठवत ह ।  
 २५ उ पचे प्रमुख लोग अँधियारा मँ आपन राह टटरोत रहत हीं ।  
 कउनो भी प्रकास ओनके लगे नाहीं होत ह ।

परमेस्सर ओनका अइसे चलावत ह, जइसे पीके धुत भए लोग चलत हीं ।  
 १ “मोर आँखिन पहिले स ही उ सब चिजियन क गवाही अहा जउन तू कहया ह ।  
 मोर कानन पहिले ही सुन अउर समुझ चुका ह जउन कछू तू करत अहा ।  
 २ मई भी ओतना ही जानत हउँ जेतना तू जानत अहा,  
 मई तोहसे कम नाहीं हउँ ।  
 ३ किन्तु मई सर्वसक्तीमान परमेस्सर स बोलइ चाहत हउँ,  
 अउर मई ओकर समन्वा  
 आपन मुकद्दमा क सफाइ देउँ ।  
 ४ मुला तू तीनउँ लोग आपन छूट बातन स फुरई क ढाँपइ चाहत अहा ।  
 तू उ बेकार क चिकित्सक नाई अहा जउन कउनो क नीक नाहीं कइ सकत ।  
 ५ मोर इ कामना अहइ कि तू पूरी तरह चुप होइ जा ।  
 इ तोहरे बरे बूद्धिमानी क बात होइ जउन तू कइ सकत ह ।  
 ६ “अब मोर तर्क सुना ।  
 सुना जब मई आपन सफाई देउँ ।  
 ७ का तू परमेस्सर बरे झूठ बोलब्या ?  
 का तू सचमुच परमेस्सर क बारे मँ झूठ बोलब्या ?  
 ८ का तू मोरे खिलाफ परमेस्सर क पच्छ लेब्या ?  
 का तू अदालत मँ  
 परमेस्सर क बचावइ जात अहा ?  
 ९ अगर परमेस्सर तोहका बहोत करीब स जाँच लिहस  
 तउ का उ कछू भी नीक बात पाई ?  
 का तू सोचत अहा कि तू परमेस्सर क छल पउब्या,  
 ठीक उहइ तरह जइसे तू लोगन क छलत अहा ?  
 १० अगर तू अदालत मँ छुपा छुपा कउनो तरफ़दारी करब्या,  
 तउ परमेस्सर निहचय ही तोहका लताड़ी ।  
 ११ ओकर तेज तोहका डरावत ह  
 अउर तू डर जात ह ।  
 १२ तोहार कहब धूलि जइसे बेकार अहई ।  
 तोहार तर्कन माटी जइसी दुर्बल अहई ।  
 १३ “चुप रहा अउर मोका कहि लेइ दया ।  
 मोरे संग कछू बात होइ जाइ दया ।  
 १४ मई खुद क संकट मँ डावत हउँ

§१२ :१८ परमेस्सर देत ह परमेस्सर राजा लोगन क सही करमबंध हटाइ लेत ह अउर ओनका बेकार कपड़ा पहनावत ह ।

अउर मई खुद आपन जिन्नगी आपन हाथन मँ लेत हउँ।

१५ होइ सकत ह परमेस्सर मोका मारि देइ।  
यद्यापि मोका जीत क कछू आसा नाही अहइ,  
तउ भी मई आपन मुकदमा क तर्क ओकरे समन्वा देब।

१६ परमेस्सर मोर मुक्ति अहइ,  
काहेकि कउनो दुट्ट मनई ओकर आपने-सामने नाही आइ सकत।

१७ ओका धियान स सुना जेका मई कहत हउँ,  
ओह पइ कान दया जेकर व्याख्या मई करइ चाहत हउँ।

१८ अब मई आपन बचाव करइ क तैयार हउँ।  
इ मोका पता अहइ कि मोका निर्दोष सिद्ध कीन्ह जाइ।

१९ कउनो भी मनई इ प्रमाणित नाही कइ सकत  
कि मई गलत हउँ।

अगर कउनो मनई इ सिद्ध कइ देइ तउ मई चुप होइ जाब अउर मरि जाब।

२० “हे परमेस्सर, तू मोका दुइ बातन दइ दया,  
फिन मई तोहसे नाही छुपब।

२१ मोका दण्ड देइ रोकि दया,  
अउर मोसा जियादा लइइ छोइ द्या।

२२ फिन तू मोका पुकारा अउर मइ तोहका जवाब देब,

या मोका बोलइ दया अउर तू मोका जावब दया।

२३ केतना पाप मई किए हउँ?

कउन सा अपराध मोहसे होइ गवा?

मोका मोर पाप अउर अपराध देखवाँ।

२४ हे परमेस्सर, तू मोहसे काहे बचत अहा?

तू मोर संग दुस्मन जइसा बेउहार काहे करत अहा?

२५ का तू मोका डेरउब्या?

मई एक पत्ता जइसा हउँ जेका पवन उड़ावत ह।

एक झुरान तिनका क तू खदेइत अहा।

२६ हे परमेस्सर, तू मोरे विरोध मँ गंभीर दोसपूर्ण बात लिखत अहा।

का तू मोका अइसे पापन बरे दुःख देत ह जउन मई आपन जवानी मँ किहे रहेउँ?

२७ मोरे गोड़न मँ तू काट डाइ दिहया ह।

तू मोर हर कदम पइ आँखी गइए रखत ह।

मोरे कदमन क तू सीमा बाँध दिहा ह।

२८ मई सड़ी चीज जइसा छीन होत जात हउँ

कीरन स खाए भए ओढ़नन क टुका जइसा।

१४ “उहइ दिना स जब हमार मताहरी हम पचन क जन्मेस ह,

हमार जिन्नगी छोट अउ दुःख स भरी अहइ।

२ मनई क जिन्नगी फूल क नाई अहइ जउन हाली जमत ह अउर फुन खतम होइ जात ह।

मनई क जिन्नगी अहइ जइसे कउनो छाया तनिक देर टोकत ह अउर बनी नाही रहत।

३ हे परमेस्सर, का तू उ मनई पइ धियान देब्या जउन मरा भवा लागत ह

का तू मोर निआउ करइ मोका समन्वा लिअउब्या?

४ “कउनो अइसी चीज स जउन खुद स्वच्छ नाही अहइ स्वच्छ, चीज कउन पाइ सकत ह? कउनो नाही।

५ मनई क जिन्नगी सीमित अहइ।

तू ओकर जीवन काल क सीमित कइ दिहेस ह।

तू मनई बरे जउन सीमा बाँध्या ह, ओका कउनो भी नाही बदल सकत।

६ तउ परमेस्सर, तू हम पइ आँखी रखब तजि दया। हम लोगन क अकेल्ला तजि दया।

हम पचन्क क आपन जिन्नगी क उहइ तरह समाप्त करइ दया जे तरह मजदूरन आपन काम क समाप्त करत ह।

७ “मुला अगर वृच्छ क काटिके गिराइ दीन्ह जाइ तउ भी आसा ओका रहत ह कि उ फुन स पनप सकत ह,

काहेकि ओहमा नई-नई डारन फूटत रइहीं।

८ चाहे ओकर जड़न धरती मँ पुरान काहे न होइ जाँइ

अउर ओकार तना चाहे माटी मँ गल जाइ।

९ मुला पानी क सिरिफ गंध स उ नई बढ़त देत ह अउर एक पउध क तरह ओहसे डारन फूटत हीं।

१० मुला एक मनई कमजोर होइ जात ह अउ मरि जात ह,

अउर तब उ चला जात ह।

११ समुदर स पानी गाएब होइ सकत ह

अउर नदियन सूख कइ फट सकत ह,

१२ अउर तउ भी जउन कउनो आपन कब्र मँ मरा भवा अहइ

कबहुँ भी नाही जी उठब!

ओकर नींद स जगाइ स पहिले ही

आकास लुप्त होइ जाइ।

१३ “मोर इच्छा अहइ कि तू मोरी कब्र मँ तक तलक छुपाइ लेइ चाही

जब तलक तोहार किरोध कम नाही होइ जाइ।

अउर तोहका आदेस दीन्ह जाइतेन अउर मोका जगावा जातेन।

- १४ अगर कउनो मनई मरि जाइ तउ का जिन्न कबहुँ पउब्या ?  
मई तब तलक बाट जोहब, जब तलक मोर कर्तव्य पूरा नाही होइ जात अउर जब तलक मई अजाद न होइ जाऊँ ।
- १५ हे परमेस्सर, तू मोका बोलउब्या अउर मई तोहका जवाब देब ।  
उ तू ही अहइ जउन मोका बनाया ह यह बरे तोहका मोह पइ धियान देइ चाही ।
- १६ तब मोरी इच्छा अहइ कि तू मोर हर कदम क जाँच करा,  
मुला तोहका मोहमाँ कउनो गलती खोजइ क कोसिस नाही करइ चाही ।
- १७ तउ इ अइसा होइतेन कि मोर पापन क एक थइला मँ बन्दा कीन्ह जातेन ।  
अउर तू मोरे पापन क हटाइ देतेन ।
- १८ “एक नस्ट भवा पहाइ क जइसा जेकर टूका ले लइ जात ह  
अउर एक चट्टान जउन आपन जगह स हटाइ लेइ जात ह ।
- १९ जइसे पानी पाथर क घाँसि डावत ह  
अउ माटी क पानी बहाइके तल मँ लइ जात ह ।  
हे परमेस्सर, उहइ तरह मनई क आसा क तू नस्ट करत अहा ।
- २० तू एक दाँइ मनई क हरावत अहा  
अउर उ खतम होइ जात ह ।  
तू ओकरे मुँह बिगाइत ह  
अउर ओका पठइ देत ह ।
- २१ अगर ओकर पूत कबहुँ सन्मान पावत हीं तउ ओका कबहुँ ओकर पता नाही चल पावत ।  
अगर ओकर पूत कबहुँ अपमान भोगत हीं, तउ उ कबहुँ ओका लखि नाही पावत ह ।
- २२ तउ मनई क देह क कारण ही ओका पीड़ा होत ह  
अउर ओकर आतिमा ओकरे बरे सोक मनावत ह ।”

एलीपज अय्यूब क जवाब देत ह

- १५** १ एह पइ तेमान नगर क बसइया एलीपज अय्यूब क जवाब दिहेस ।  
२ “का तू सोचत अहा  
कि कउनो बुद्धिमान मनई बे अरथ सब्द स जवाब देत ह  
अउ आपन आप क गर्म हवा स भरि देत ह ?  
३ का तू सोचक ह कि कउनो बुद्धिमान मनई व्यर्थ क सब्दन स

- अउर ओन भासणन स बहस करी जेनकर कउनो लाभ नाही अहइ ?  
४ अय्यूब, तोहर जवाब लोगन क परमेस्सर क आदर  
अउर ओकर उपासना करइ स रोकइ क कारण होइ ।  
५ तू जउने बातन क कहत ह उ तोहार पाप साफ साफ देखावत ह ।  
अय्यूब, तू चतूराई स भरे भए सब्दन क प्रयोग कइके आपन पापन क छुपावइ क प्रयत्न करत अहा ।  
६ मोका जरूरी नाही कि तोहका गलत सिद्ध करउँ ।  
काहे ? तू खुद आपन मुहँ स जउन बातन कहत ह, उ देखावत हीं कि तू बुरा अहा अउर तोहर ओठँ खुद तोहरे खिलाफ बोलत हीं ।  
७ “अय्यूब, का तू सोचत ह कि जन्म लेइवाला पहिला मनई तू ही अहा  
अउर पहाइन क रचना स पहिले तोहार जन्म भवा रहा ।  
८ का तू परमेस्सर क रहस्य स भरी सबइ जोजना क सुने रहया ?  
का तू सोचत ह कि तू बुद्धिमान अहा ?  
९ अय्यूब, तू हम पचन स जियादा कछू नाही जानत अहा ।  
उ सबइ बातन हम पचन समझत अही, जेनकर तोहका समुझ अहइ ।  
१० उ सबइ लोग जेनकर बार उज्जर अहइ अउर बुढ़वा मनई अहइ उ पचे हम स सहमत रहत हीं ।  
हाँ, तोहरे बाप स भी बुढ़वा लोग हमरे समर्थन मँ अहइँ ।  
११ परमेस्सर तोहका सुख देइ क जतन करत ह ।  
अउर तोहमा नर्मी स बात करत ह ।  
का इ तोहरे बरे काफी नाही अहइ ? मुला तू सोचत अहा कि तोहर बरे काफी नाही अहइ ।  
१२ अय्यूब, तू काहे नाही समुझब्या ?  
तू सच्चाइ क काहे नाही लखइ सकब्या ?  
१३ जब कभी तू इ तरह बोलत ह  
तू परमेस्सर क खिलाफ होत ह ।  
१४ “फुरइ कउनो मनई सुद्ध नाही होइ सकत ।  
मरनसील मनई नीक नाही होइ सकत ह ।  
१५ हिआँ तलक कि परमेस्सर आपन दूतन तलक पइ भी निभर नाही रहत ह ।  
हिआँ तलक कि सरग भी परमेस्सर क अपेच्छा सुद्ध नाही अहइ ।  
१६ मानव जाति बहोत जियादा पापी

अउर भूरस्ट अहईं ।  
 उ बुराई क पानी क तरह गटक जात ह ।  
 १७ “अय्यूव, मोरी बात सुना अउर मई ओकर  
 व्याख्या तोहसे करब ।  
 मई तोहका बताउब, जउन मई जानत हउं ।  
 १८ मई तोहका उ सहइ बतउब्या जउन बुद्धिमान  
 मनई बतउब्या ।  
 उ पचे एन बातन क आपन पूरखन स सुनेस ह  
 अउर ओनका छिपाइ बिना बताएस ।  
 १९ सिरिफ ओनकर पूरखन क ही भुईया दीन्ह गवा  
 रहा ।  
 ओनकर देस मँ कउनो परदेसी नाहीं रहा ।  
 २० दुट्ट मनई जिन्नगी भइ पीरा झेली ।  
 एक करूर मनई ओन सबहिं बरिसन मँ जउन  
 ओकरे बरे निहचित कीन्ह ग अहईं, दुःख  
 भोगत रही ।  
 २१ ओकरे कानन मँ भयंकर ध्वनियन होत रइहीं ।  
 जब उ सोची उ सुरच्छत अहइ तबहीं ओकर  
 दुस्मन ओह पइ हमला करिहीं ।  
 २२ दुट्ट मनई कउनो आसा नाहीं अहइ कि उ  
 आंधियारा बचिके निकारि पावइ ।  
 कहुँ एक अइसी तरवार अहइ जउन ओका मार  
 डावइ क इन्तज़ार करत अहइ ।  
 २३ उ एह कइती ओह कइती भटकत भवा फिरत ह  
 मुला ओकर देह गीधन क चारा बनि जाइ ।  
 ओका इ पता अहइ कि ओकर मउत बहोत निचके  
 अहइ ।  
 २४ चिन्ता अउ यातना ओका डरपोक बनावत हीं ।  
 इ सबइ बातन ओह पइ अइसे वार करत हीं जइसे  
 कउनो राजा जुद्ध करइ बरे तइयार होत हीं ।  
 २५ काहेकि दुट्ट मनई परमेस्सर क हुकुम मनइ स  
 इन्कार करत ह  
 अउर सर्वसक्तीमान क नज़र-अन्दाज़ करत ह ।  
 २६ उ दुट्ट मनई बहोत हठी अहइ ।  
 उ परमेस्सर क खिलाफ लड़इ चाहत ह, सोचत  
 अहा कि उ मजबूत ढाल स ओका हराइ सकत  
 ह ।  
 २७ दुट्ट मनई बहोत क मुँहे पइ चर्बी चढ़ी रहत  
 ह ।  
 ओकर कमर माँस भर जाइ स मोटवार होइ जात  
 ह ।  
 २८ मुला उ उजाड़ सहरन मँ रही ।  
 उ अइसे घरन मँ रही जहाँ कउनो नाहीं रहत ह ।  
 ओकर घरन हाली ही रौंदा जइहीं ।  
 २९ दुट्ट मनई जियादा समइ तलक धनी नाहीं  
 रही ।

ओनकर भाग्य क धरती पइ  
 स्थित रुप मँ ठहरवा नाहीं जाब्या ।  
 ३० दुट्ट मनई आंधियारा स न बच पाई ।  
 उ उ बृच्छ क नाई होइ जेकर सबइ डारन आगी स  
 झरँस गइ अहईं ।  
 परमेस्सर क साँस दुट्टन क उड़ाइ देइ ।  
 ३१ दुट्ट लोग बेकार क चिजियन क भरोसे रहिके  
 आपन क मुख न बनावईं  
 काहेकि ओका कछू प्राप्ति न होइ पाई ।  
 ३२ दुट्ट मनई समइ स पहिले ही मरि जाब ।  
 उ पचे उ बृच्छ क नाई होइ जाइ जेकर चोटी क  
 डारन मरि गवा ह ।  
 ३३ दुट्ट मनई उ अंगूरे क बेल क नाई होत ह जेकर  
 फल पाकइ स पहिले ही झरि जात हीं ।  
 अइसा मनई जइतून क बृच्छ क नाई होत ह,  
 जेकर फूल सारि जात हीं ।  
 ३४ काहेकि परमेस्सर क बगइर लोग खाली हाथ  
 रहहीं ।  
 अइसे लोग जेनका पइसन स पियार अहइ, घूस  
 लेत हीं ।  
 ओनकर घर आगी स नस्ट होइ जइहीं ।  
 ३५ उ पचे मूसिबत क कुचक्र रचत हीं अउर बुरे  
 करम करत हीं ।  
 उ पचे लोगन क छलइ क तरकीब क जोजना  
 बनावत हीं ।”

अय्यूव एलीपज क जावाब देत ह

१६ १ एह पइ अय्यूव जावाब देत भए कहेसः  
 २ “मई पहिले ही इ सबइ बातन क बहोत  
 बार सुनेउँ ह ।  
 तू ‘आरामदेइवाला लोग’ सचमुच सिरिफ मोका  
 तंग करत ह !  
 ३ तोहार बेकार क लम्बी बातन कबहुँ खतम नाहीं  
 होतिन ।  
 तू काहे तर्क करत ही रहत ह ?  
 ४ जइसे तू कहत अहा वइसे बातन तउ मई भी  
 कहइ सकत्या ।  
 अगर तू पचन्क मोर दुःख झेलइ क पड़त,  
 मई भी तोहार खिलाफ तर्क देइ सकत हउं  
 अउर तोहार अपमान कइ सकत्या ।  
 ५ मुला मई आपन बचनन स तोहार हिम्मत बढ़ाइ  
 सकत्या  
 अउर तोहरे बरे आसा बँधाइ सकत्या ।  
 ६ “मुला जउन कछू मई कहत हउं ओहसे मोर दुःख  
 दूर नाहीं होइ सकत ।



मुला अगर मई कछु भी न कहउँ तउ भी मोका चइन नाही पड़त ।

७ फुरइ हे परमेस्सर तू मोर सकती क हर लिहा ह । तू मोर सारा घराने क बर्बाद कइ दिहा ह ।

८ तू मोर सरीर क झूरीदार बनाइ दिहेस ह, अउर इ मोर खिलाफ गवाही दिहेस ह ।

मई खउफनाक देखौत हउँ अउर लोग अइसा सोचत हीं कि मई बुराइ करइ क कारण अपराधी हउँ ।

९ “परमेस्सर मोह पइ प्रहार करत ह ।

उ मोह पइ कोहान अहइ ।

उ मोरी देह क फारिके अलगाइ दिहस ह ।

परमेस्सर मोरे ऊपर दाँत पीसत ह ।

मोर दुस्मन घिना स भरी निगाह स धूरत हीं ।

१० लोग मोर हँसीं करत हीं ।

उ पचे सबहीं मोर खिलाफ इकट्ठा होत ह अउर मोरे मुँह क थपड़ावत ह ।

११ परमेस्सर मोका दुट्ट लोगन क हाथे मँ अर्पण कइ दिहे अहइ ।

उ दुट्ट मनई मोहे पइ सकती दिहस ह ।

१२ मोरे संग सब कछु भला चंगा रहा ।

तबहीं परमेस्सर मोका कुचर दिहस ।

हाँ, उ मोका गटई स धइ लिहेस

अउर मोर चिथरा चिथरा कइ डाएस ।

परमेस्सर मोका निसाना बनाइ लिहस ।

१३ परमेस्सर क तीरंदाज मोरे चारिहुँ कइँती अहइ ।

उ मोरे गुर्दन क बाणन स बेधत ह ।

उ मोहे पइ दाया नाहीं देखावत ह ।

उ मोरे पित्त क धरती पइ बहाइ देत ह ।

१४ परमेस्सर मोह पइ बार बार वार करत ह ।

उ मोह पइ अइसे झपटत ह जइसे कउनो फउजी जुद्ध मँ नाहीं झपटत ह ।

१५ “मई बहोत ही दुःखी हउँ ।

एह बरे मई विलाप क ओढ़ना पहिरत हउँ ।

मई हिआँ धूलि मँ बइठा भवा हउँ अउर हरा भवा अनुभव करत हउँ ।

१६ मोरे मुँह रोवत बिलखत भए लाल भवा ।

मोरि आँखिन क खाले करिया घेरा अहइ ।

१७ मई कउनो क संग कबहुँ भी क्रूर नाहीं भएउँ ।

मुला इ सबइ बुरी बातन मोरे संग घटित भएन ।

मोरे पराथनन सही अहइ ।

१८ “हे भुइयाँ, तू कबहुँ ओन अत्याचारन क जिन छिपाया जउन मोरे संग कीन्ह गवा अहइ ।

मोर निआउ क बिनती क तू कबहुँ रुकइ जिन दया ।

१९ अब तलक भी होइ सकत ह कि हुआँ आकास मँ कउनो तउ मोरे पच्छु मँ होइ ।

कउनो ऊपर अहइ जउन मोका दोख स रहित सिद्ध करी ।

२० मोर मीत मोर बारे मँ बोलत अहइ,

जब मई आसा स रोवत रही कि परमेस्सर मोर मदद करब ।

२१ मोर इच्छा अहइ कि कउनो एक मोर अउर परमेस्सर क बिचउली करी

जइसे कउनो एक मनई अउर परोसी क बीच बिचउली करत ही ।

२२ “कछु ही बरिस बाद

मई हुआँ चला जाब जहाँ स फुन मई कबहुँ वापस न आउब ।

१ “मोर जिउने कि इच्छा नस्ट कीन्ह ग अहइ ।

मोर प्राण लगभग जाइ चुका अहइ ।

कबर मोर बाट जोहत अहइ ।

२ लोग मोका घेर लेत हीं अउर मोह पइ हँसत हीं ।

मई ओनका लखत हउँ जब लोग मोर अपमान करत हीं ।

३ “परमेस्सर, मोर बेकसूर होइ क पुस्टि करा ।

मोर निर्दोख होइ क गवाही देइ बरे कउनो तइयार नाहीं होइ ।

४ मोरे मीतन क मन तू मूदँ ल्या ह ।

एह बरे उ पचे जीत नाहीं सकब ।

५ लोग जउन कहत ह उ तू जानत ह,

‘मनई आपन मीत क मदद करइ बरे

आपन गदेलन क नज़र अन्दाज़ करत ह ।’

६ परमेस्सर मोर नाउँ हर कउनो बरे अपसब्द बनाएस ह

अउर लोग मोरे मुँहे पइ थूका करत हीं ।

७ मोर आँखी लगभग आँधर होइ चुकी अहइ काहेकि मई बहोत दुःखी हउँ ।

मोर देह एक छाया क तरह दुर्बल होइ चुकी अहइ ।

८ नीक लोगन ब्याकुल अहइ कि इ घटि सकत ह ।

निरअपराध लोग ओन क खिलाफ उतेजित अहइ । जउन परमेस्सर क मज़ाक उड़ावत ह ।

९ मुला सज्जन नेकी क जिन्नगी जिअत रहहीं ।

निरापराधी लोग सकतीसाली होइ जइहीं ।

१० “जदि तू लउटि आउब्या, तउ आवा ।

किन्तु मई दिखाउब कि तू पचन मँ स कउनो बुहिदमान नाहीं अहइ ।

११ मोर जिन्नगी यो ही बीतन अहइ ।

मोर सबइ जोजना टूट गइ अहइ अउर आसा चली गइ अहइ ।

१२ हरेक चीज क उलझा दीन्ह ग ह,

उ पचे रात क दिन कहत ह अउर प्रकास  
अँधियारा लिआवत ह।

१३ “मइ आसा करउँ कि कबर मोर घर  
अउ अँधियारा मोर बिछुना होइ।

१४ अगर मइँ कबर स कहउँ, ‘तू मोरे बाप अहा,’  
अउर कीरा स ‘तू मोर महतारी अहा,’ या ‘तू मोर  
बहिन अहा।’

१५ अगर उ मोर सिरिफ एक टु आसा अहइ तबइ तु  
कउनो आसा मोका नाही अहइ  
अउर कउनो भी मनई मोरे बरे कउनो आसा नाही  
लखि सकत ह।

१६ का मोर आसा भी मोरे संग मरि जाइ ?  
का मइँ अउर मोरे आसा एक संग कबर मँ  
मिलिहीं ?”

अय्यूब क बिल्दद क जवाब

१८ ? फिन सूहू प्रदेस क बिल्दद जवाब देत  
भए कहेस।

२ “अय्यूब, इ तरह क बातन करब तू कब तज  
देब्या ?

तोहका चुप रहइ चाही अउर सुनइ चाही, सिरिफ  
तब ही हम कहि सकित ह।

३ तू काहे इ सोचत ह कि हम ओतँना मूरख अही  
जेतना मूरख एक टु बर्धा होत ह ?

४ अय्यूब, तू आपन किरोध स आपन ही नोस्कान  
करत अहा।

का लोग भुइँया बस तोहरे बरे तजि देई ?

का तु इ सोचत अहा कि बस तोहका तृप्त करइ क  
परमेस्सर धरती क हलाइ देई ?

५ “हाँ, बुरा मनई क प्रकास बुझी  
अउर ओकर आगी क लौ न चमकी।

६ ओकरे घरे क प्रकास करिया पड़ि जाइ  
अउर जउन दिया ओकरे लगे अहइ उ बुझ जाइ।

७ सक्तीसाली मनई क कदम धीमे स बढ़त ह।  
आपन ही बुरा जोजनन स उ पतन क झेलब्या।

८ ओकर आपन ही कदम ओका एक जाल क फंदा  
मँ गिराए देइहीं।

उ चलिके जालि मँ जाई अउर फँस जाई।

९ कउनो जाल ओकर एड़ी क पकड़िके धइ लेइ।  
एक टु जाल ओका किसिके जकर लेइ।

१० एक रस्सा ओकरे बरे धरती मँ छुपा रही।  
कछू फंदा ओकरे राहे मँ झुठ बोलब्या।

११ ओकरे चारिहुँ कइँती सबहिँ आतंक होइ।  
ओकर हर कदम क डर पाछा करत रही।

१२ खुउफनाक मुसीबतन ओकरे बरे भुखान होई।  
जब उ गिरी, विध्वंस ओकरे बरे तइयार रहहीं।

१३ महा बियाधि ओकरे चमड़ी क हीसन क लील  
जाई।

उ ओकरे बाँहिन अउ ओकर हँडियन क सड़ाइ  
देइ।

१४ आपन घरे सुरच्छा स दुट्ट व्यक्ति क दूर कीन्ह  
जाइ।

आतंक क राजा क लगे ओका लइ जावा जाइ।

१५ ओकरे घरे मँ तब तलक कछू भी न बची  
जब तलक ओकरे सचमुच घरे मँ धधकत भइ  
गन्धक बिखेरी जाइ।

१६ ओकरे खाले गइ भइ जड़न झुराइ जइहीं  
अउर ओकरे ऊपर क डारन मुरझाइ जइहीं।

१७ धरती क लोग ओका याद नाही करिहीं।  
बस अब कउनो भी ओका याद नाही करी।

१८ प्रकास स ओका हटाइ दीन्ह जाइ अउर उ  
अँधियारा मँ ढकेला जाइ।

उ पचे ओका दुनिया स दूर भगाए देइहीं।

१९ ओकर कउनो गदेलन अउ सन्तानन नाही  
होइहीं।

ओकरे घरे मँ कउनो जिअत नाही बची।

२० पच्छिम क लोग सहमा रहि जइहीं जब उ पचे  
जानिहीं कि उ दुट्ट मनइयन क संग का  
घटेस ह।

पूरब मँ लोग आतंकित होइके सन्न रहि जइहीं।

२१ फुरइ दुर्जन व्यक्ति क घरे क संग अइसा ही  
घटी।

अइसा ही घटी उ मनई जउन परमेस्सर क नाही  
जानतेन।”

अय्यूब क जवाब

१९ ? तब अय्यूब जवाब देत भए कहेस।

२ “कब तलक तू पचे मोका सतावत रहब्या  
अउर सबदन स मोका ताड़क रहब्या ?

३ अब लखा, तू पचे दसउ दाई मोका बेज्जत किहा  
ह।

मोह पइ वार करत तू पचन्क सर्म नाही आवति ह।

४ अउर जदि मइ कउनो बुराई किहेउँ

तउ इ मोर गल्टी अहइ।

५ तू पचे इहइ चाहत अहा कि तू पचे मोहसे उत्तिम  
देखाँउन।

तू पचे कहत अहा कि मोर कस्ट मोका दोखी  
साबित करत ही।

६ मुला उ तउ परमेस्सर अहइ जउन मोरे संग बुरा  
किहस ह

अउर जउन मोरे चारिहुँ कइँती आपन फदाँ  
फइलाएस ह।

७ मई गोहरावत हउँ मोरे संग बुरा किहा ह'।  
 मुला मोका कउनो जवाब नाही मिलत ह।  
 चाहे मई निआउ क गुहार गोहरावउँ मोर कउनो  
 नाही सुनत ह।  
 ८ मोर रस्ता परमेस्सर रोकेस ह, एह बरे ओका मई  
 पार नाही कइ सकत।  
 उ अँधियारा में मोर रस्ता छुपाइ दिहस ह।  
 ९ मोर सम्मान परमेस्सर छोरे लिहस ह।  
 उ मोरे मूँड स मुकुट छोरे लिहस ह।  
 १० परमेस्सर मोर पूरा सरीर में मोर प्राण निकारि  
 तलक मारब।  
 उ मोर आसन क अइसे उखाड देत ह  
 जइसे कउनो जइ स वृच्छ क उखाडि देइ।  
 ११ मोरे खिलाफ परमेस्सर क किरोध भइकत अहइ।  
 उ मोका आपन दुस्मन कहत ह।  
 १२ परमेस्सर आपन फउज मोह पइ प्रहार करइ क  
 पठवत ह।  
 उ पचे मोरे चारिहुँ कइँती बुर्जियन खरा करत हीं।  
 उ पचे मोरे तम्बू क चारिहुँ कइँती छावनी बनावत  
 हीं।  
 १३ "परमेस्सर मोरे बन्धुअन क मोर दुस्मन बनाइ  
 दिहेस।  
 आपन मीतन बरे मई पराया होइ गएउँ।  
 १४ मोर रिस्तेदारन मोका तजि दिहन।  
 मोर मीतन मोका बिसराइ दिहन।  
 १५ मोर घरे क अतिथियन स लइके मेहरारु  
 नउकरन तलक  
 मोरे संग अइसा बेउहार करत ह जइसा मई कउनो  
 अजनबी अहउँ।  
 १६ मई आपन नउकर क बोलावत हउँ पर उ मोर  
 नाही सुनत ह।  
 उ पचे मोका मदद बरे भीख माँगाएस ह।  
 १७ मोर पत्नी मोरे साँस क गंध स घिना करत ह।  
 मोर आपन ही गदेलन मोहसे घिना करत हीं।  
 १८ नान्ह गदेलन तलक मोर हँसी उडावत हीं।  
 जब कबहुँ मई जागत हउँ, तउ उ पचे मोरे खिलाफ  
 बोलत हीं।  
 १९ मोर आपन मीत मोहसे घिना करत हीं।  
 हिआँ तलक कि अइसे लोग जउन पिरय अहइँ,  
 मोर बिरोधी होइ गवा अहइँ।  
 २० "मई एँतना दुर्बल अहउँ जइसे मई सिरिफ खाल  
 अउर हाइन होइ गवा अहउँ।  
 अब मई सिरिफ जिअत हउँ।  
 २१ "हे मोर मीतो मोह पइ दाय़ा करा, दाय़ा करा  
 मोह पइ  
 काहेकि परमेस्सर क हाथ मोहका छू गवा अहइ।

२२ काहे मोका तू भी सतावत अहा जइसे मोका  
 परमेस्सर सताएस ह  
 काहे तू मोका दुख देत भए कबहुँ अघात्या नाही ?  
 २३ "जउन मई कहत हउँ ओका कउनो क याद  
 राखइ चाही अउ किताबे में लिख देइ चाही !  
 मोर सब्ब कउनो क गोल पत्रक पइ लिख देइ  
 चाही !  
 २४ मई जउने बातन क कहत ओनका कउनो लोहा  
 क कलम स सीसा पइ लिखा जाइ चाही  
 या ओनका चट्टाने पइ खोद दीन्ह जाइ चाही  
 ताकि उ हमेसा बरे रहइ जाइ।  
 २५ मोका इ जानत हउँ कि कउनो एक अइसा अहइ  
 जउन मोर बरे बोलब्या अउर मोर रच्छा  
 करब्या।  
 मोका बिस्सास अहइ कि आखिर मैं उ धरती पइ  
 खड़ा होब्या अउर मोरे बचाव करब्या।  
 २६ मोरे आपन देह छोडइ अउर मोर चमड़ी तबाह  
 होइक पाछे भी  
 मई जानत हउँ कि मई परमेस्सर क लखब।  
 २७ मई परमेस्सर क खुद आपन आँखिन स लखब।  
 खुद स कउनो दूसर नाही, परमेस्सर क लखब।  
 मई बता नाही केतँना खुसी अनुभव करत हउँ।  
 २८ "होइ सकत ह तू कहा, 'हम अय्युव क तंग  
 करब।  
 मई मामला क जइ तलक जाब।'  
 २९ मुला तोहका तरवारे स डरइ चाही,  
 काहेकि परमेस्सर किरोधित होब्या अउर तोहका  
 तरवार स सजा देब्या।  
 अउर तब तू पचन्क समझब्या कि हुआँ निआउ क  
 एक निहचित समइ अहइ।"

सोपर क जवाब

२० १ एह पइ नामात प्रदेस क सोपर जवाब  
 दिहस।  
 २ "अय्युव, धियान दया।  
 मई परेसानी मैं हउँ।  
 यह बरे मई हाली तोहका बताएँ क कि मई का  
 सोचत हउँ।  
 ३ तोहार आलोचना हमार अपमान करत हीं।  
 मुला मई बुदधिमान हउँ अउर जानत हउँ कि  
 तोहका कइसे जवाब दीन्ह जाइ चाही।  
 ४ "एका तू तब स जानत ह जब बहोत पहिले  
 लोगन क धरती पइ पठवा ग रहा,  
 दुट्ट मनई क आनन्द बहोत दिन नाही टिकत ह।  
 अइसा मनई जेका परमेस्सर क चिन्ता नाही अहइ  
 उ तनिक समइ बरे आनन्द मैं भरि जात ह।

६ चाहे दुष्ट मनई क अपमान  
अकासे तलक छू जाइ।  
७ उ आपन तने के मल क नाई नस्ट होइ जाइ।  
उ सबइ लोग जउन ओका जानत हीं कइहीं, उ  
कहाँ अहइ ?  
८ उ अइसे बिलाइ जाइ जइसे सपन हाली ही कहुँ  
उड़ जात ह।  
फिन कबहुँ कउनो ओका लखि नाही सकी, उ नस्ट  
होइ जाइ,  
ओका राति क सपना क तरह हाँक दीन्ह जाइ।  
९ उ सबइ मनई जउन ओका लखे रहेन फुन कबहुँ  
नाहीं लखेन।  
ओकर परिवार फुन कबहुँ ओका नाही लखि पाइ।  
१० जउन कछू भी उ(दुष्ट) गरीबन स लिहे रहा  
ओकार संतानन चुकइहीं।  
ओनका आपन हीं हाथन स धन लौटाए होइ।  
११ जब उ जवान रहा, ओकर सरीर मजबूत रही,  
मुला उ हाली ही धूलि होइ जाइ।  
१२ “दुष्ट क मुहँ क दुस्तता बड़ी मीठी लागत ह,  
उ ओका आपन जिभिया क खाले छुपाइ लेइ।  
१३ बुरा मनई उ बुराई क थामे रही, ओकर दूर होइ  
जाब ओका कबहुँ नाही भाई,  
तउ उ ओका आपन मुँहें मँ थामे रही।  
१४ मुला ओकरे पेटे मँ ओकर भोजन जहर बन जाइ,  
उ ओकरे भीतर अइसे बन जाइ जइसे कउनो नाग  
क विख सा कड़वा जहर।  
१५ दुष्ट धन दौलत क लील जात ह मुला उ ओन  
सबका बाहेर उगिली।  
परमेस्सर दुष्ट क पेटे स ओन सबका उगालिवाइ।  
१६ दुष्ट मनई क विख चुसब साँपे क नाई होइ।  
मुला साँपे क विसैला जीभ ओका मारि डइहीं।  
१७ मुला दुष्ट मनई लखइ क आनन्द नाही लेइहीं  
अइसी ओन नदियन क जउन सहइ अउर मलाई  
बरे बहा करत ह।  
१८ दुष्ट क ओकर लाभ वापिस करइ क दबावा  
जाइ।  
ओका ओन चिजियन क आनन्द नाही लेइ दीन्ह  
जाइ जेनके बरे उ मेहनत किहे अहइ।  
१९ कहेकि उ दुष्ट मनई दिन मनई क चिन्ता नाही  
किहस।  
बलकि, उ दूसर लोगन क घरन क भी लइ लिहस  
जेका उ पचे आपन बरे बनाएस रहा।  
२० “दुष्ट मनई कबहुँ संतुष्ट नाही होत ह।  
उ आपन सबहिं धन क लइ ले जात ह।  
२१ जब उ खात ह तउ कछू नाही तजत ह,  
तउ ओकर कामयाबी बनी नहीं रही।

२२ जब दुष्ट जन क लगे भरपूर होइ तबहिं ओन  
पइ विपत्ती आइहीं  
अउर उ कस्ट क अनुभव करिहीं।  
२३ दुष्ट जन उ सब कछू खाइ चुकी जेका उ खाइ  
चाहत ह।  
परमेस्सर आपन बरत भवा किरोध ओह पइ डाइ।  
उ दुष्ट मनई पइ परमेस्सर सजा बरसाइ।  
२४ होइ सकत है कि उ दुष्ट लोहा क तरवार स बच  
निकरइ,  
मुला कहुँ स काँसा क बाण ओका मार गिरावइ।  
२५ तीर खींचत लिहेस ह,  
अउर बिजुरि क नाई ओकरे पीठ मँ घुसत ह,  
अउर ओकरे करेजा बाहर आ जात ह,  
अउर उ आंतकित होइके काँप उठत ह।  
२६ ओकर सबहिं खजाना नस्ट होइ जइहीं,  
एक ठु अइसी आगी जेका कउनो नाही बारेस  
ओका नस्ट करी,  
उ आगी ओनका जउन ओकरे घरे मँ बचा अहइ  
नस्ट कइ डाइ।  
२७ सरग सिद्ध करी कि उ दुष्ट अपराधी अहइ,  
इ गवाही धरती ओकरे खिलाफ देइ।  
२८ जउन कछू भी ओकरे घरे मँ अहइ,  
उ परमेस्सर क किरोध क बाढ़ मँ बहि जाइ।  
२९ इ उहइ जेका परमेस्सर दुष्टन क संग करइ क  
जोजना रचत ह।  
इ उहइ जइसा परमेस्सर ओनका देइ क योजना  
बनावत ह।”

अय्यूब क जवाब

२१ १ एह पइ अय्यूब जवाब देत भए कहेस।  
२ “तू पचे चित्त दइके सुना जउन मई कहत  
हउँ,  
तोहार सुनइ क आपन तरिके स मोर दिलासा होइ  
जाइ।  
३ जब मई बोलत हउँ तू धीरा धरा,  
फुन जब मई बोल चुकउँ तब तू मोर हँसी उड़ाइ  
सकत ह।  
४ “मोर सिकाइत मनइयन क खिलाफ नाही अहइ,  
मई काहे सहनसील नाही अहउँ ओकर खास वजह  
अहइ।  
५ तू मोका लखा अउर चकित होइ जा,  
आपन सोक दिखाइ बरे आपन हाथ आपन मुँहे पइ  
धरा।  
६ जब मई सोचत हउँ ओन सब क जउन मोर संग  
घटा

तउ मोका डर लागत ह अउर मोर देह थर थर  
काँपत ह ।

७ काहे बुरे लोगन क उमर लम्बी होत ह ?

काहे उ पचे बूढ़ाइ जात हीं अउर कामयाब होत  
हीं ?

८ बुरे लोग आपन संतानन क आपन संग बढ़त भए  
लखत हीं ।

बुरे लोग आपन-आपन नाती पोतन क लखइ क  
जिअत रहत हीं ।

९ ओनकर घर सुरच्छित रहत हीं अउर उ पचे  
डेरातेन नाहीं ।

परमेस्सर दुस्टन क सजा देइ बरे आपन सजा काम  
मँ नाहीं लिआवत ह ।

१० ओकर साँड कबहुँ भी मिला कइ मँ नाहीं चुकत  
ह ।

ओनकर गइयन बछुवन क जनम देइ बरे गाभिन  
होत ।

ओनकर गर्भ कबहुँ नाहीं गिरत हीं ।

११ बुरे लोग गदेलन क बाहेर खेलइ पठवत हीं  
मेमनन क जइसे,

ओनकर गदेलन नाचत हीं चारिहुँ ओर ।

१२ मजीरा, वीणा अउर बाँसुरी क धून पइ उ पचे  
गावत हीं अउर नाचत हीं ।

१३ बुरे लोग आपन जिन्नगी भइ कामयाबी क  
आनन्द लेत हीं ।

फुन बिना दुख भोगे उ पचे मरि जात हीं अउर  
आपन कबरन क बीच चला जात हीं ।

१४ मुला बूरे लोग परमेस्सर स कहा करत हीं,  
'हमका अकेला तजि दया ।

अउर एकर हमका परवाह नाहीं कि तू हमसे कइसा  
जिन्नगी जिअइ चाहत ह ।'

१५ दुट्ट लोग कहा करत हीं, 'सर्वसक्तीमान  
परमेस्सर कउन अहइ ?

हमका ओकरी सेवा क जरूरत नाहीं अहइ ।

ओकरी पराथाना करइ क कउनो लाभ नाहीं ।'

१६ "दुस्ट मनई सोचत हीं कि ओनका आपन ही  
करण कामयाबी मिलत ह,

मुला मई ओनकर विचारन क नाहीं अपनाइ सकत  
हुँ ।

१७ मुला का अइसा होत ह कि दुस्ट जन क प्रकास  
बुताइ जावा करत ह ?

केतनी दाई दुस्टन क दुःख घेरा करत हीं ?

का परमेस्सर ओनसे कोहाइ जात ह, अउर ओनका  
सजा देत ह ?

१८ का परमेस्सर दुस्ट लोगन क अइसे उड़ावत ह  
जइसे हवा तिनके क उड़ावत ह

अउर तेज हवा अनाजे क भूसा उड़ाइ देत हीं ?

१९ मुला तू कहत ह: 'परमेस्सर एक गदेलन क ओकरे  
बाप क पापनक सजा देत ह ।'

नाहीं, परमेस्सर क चाही कि बुरे जन क राजा देइ ।  
तबहीं उ बूरा मनई जानी कि ओका ओकरे निज  
पापन बरे सजा मिलती अहइ ।

२० तू पापी क ओकरे आपन राजा क देखाँइ दया,  
तब उ सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क कोप क अनुभव  
करी ।

२१ जब बुरा मनई क उमर क महीना खतम होइ  
जात हीं अउर उ मर जात ह:

उ उ परिवार क परवाह नाहीं करत जेका उ पाछे  
तजि जात ह ।

२२ "कउनो मनई परमेस्सर क गियान नाहीं दइ  
सकत,

उ ऊँच ओहदन क लोगन क भी निआउ करत ह ।

२३ एक पूरा अउ सफल जिन्नगी क जिअइ क पाछे  
एक मनई मरत ह,

उ एक सुरच्छित अउ सुखी जिन्नगी जिअत ह ।

२४ ओकर लगे पिवइ बरे भरपूर दुध रहा ।

अब समइ तलक ओकर हाइ तन्दुरुस्त रहिन ।

२५ मुला कउनो एक अउर मनई कठिन जिन्नगी क  
पाछे दुःख भरे मने स मरत ह,

उ जिन्नगी क कबहुँ कउनो रस नाहीं चाखेस ।

२६ इ सबइ दुइनउँ मनई एक संग माटी मँ गड़ा  
सोवत हीं

किरउनन दुइनउँ क एक संग ढाँपि लेइहीं ।

२७ "मुला मई जानत हउँ कि तू का सोचत अहा,  
अउर मोका पता अहइ कि तोहरे लगे मोरा बूरा  
करइ क कुचाल अहइ ।

२८ मोरे बरे तू इ कहा कहत ह, 'अब कहाँ बाटइ उ  
महामानुस क घर ?

कहाँ बा उ घर जेहमाँ उ दुस्ट रहत रहा ?'

२९ "मुला तू कबहुँ बटोहियन क नाहीं पूछ्या ?

का तू ओकर कहानियन पइ विस्वास नाहीं  
किहस ?

३० उ दिन जब परमेस्सर कोहाइके सजा देत ह

दुस्ट मनई सदा बच जात ह ?

३१ अइसा कउन मनई नाहीं जउन ओकरे समन्वा  
ही ओकरे करमन क बूराइ करइ ।

ओकरे पाप क सजा कउनो मनई ओका नाहीं देत  
ह ।

३२ जब कउनो मनई कवर मँ लेइ जावा जात ह,

तउ ओकरे कवर क लगे एक पहरुवा खड़ा ह ।

३३ उ दुट्ट मनई बरे उ घाटी क माटी मुलायम  
होइ ।

अनगिनत लोग भी ओकर समन्वा कब्र गएन ह,  
अउर भी लोग ओहस मिली।

३४ “तउ आपन कोरे सब्दन स तू मोका चइन नाही  
दइ सकत्या,  
तोहार जवाब सिरिफ झुटा अहई।”

एलीपज क जवाब

१ फुन तेमान क एलीपज जवाब देत भए  
कहस।

२ “परमेस्सर क कउनो भी मनई सहारा नाही दइ  
सकत,

हिआँ तलक कि उ भी जउन बहोत बुद्धिमान मनई  
होइ परमेस्सर बरे हितकर नाही होइ सकत।

३ अगर तू उहइ किहा जउन उचित रहा एहसे  
सर्वसक्तीमान परमेस्सर क आनन्द नाही  
मिली,

अउर अगर तू खरा रहा हवा तउ एहसे ओका पछू  
नाहीं मिली।

४ अय्यूब तोहका परमेस्सर काहे सजा देत ह अउर  
काहे तोह पइ दोख लगावत ह ?

का इ एह बरे कि तू भक्त अहा।

५ नाही, इ सबइ एह बरे कि तू बहोत स पाप किहा  
ह, अय्यूब,

तोहार पाप नाही रुकत अहई।

६ अय्यूब, होइ सकत ह कि तू आपन कउनो भाई क  
कछू चिज बिना कउनो कारण क गिरवी रख  
सकत ह।

होइ सकत ह कि तू कउनो दीन मनइ क ओढ़ना  
रख लिहे ह्वा अउर ओनका नंगा बना किहे  
हवा।

७ तू थके-माँदे लोगन क पानी नाही दिहा,

तू भुखान मनइयन क भोजन नाही दिहा।

८ अय्यूब, अगर तू सक्तीसाली अउ धनी रह्या, तू  
आन लोगन क सहारा नाही दिहा।

तू बड़का जमींदार अउ समरथ वाला मनई रह्या।

९ मुला तू राँड अउरतन क बगइर कछू दिहे  
लउटाइ दिहा।

अय्यूब, तू अनाथ गदेलन क लूट लिहा अउर  
ओनसे बुरा बेउहार किहा।

१० एह बरे तोहरे चारिहुँ कइँती जाल बिछा भवा  
अहई

अउर तोहका एकाएक आवत विपत्तियन डेरावत  
हीं।

११ एह बरे घना अँधियारा तोहका ढाँक लिहस ह  
अउर एह बरे बाढ़ क पानी तोहका लीलत बाटइ।

१२ “परमेस्सर अकास क सब स ऊँच हींसा मैं रहत  
ह।

उ आपन जगह स सबन स ऊँच तारन क लखइ बरे  
खाले लखत ह।

१३ मुला अय्यूब, तू का करत ह, ‘परमेस्सर कछू  
नाहीं जानत,

करिया बदरन स कइसे परमेस्सर हमका जाँच  
सकत ह

१४ धना बादर ओका छुपाइ लेइ हीं,

एह बरे जब उ आकास क सबन ऊँच हींसा मैं  
बिचरत ह तउ हमका ऊपर अकासे स लखि  
नाहीं सकत।’

१५ “अय्यूब, तू उ ही पुरानी राह पइ  
जेन पइ दुस्ट लोग चला करत हीं, चलत अहा।

१६ आपन मउत क समइ स पहिले ही दुट्ट लोग  
मर गएन।

बाढ़ ओनका बहाइके लइ गइ रही।

१७ इ सबइ उहइ लोग अहई जउन परमेस्सर स  
कहत हीं, ‘हमका अकेल्ले तजि द्या।’

उ पचे सोचेन कि ‘सर्वसक्तीमान परमेस्सर हमार  
कछू नाही कइ सकत ह।’

१८ मुला परमेस्सर ओन लोगन क कामयाब  
बनाएस ह अउर ओनका धनवान बनाइ  
दिहा।

मुला मई उ ढंग स जेहसे दुस्ट सोचत हीं, अपनाइ  
नाहीं सकत हुँ।

१९ सज्जन जब बुरे लोगन क नास देखत हीं, तउ  
उ पचे खुस होत हीं।

पाप स रहीत लोग दुस्टन पइ हँसत हीं, अउर कहा  
करत हीं।

२० ‘हमार दुस्मन फुरइ नस्ट होइ गएन।

आगी ओनके धने क बारि देत ह।’

२१ “अय्यूब, अब खुद क तू परमेस्सर क अर्पित कइ  
दया, तब तू सान्ति पउब्या।

अगर तू अइसा करा तउ तू धन्य अउर कामयाब  
होइ जाब्या।

२२ ओकर सीख अपनाइ ल्या

अउर ओकरे सब्द आपन मने मैं सुरच्छित रखा।

२३ अय्यूब, अगर तू फुन सर्वसक्तीमान परमेस्सर  
क लगे आवा तउ फिन स पहिले जइसा होइ  
जाइ।

तोहका अपने घरे स पाप क बहोत दूर करइ चाही।

२४ तोहका सोना क धूरि क नाई

अउर ओफीर क सोना क नदी क तराई क चट्टान  
क नाई समझइ चाही।

२५ तब सर्वसक्तीमान परमेस्सर तोहरे बरे सोना

अउर चाँदी बन जाइ।

२६ तब तू बहोत खुस होब्या अउर तोहका सुख मिली।

परमेस्सर क समन्वा तू बिना कउनो सर्म क मूँड़ि उठाइ सकब्या।

२७ जब तू ओकर बिनती करब्या तउ उ तोर सुना करी,

जउन प्रतिग्या तू ओहसे किहे रह्या, तू ओका पूरा कइ सकब्या।

२८ जउन कछू तू करब्या ओहमाँ तोहका कामयाबी मिली,

तोहरे रास्ते पइ प्रकास चमकी।

२९ परमेस्सर अहंकारी जन क लज्जित करी,

मुला परमेस्सर नम्र मनई क रच्छा करी।

३० परमेस्सर जउन मनई भोला नाही अहइ ओकर भी रच्छा करी,

तोहरे हाथन क सफाई स ओका उद्धार मिली।”

अय्यूब जवाब देत ह

२३ १ फिन अय्यूब जवाब देत भए कहेस।  
२ “मइ आजु भी बुरी, सिकाइत करत हउँ कि परमेस्सर मोका करी सजा देत अहइ,

एह बरे मइ सिकाइत करत रहत हउँ।

३ कास! मइ इ जान पावत कि ओका कहाँ हेरउँ।  
कास! मइ इ जान पावत कि परमेस्सर क लगे कइसे जाउँ।

४ मइ आपन मुकद्मा क सफाई परमेस्सर क समन्वा पेस करब्यु।

मइ आपन क निर्दोष साबित करइ बरे बहस करब्या।

५ मइ इ जानइ चाहत हउँ कि परमेस्सर कइसे मोरे दलीलन क जवाब देत ह,

तब मइ परमेस्सर क जवाब समुझ पउतेउँ।

६ का परमेस्सर आपन महासक्ती क संग मोरे खिलाफ होत?

नाहीं! उ मोर सुनी।

७ मइ एक नेक मनई हउँ।

परमेस्सर मोका आपन कहानी क कहइ देइ, तब मोर निआउ कती परमेस्सर मोका अजाद कइ देइ।

८ “मुला अगर मइ पूरब क जाउँ तउ परमेस्सर हुआ नाही अहइ

अउर अगर मइ पच्छिउँ क जाउँ तउ भी परमेस्सर मोका नाही देखत ह।

१ परमेस्सर जब उत्तर मँ छिपत ह \*\* तउ मइ ओका देख नाही पावत हउँ।

जब परमेस्सर दक्खिन क छिपत ह तउ भी उ मोका नाही देखत ह।

१० मुला परमेस्सर मोरे हर चरण क लखत ह, जेका मइ उठावत हउँ।

जब उ मोर परीच्छा लइ उठी तउ उ लखी कि मोहमाँ कछू भी बुरा नाही अबइ,

उ लखी कि मइ खरा सोना जइसा अहउँ।

११ परमेस्सर जउन चाहत ह मइ हमेसा उहइ पइ चलत हउँ

मइ कबहुँ भी परमेस्सर क राहे पइ चलइ स नाही रुकेहउँ।

१२ मइ हमेसा उहइ बात करत हउँ जेनकर आसा परमेस्सर देत ह।

मइ आपन मुँहे क भोजन स जियादा परमेस्सर क मुँहे क सब्दन स परिम किहेउँ ह।

१३ “मुला परमेस्सर एक मन वाले अहा,  
अउर कउनो भी ओका बदल नाही बदलत।

परमेस्सर जउन चाहत ह उहइ करत ह।

१४ परमेस्सर जउन भी जोजना मोरे विरोध मँ बनाइ लिहस ह उहइ करी,  
ओकरे लगे मोरे बरे अउर भी बहोत सारी जोजना अहइ।

१५ एह बरे मइ ओसे डेरात हउँ।

एह बरे परमेस्सर मोका भयभीत करत ह।

१६ परमेस्सर मोर हिरदइ क दुर्बल करत ह अउर मोर हिम्मत टूट जात ह।

सर्वसक्तीमान परमेस्सर मोका भयभीत करत ह।

१७ अगर तउ मोर मुहँ सघन अँधियारा ढकत ह

तउ भी अँधियारा मोका चुप नाही कइ सकत ह।

२४ १ “सर्वसक्तीमान परमेस्सर काहे नाही निआउ करइ बरे समइ मुकरर करत ह?  
लोग जउन परमेस्सर क मानत हीं ओनका काहे निआउ क समइ क बेकार बाट जोहइ क पड़त ह?

२ “लोग आपन धन दौलत क चीन्हन क, जउन ओकर चउहदी बतावत हीं, सरकावत रहत हीं ताकि आपन पड़ोसी क थोड़ी अउर धरती हइप लेइं।

लोग पसु क चोराइ लेत हीं अउर ओनका दूसर चरागाहन मँ हाँक लइ जात हीं।

३ अनाथ बच्चन क गदहन क उ पचे चोराइ लइ जात हीं।

\*\*२३ :१ परमेस्सर ... छिपत ह जब परमेस्सर उत्तर मँ धूमत ह।

उ पचे राँड मेहरारुअन क बर्धन खोल लइ जात हीं  
जब तलक कि उ ओनकर कर्ज नाही चुकावत  
हीं ।

१ बूरे लोग ओन गदेलन क जेकर बाप नाही अहइ  
ओनकर महतारी स छिन लेत हीं ।

उ पचे गरीब लोगन क आपन दास बनावत हीं ।

४ उ पचे दीन जन क मजबूर करत ही कि उ तजिके  
दूर हटि जाइके मजबूर होइ जात ह,

एन दुस्टन स खुद क छुपावइ क ।

५ “उ सबइ दीन लोग ओन जंगली गदहन जइसे  
अहइ जउन मरु भूमि मँ आपन चारा हेरा  
करत हीं ।

गरीबन अउ ओनकर बच्चन क मरुभूमि भोजन देत  
रहत ह ।

६ गरीब लोगन क कउनो दूसर क खेत मँ अनाज  
काटइ चाही ।

दुस्टन क अंगूरन क बगियन स बच भवा फलन उ  
पचे चुना करत हीं ।

७ दीन लोगन क बगइर ओढनन क सबइ रात  
बितावइ क होइ ।

सर्दी मँ ओनके लगे आपन क ढाँकइ बरे कछू नाही  
होइ ।

८ उ पचे बर्खा स पहाड़न मँ भिज गवा अहइ,  
ओनका बड़की चट्टानन स लिपट क रहइ  
क होइ,

काहेकि ओनके लगे कछू नाही जउन ओनका  
मौसम स बचाइ लेइ ।

१० गरीब लोगन क लगे ओढना नाही होत हीं ।

यह बरे ओन लोगन क नंगा ही घूमइ क होइ ।

उ पचे दुस्टन क गठरी क भार ढोवत हीं, मुला फुन  
भी उ पचे भुखान रहत हीं ।

११ गरीब लोग जइतून क तेल पेरिके निकारत हीं ।

उ पचे कुंडन मँ अगूर सूँदत हीं फुन भी उ पचे  
पिआसा रहत हीं ।

१२ मरत भए लोग जउन आहें भरत हीं उ सबइ  
सहर मँ सुनाइ पड़त ह ।

सतावा भवा लोग सहारा क पुकारत हीं, मुला  
परमेस्सर नाही सुनत ह ।

१३ “कछू अइसे लोग अहइ जउन प्रकास क  
खिलाफ होत हीं ।

उ पचे नाही जानइ चाहत हीं कि परमेस्सर ओनसे  
का करवावइ चाहत ह ।

परमेस्सर क राह पइ उ पचे नाही चलत हीं ।

१४ हत्यारा भिसारे जाग जात ह गरीबन अउ  
जरुरतवाले लोगन क हत्या करत ह ।

उ राति मँ चोर क नाई बन जात ह ।

१५ उ मनई जउन विभिचार करत ह, रात आवइ क  
बाट जोहा करत ह,

उ सोचत ह, ‘ओका कउनो नाही लखी’ अउर उ  
आपन मुँह ढाँपि लेत ह ।

१६ दुटठ मनई जब रात मँ अधेरा होत ह तउ सेंधे  
लगाइके घरे मँ घुसत हीं ।

मुला दिन मँ उ पचे आपन हि घरन मँ छुपा रहत  
हीं ।

उ पचे प्रकास स बचत हीं ।

१७ ओन दुटठ लोगन क आँधियारा सबुह क नाई  
होत ह,

उ पचे आतक अउ आँधियारा क मीत होत हीं ।

१८ “दुटठ लोग अइसे बाहइ दीन्ह जात हीं जइसे  
झाग बाढ़ क पानी पाइ ।

उ धरती अभीसाप स ढकी बा जेकर उ पचे मालिक  
अहइ ।

कउनो भी अंगूर क बगियन मँ अंगुर जमा करइ  
बरे नाही जात ह ।

१९ जइसे गरम व सूखा मौसम पिघलत बरफ क  
पानी क सोख लेत ह,

वइसे ही दुस्ट लोग कबर क जरिये लील जइहीं ।

२० दुस्ट मनइयन मरइ क पाछे ओकर महतारी  
तलक ओका बिसरि जाइ ।

दुस्ट लोगन क देह क कीरा खाइ जइहीं ।

कउनो भी ओन लोगन क याद नाही रखइहीं ।

दुस्ट जन गिरे भए वृच्छ क नाई नष्ट कीन्ह  
जइहीं ।

२१ दुस्ट मनई बाँझ मेहरारुअन क सतावा करत  
हीं ।

उ पचे उ तरह क मेहरारु क दुःख देत हीं ।

उ पचे कउनो भी राँड अउरत बरे

दाया नाही देखाँवत हीं ।

२२ दुस्ट मनई आपन सक्ती क उपयोग बलसाली  
क नस्ट करइ बरे करत हीं ।

बुरे लोग सक्तीसाली होइ जइहीं मुला आपन ही  
जन्मगी क भरोसा नाही होइ

कि उ पचे जियादा दिन जी पइहीं ।

२३ होइ सकत ह कि तनिक समइ बरे परमेस्सर  
सक्तीसाली क सुरच्छित रहइ देइ,

मुला परमेस्सर सदा ओन पइ आँखी रखत ह ।

२४ दुस्ट मनई तनिक समइ बरे कामयाबी पाइ जात  
हीं, मुला फुन उ पचे नस्ट होइ जात हीं ।

दूसर लोगन क तरह उ पचे भी मुझाँ जात हीं अउर  
उदास होइ जात हीं ।

अनाजे क कटी भइ बाले क नाई उ पचे गिर जात  
हीं ।



२५ “अगर इ सबइ बातन फुरइ नाही अहइँ तउ कउन सिध्द कइ सकत ह कि मइँ झूठ कहेउँ ह ?  
कउन देखाँइ सकत ह कि मोर सब्द सत्तय नाही अहइँ ?”

बिल्दद क अय्यूब क जवाब

**२५** ? फिन सूह पूरदेस क निवासी बिल्दद जवाब देत भए कहेस ।  
२ “परमेस्सर सासक अहइँ अउर हर मनई क चाही कि परमेस्सर स डेराइ अउर ओकर मान करइ ।  
परमेस्सर आपन सरग क राज्ज मँ सान्ति राखत ह ।  
३ कउनो आपन फउजन क गन नाही सकत ह, परमेस्सर क पूरकास सब पइ चमकत ह ।  
४ मुला फुरइ परमेस्सर क अगवा कउनो मनई उचित नाही ठहर सकत ह ।  
कउनो मनई जउन मेहरारु स पइदा भवा होइ फुरइ निर्दोख नाही होइ सकत ह ।  
५ परमेस्सर क आँखिन क समन्वा चाँद तलक चमकीला नाही अहइँ ।  
परमेस्सर क आँखिन क समन्वा तारन निर्मल नाही अहइँ ।  
६ मनई तउ बहोत कम भला अहइँ ।  
मनई तउ बस कीरा अहइँ एक ठु अइसा कीरा जउन बेकार क होत ह ।”

अय्यूब क बिल्दद क जवाब

**२६** ? तब अय्यूब कहेस ।  
२ “हे बिल्दद, सोपर अउर एलीपज्ज जउन लोग दुर्बल अहइँ तू फुरइ ओनका सहारा देइ सकत ह ।  
अरे हाँ, तू दुर्बल बाहँन क फुन स सक्तीसाली बनाया ह ।  
३ हाँ तू निर्बुध्द क सम्मति दिहा ह ।  
कइसा महागियान तू देखाँया ह ।  
४ इ बातन क कहइँ मँ कउन तोहर मदद किहस ?  
केकर आतिमा तोहका पूरेणा दिहस ?  
५ “जउन लोगन मरि गवा अहइँ ओनकर आतिमा धरती क खाले पानी मँ भय स बहोत काँपति अहइँ ।  
६ मउत क जगह परमेस्सर क आँखी क समन्वा सुली अहइँ,

परमेस्सर क अगवा विनास क जगह ढका नाही अहइँ ।

७ परमेस्सर उत्तरी अकासे क खाली जगह पइ फइलावत ह ।  
परमेस्सर खाली जगह मँ धरती लटकाएस ह ।  
८ परमेस्सर घने बादरन क पानी स भरत ह, मुला पानी क भारी भार स बादरन क फाटइ नाही देत ह ।  
९ परमेस्सर पूरा चन्दमा क ढाँपत ह, परमेस्सर चाँद पइ आपन बादर फइलावत ह अउर ओका ढाँकि लेत ह ।  
१० परमेस्सर छित्तिज क रचत ह पूरकास अउ अँधिरा क सीमा रेखा क रुप मँ समुन्दर पइ ।  
११ जब परमेस्सर डाँटत ह तउ उ सबइ नेवंन जउने पइ आकास टिका अहइँ डर स काँपइ लागत ही ।  
१२ परमेस्सर क सक्ती सागर क सांत कइ देत ह ।  
परमेस्सर क बुध्द राहब ऩँक नस्ट किहस ।  
१३ परमेस्सर क साँस अकास क साफ पकइ देत ह ।  
परमेस्सर क हाथ उ साँप क मारि दिहस जउन पराइ जाइ क जतन किहस ।  
१४ इ सबइ तउ परमेस्सर क अजूबा कारजन क तनिक सी बातन अहइँ ।  
बस हम थोड़के परमेस्सर क अवाज क फुसफुसाहट क सुनित ह ।  
मुला फुरइ कउनो मनई परमेस्सर क सक्ती क गर्जन क नाही समुझ सकत ह ।”  
? फुन अय्यूब कहइँ क जारी राखेस । उ कहस,  
२ “फुरइ परमेस्सर जिअत ह अउर इ जेतँना सच अहइँ कि परमेस्सर जिअत ह फुरइ उ वइसेन ही मोरे बोर अनिआउ स भरा रहा अहइँ ।  
हाँ! सर्वसक्तीसाली परमेस्सर मोरे जीवन मँ कइवाहट भरेस ह ।  
३ मुला जब तलक मोहमाँ पूराण अहइँ अउर परमेस्सर क साँस मोहे मँ अहइँ ।  
४ तब तलक मोरे होंठ झूठी बातन नाही बोलिहीं, अउर मोर जिभिया कबहुँ झूठ नाही बोली ।  
५ मइँ कबहुँ न मानब कि तू लोग सही अहा ।  
जब तलक मइँ मरब उ दिन तलक कहत रहब कि मइँ निर्दोख हउँ ।

६ मई आपन धार्मिक भाव क मजबूती क थामे रहब ।  
 मई कबहुँ उचित करम करब मोर चेतना मोका तंग नाहीं करी जब तलक मई जिअत हउँ ।  
 ७ मोरे दुस्मनन क दुस्ट जइसा बनइ दया, अउर ओनका सजा पावइ द्या जइसे दुस्ट लोग दण्डित होत हीं ।  
 ८ अइसे उ मनई बरे मरत वक्त कउनो आसा नाहीं अहइ जउन परमेस्सर क परवाह नाहीं करत ह ।  
 जब परमेस्सर ओकर पूराण लेइ तब भी ओकरे बरे कउनो आसा नाहीं अहइ ।  
 ९ जब उ बुरा मनई बुरा दुःखी पड़ी अउर ओका पुकारी, परमेस्सर नाहीं सुनी ।  
 १० ओका चाही कि उ उ आनन्द क चाहइ जेका सिर्फ सर्वसाक्तीमान परमेस्सर देत ह ।  
 ओका चाही कि उ हर समइ परमेस्सर स पराथना करत रहा ।  
 ११ “मई तोहका परमेस्सर क सकती सिखाउब । मई सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क योजनन क नाहीं छिपाउब ।  
 १२ खुद तू आपन अँखिन स परमेस्सर क सकती लख्या ह,  
 तउ काहे तू बेकार क बातन बोलत ह ?  
 १३ “दुस्ट लोगन बरे अइसी योजना बनाया ह । दुस्ट लोगन क सर्वसक्तीसाली परमेस्सर स अइसा ही मिली ।  
 १४ दुस्ट क चाहे केतनी ही सन्तानन होई, मुला ओकर संतानन जुद्ध मँ मारी जइहीं ।  
 दुस्टन क सन्तानन कबहुँ भरपेट खाना नाहीं पइहीं ।  
 १५ अउर अगर दुस्टन क सन्तानन ओकरी मउत क पाछे भी जिअत रहइँ तउ महामारी ओनका मारि डाई ।  
 ओकर राँइ ओनके बरे दुःखी नाहीं होइहीं ।  
 १६ दुस्ट जन चाहे चाँदी क ढेर बटोरइँ, एतना बड़का ढेर जेतना माटी क ढूहा होत ह,  
 माटी क ढूहन जइसे ओढ़ना होई ओकरे लगे ।  
 १७ जउने ओढ़नन क दुस्ट मनई जुटावत रहा ओन ओढ़नन क सज्जन पहिरी,  
 दुस्ट क चाँदी निर्दोखन मँ बँटी ।  
 १८ दुस्ट क बनावा घर जियादा दिनन नाहीं टिकत ह,  
 उ मकड़ी जाल जइसा या कउनो चौकीदार क झोपड़ी जइसा कमजोर होत ह ।

१९ दुस्ट लोग आपन खुद क दौलत क संग आपन बिछुटना पइ सोवइ जात ह,  
 मुला एक अइसा दिन आइ जब उ फुन बिस्तरे मँ वइसे ही नाहीं जाइ पाई ।  
 जब उ आँखी खोली तउ ओकर सम्पत्ति जाइ चुकी होइ ।  
 २० दुःख ओका बाढ़ क जइसा ढाँक लेइहीं,  
 रातउ रात तूफान ओका उड़ाइ लइ जाइ ।  
 २१ पुर वइया हवा ओका दूर उड़ाइ देइ,  
 तुफान ओका ओकरे घरे क बाहेर खीचली ।  
 २२ तूफान ओह पइ बगैर दाया किए भए पइ आइ अउर उ ओमँ स दूर भागइ क जतन करी ।  
 मुला लपेटके मारि ।  
 २३ जब दुस्ट मनई पराई, लोग ओह पइ तालियन बजाइहीं,  
 दुस्ट जन जब निकरिके पराइ, अपने घरे स तउ लोग ओह पइ सीटियन बजइहीं ।”  
 २४ “हुआँ चाँदी क खान बाटइ जहाँ लोग  
 २५ चाँदी पावत हीं,  
 हुआँ अइसे टउर अहइँ लोग सोना देघराइके ओका सुद्ध करत हीं ।  
 २ लोग धरती स खनिके तोहा निकारत हीं,  
 अउर चट्टानन स टेघाराइके ताँबा निकारत हीं ।  
 ३ लोग सबइ गुफा मँ प्रकास लिआवत हीं उ पचे सबइ गुफा क गहिराइ मँ हेरा करत हीं,  
 घना अँधियारा मँ उ पचे खनिज क चट्टानन हेरत हीं ।  
 ४ जहाँ लोग रहत हीं ओहसे बहोत दूर लोग गहिर गइहा खना करत हीं  
 कबहुँ कउनो अउर एँन गइहन क नाहीं छुएस ।  
 जब मनई गहिरे गइहन मँ रस्सन लटकत ह, तउ उ दूसरन बहोत दूर होत ह ।  
 ५ भोजन धरती क सतह स मिला करत ह,  
 मुला धरती क भीतर उ बढ़त जावा करत ह  
 जइसे आगी चिजियन क बदल देत ह ।  
 ६ धरती क भीतरे चट्टानन क खाले नीलम मिलि जात हीं,  
 अउर धरती क खाले माटी आपन आप मँ सोना राखत ह ।  
 ७ जंगली पंछी धरती क खाले क राहन नाहीं जानत हीं  
 न हीं कउनो बाज इ मारग लखत ह ।  
 ८ उ राहन पइ कउनो बड़का डीलडोल वाला पसु नाहीं चलेन,  
 कबहुँ सेर इ राहे पइ नाहीं विचरेन ।  
 ९ मजदूर सब स कटोर चट्टानन क खनत हीं

अउर उ पचे पहाड़न क ओकार जड़ स खनिके गिरा देत हीं ।

१० काम करइवालन चट्टानन स सुरंग काटत हीं उ पचन्क आँखन हुआँ खजानन क लखि लेत हीं ।

११ काम करइवालन बाँध बनवा करत हीं कि पानी ऊपर स होइके न बहइ ।

उ पचे छिपी भइ चिजियन क ऊपर प्रकास मँ लिआवत हीं ।

१२ “मुला कउनो मनई विवेक कहाँ पाइ सकत ह अउर हम कहाँ जाइ सकित ह समुझ पावइ क ?

१३ गियान कहाँ रहत ह लोग नाही जानत ही लोग जउन धरती पइ रहत हीं, ओमाँ इ नाही पाइ जात ह ।

१४ सागरे क गहराइ बतावत ह, ‘मोह माँ गियान नाही ।’

अउर समुद्र कहत ह, ‘हिआँ मोहमाँ गियान नाही अहइ ।’

१५ गियान क बहोत कीमती सोना भी मोल नाही लइ सकत ह,

गियान क दाम चाँदी स नाही गना जाइ सकत ह ।

१६ गियान ओपरी देस क सोना स या कीमती सुलैमानी पाथर या नीलमणियन स नाही बेसहा जाइ सकत ह ।

१७ गियान सोना अउ स्फटिक ल जियादा कीमती बाटइ,

कउनो मनई बहोत कीमती सोना स जड़े भए रलन स गियान नाही बेसहि सकत ह ।

१८ गियान मूँगा अउ सूर्यकान्त मणि स जियादा कीमती बा ।

गियान क कनोउ मनई सिद्ध सोने मँ जुरे कीमती रतन स नाही बेसहा सकत ह ।

१९ जेतना उत्तम गियान अहइ कूस देस क पद्मराग भी ओतना उत्तम नाही अहइ ।

गियान क तू चोख सोना स मोल नाही लइ सकत्या ।

२० “तउ फुन हम कहाँ गियान क पावइ जाइ ?

हम कहाँ समुझ सीखइ जाइ ?

२१ गियान धरती क हर मनई स लुका भवा अहइ । हिआँ तलक कि ऊँच अकास क पंछी भी गियान क नाही लखि पावत हीं ।

२२ मउत अउ विनास कहा करत हीं, हम तउ बस

गियान क बातन सुनी ह ।’

२३ “मुला बस परमेस्सर गियान तलक पहोंचइ क राहे क जानत ह ।

परमेस्सर जानत ह गियान कहाँ रहत ह ।

२४ परमेस्सर गियान क जानत ह काहेकि उ धरती क अखिरी छोर तलक लखा करत ह ।

परमेस्सर उ हर वस्तु क जउन अकास क खाले अहइ लखा करत ह ।

२५ जब परमेस्सर हवा क ओकर सकती दइ दिहस अउर इ निहचित किहस कि समुद्रन क केतना बड़का बनावइ क अहइ ।

२६ अउर जब परमेस्सर निहचय किहस कि ओका कहाँ स बर्खा पठवइ क अहइ, अउर बउड़न क कहाँ तलक जात्रा करइ क अहइ ।

२७ तब परमेस्सर गियान क लखे रहा । उ ओका मापेस, ओका साबित किहस अउर इका परखेस ।

२८ अउर लोगन स परमेस्सर कहे रहा कि ‘यहोवा क भय माना अउर ओका आदर दया ।

बुराइयन स मुहँ मोड़ि लेब ही गियान अहइ, इहइ समझदारी अहइ ।”

अय्यूब आपन बात जारी रखत ह

२९ ? आपन बात क जारी रखत भए अय्यूब कहेस ।

२ “मोर जिन्नगी वइसे ही होइ चाही रही जइसे गुजरे महीने मँ रही ।

जब परमेस्सर मोर रखवारी करत रहा, अउर मोर धियान रखत रहा

३ मइँ अइसे उ समइ क इच्छा करत हउँ जब परमेस्सर क प्रकास मोरे मूँडे चमचमात रहा ।

मोका प्रकास देखाँवइ क उ समइ जब मइँ अँधियारा स होइके चलत रहेउँ ।

४ अइसे ओन दिनन क इच्छा करत हउँ, जब मोर जिन्नगी सफल रही, अउर परमेस्सर मोरे निचके मीत रहा ।

उ सबइ अइसेन दिन रहेन जब परमेस्सर मोरे घरे क असीसे रहा ।

५ अइसे समइ क मइँ इच्छा करत हउँ, जब सर्वसक्तीसाली परमेस्सर अबहुँ तलक मोर संग मँ रहा

अउर मोरे संग मोरे गदेलन रहेन ।

६ अइसा लगा करत रहा कि दूध-दही क नदियन बहा करत रहिन,

अउर मोरे बरे चट्टानन जड़तून क तेल क नदियन उडेरत रहिन ।

७ “इ सबइ ओ दिन रहेन जब मइँ नगर क दुआर अउर गलीयन क चौराहन पइ जात रहेउँ,

अउर नगर नेता लोगन क संग बइठत रहेउँ ।  
 ५ हुवाँ सबइ लोग मोर सन्मान किहा करत रहेन ।  
 जवान मनसेधू जब मोका लखत रहेन तउ मोरी  
 राह स हट जावा करत रहेम  
 अउर बुढ़वा मनसेधू मोरे बरे सन्मान देखाँवइ बरे  
 उठ खड़ा होत रहेन ।  
 १ जब लोगन क नेता लोग मोका लखि लेत रहेन,  
 तउ बोलब बंद कइ देत रहेन ।  
 १० हिआँ तलक कि बहोतइ महत्ववाले नेता भी  
 आपन स्वर हल्का कइ लेत रहेन, जब मइँ  
 ओनके नियरे जात रहेउँ ।  
 हाँ! अइसा लागत रहा कि ओनकर जिभियन  
 ओनकर तालु स चिपक गइ होइँ ।  
 ११ जउन कउनो भी मोका बोलत सुनेस, मोरे बारे  
 मँ नीक बात कहेस,  
 जउनो कउनो भी मोका लखे रहा, मोर बइकई किहे  
 रहा ।  
 १२ काहेकि जब कउनो दीन मदद बरे गोहँराएस,  
 मइँ मदद किहेउँ ।  
 उ गदेली क मइँ सहारा दिहेउँ जेकरे महतारी बाप  
 नाही अउर जेकर कउनो भी नाही धियान  
 रखइ क ।  
 १३ मोका मरत भए मनई क आसीस मिला,  
 मइँ ओन राँड मेहररुअन क जउन जरुरत मँ रहिन,  
 मइँ सहारा दिहेउँ अउर ओनका खुस किहेउँ ।  
 १४ मोर ओढ़ना पहिरब मोर खरी जिन्नगी रही,  
 निस्पच्छ होब मोर चोगा अउर मोर पगड़ी सी  
 रही ।  
 १५ मइँ आँधरन बरे आँकी बन गएउँ  
 अउर मइँ ओनकर गोइ बनेउँ जेनकर गोइ नाही  
 रहेन ।  
 १६ दीन लोगन बरे मइँ बाप तरह रहेउँ,  
 मइँ पच्छ लेत रहेउँ अहसे अनजानन क जउन  
 विपत्तियन मँ पड़ा रहेन ।  
 १७ मइँ दुस्ट लोगन क सक्ती नस्ट करत रहेउँ ।  
 निर्दोख लोगन क मइँ दुस्टन स अजाद करावत  
 रहेउँ ।  
 १८ "मइँ सोचत रहेउँ कि मइँ बहोत लम्बी जिन्नगी  
 ##जिअब  
 अउर फुन आपन ही घरे मँ प्राण तजब ।  
 १९ मइँ एक टु अइसा बुच्छ बनब जेकर जइन सदा  
 जल मँ रहत होइँ  
 अउर जेकर डारन सदा ओस स भीजी रहत होइँ ।

२० मोर सान सदा ही नई बनी रही,  
 मइँ सदा ही वइसा बलवान रहब जइसे मोरे हाथे  
 मँ एक नवा धनुष ।  
 २१ "पहिले, लोग मोर बात सुनत रहत रहेन,  
 अउर उ सबइ जब मोर सलाह मसवरा क ईतजार  
 करत रहेन, तउ चुप रहा करत रहेन ।  
 २२ मोर चुकइ पाछे, ओन लोगन क लगे जउन मोर  
 बात सुनत रहेन, कछू भी बोलइ क नाही  
 होत रहा ।  
 मोर सब्द धीरे-धीरे ओनकर काने मँ बर्खा क तरह  
 पड़ जात रहेन ।  
 २३ लोग जइसे बर्खा क बाट जोहत हीं वइसे ही उ  
 पचे मोर बोलइ क बाट जोहा करत रहेन ।  
 मोर सब्दन क उ पचे पी जावा करत रहेन, जइसे  
 मोर सब्द बसन्त मँ बरसा होइ ।  
 २४ जब मइँ दया करइ क ओन पइ मुस्कात रहेउँ,  
 तउ ओनका पहिले पहल ए पइ बिस्सास  
 नाही होत रहा ।  
 फुन मोर खुस मुँह दुखी जन क सुख देत रहा ।  
 २५ मइँ जिम्मेदारी बिहेउँ अउर लोगन बरे पइसला  
 किहेउँ, मइँ नेता बन गएउँ ।  
 मइँ ओनकर सोना क दलन क बीच राजा जइसा  
 जिन्नगी जिएउँ ।  
 मइँ अइसा मनई रहेउँ जउन लोगन क चइत देत  
 रहा जउन बहोत ही दुःखी बाटइ ।  
 ३० ? "अब, उमर मँ छोटा लोग मोर मसखरी  
 करत हीं ।  
 ओन जवान मनसेधुअन क बाप बिल्कुल ही  
 निकम्मा रहेन ।  
 ओन कूकरन जउन मोर भेड़िन क रखवारा करत ह  
 ओन लोगन स बेहतर अहइँ ।  
 २ ओन जवान मनसेधुअन क बाप मोका मदद देइ  
 क कउनो सक्ती नाही राखत हीं,  
 उ पचे बुढ़वा होइ चुका अहइँ अउ थका भवा  
 अहइँ ।  
 ३ उ सबइ मनई भूख स मरत अहइँ  
 यह बरे उ पचे झुरान अउर उजाइ धरती खावत  
 ह ।  
 ४ उ सबइ मनई रेगिस्तान मँ खारे पउधन क  
 उखाइत हीं  
 अउर उ पचे झाड़ीदार वृच्छन क जइन क खात  
 हीं  
 ५ उ पचन्क दूसर लोगन स भगाइ दइ गएन ।

##२९ :१८ लम्बी जिन्नगी सम्भवतः ओतना ही लम्बी जिन्नगी जेतना कि एक टू अमर पंछी जिअत ह ।

उ पचे ओन लोगन पइ अइसे गोहरावत हीं जइसे  
लोग चोर पइ गोहरावत हीं ।  
६ अइसे उ सबई बुद्धवा लोग झुरान भइ नदी क  
तलन मँ चट्टानन क सहारे  
अउ धरती बिलन मँ रहइ क मजबूर अहइँ ।  
७ उ पचे झाड़ियन क बीच गुरांत हीं ।  
कँटहरी वृच्छन क नीचे उ पचे आपुस मँ बटुर जात  
हीं ।  
८ ओन पचन्क फसादी लोगन क दल अहइ,  
जेनकर नाउँ तलक नाहीं अहइ ।  
ओनका आपन भुइया तजि देह क मजबूर कीन्ह  
गवा अहइ ।  
९ “अब अइसे ओन लोगन क पूत मोर हँसी  
उड़ावइ क मोरे बारे मँ गीत गावत हीं ।  
मोर नाउँ ओनके बारे अपसब्द जइसा बन गवा  
अहइ ।  
१० उ सबइ नउजवान मोहसे घिना करत हीं ।  
उ पचे मोसे दूर खड़ा रहत हीं ।  
हिआँ तलक कि उ पचे मोरे मुँहे पइ थूकत हीं ।  
११ परमेस्सर मोरे धनुष स ओकर डोर छोर लिहस  
ह अउर मोका दुर्बल किहस ह ।  
उ पचे मोह पइ कोहान होत भए मोरे खिलाफ होइ  
जात ह ।  
१२ उ सबइ जवान मोर दाहिनी कइँती स मोह पइ  
प्रहार करत हीं ।  
उ पचे मोर गोड़न पइ हमला कइके मोका गिरावत  
ह  
अउर मोका चारिहुँ कइँती स घेर लेत ह ।  
१३ उ पचे नव जवान मोरी राह पइ निगरानी रखत  
हीं कि मइँ बचिके निकरिके पराइ न सकउँ ।  
उ पचे मोका नस्ट करइ मँ सफल होइ जात हीं ।  
ओनके खिलाफत मँ मोर मदद करइ क मोरे संग  
कउनो नाहीं अहइ ।  
१४ उ पचे मोह पइ अइसे वार करत हीं जइसे कि  
सहर क दिवार क दरार स होत ह ।  
उ पचे टुटे हुए हिस्से स अन्दर आवत हीं ।  
१५ मोका भय जकड़ लेत ह ।  
जइसे हवा चिजियन क उड़ाइ लइ जात ह, वइसेन  
ही उ पचे जवान मोरे इज्जत धुवस्त करइ देत  
हीं ।  
जइसे बादर अदृश्य हेइ जात ह, वइसे ही मोर  
सुरच्छा अदृश्य होइ जात ह ।  
१६ “जब मोर जिन्नगी बीतइ क अहइ अउर मइँ  
हाली ही मर जाब ।  
मोका, संकट क दिन दहबोच लिहे अहइँ ।  
१७ मोर सबइ हाड़न राति क दुख देत हीं,

पीरा मोका चबाव नाहीं छोड़त ह ।  
१८ मोरे कोट क गिरेबान क परमेस्सर बड़ी ताकत  
स धरत ह,  
उ मोरे लिवास क ताकत स पकड़ लेत ह ।  
१९ परमेस्सर मोका कीचं मँ बहाइ दिहस  
अउर मइँ माटी व राखी स बनत हउँ ।  
२० “हे परमेस्सर, मइँ सहारा पावइ क तोहका  
गोहरावत हउँ, मुला तू उत्तर नाहीं देत ह ।  
मइँ खड़ा होत हउँ अउ पराथना करत हउँ, मुला  
तू मोह पइ धियान नाहीं देत्या ।  
२१ हे परमेस्सर, तू मोर बारे निर्दयी होइ गवा अहा  
तू मोका नोस्कान पहोंचावइ क आपन सकती क  
प्रयोग करत अहा ।  
२२ हे परमेस्सर, तू मोका तेज आँधि स उड़ाइ देत  
ह ।  
तू मोका तूफाने क बीच मँ डाल देत ह ।  
२३ मइँ जानत हउँ तू मोका मोर मउत कइँती लइ  
जात अहा  
आखीर माँ हर कउनो क जाब अहइ ।  
२४ “मुला इ निहचय ह कि तू कउनो मनई जउन  
मदद बारे गोहरावत ह,  
ओन स नाहीं मुड़त ह ।  
२५ हे परमेस्सर, तू तउ जानत ह कि मइँ ओनके  
खातिर रोएँ जउन संकट मँ पड़ा अहइँ ।  
तू तउ इ जानत ह कि मोर मन गरीब लोगन बारे  
बहोत दुखी रहत रहा ।  
२६ मुला जब मइँ भला चाहत रहा, तउ बुरा होइ  
जात रहा ।  
मइँ प्रकास हेरत रहेँ अउर अँधियारा छाइ जात  
रहा ।  
२७ मइँ भितरे स फट गवा हउँ अउर इ अइसा  
अहइ कि संकट कबहुँ नाहीं थम जात ।  
अउर जियादा संकट आवइ क अहइ ।  
२८ मइँ सोक क ओढ़ना पहिनके माना बगइर सूरज  
की गर्मी स करिया होइ गना हूँ ।  
मइँ सभा क बीच मँ खड़ा होत हउँ, अउर मदद क  
गोहरावत हउँ ।  
२९ मइँ जंगली कूकुरन क भइया  
अउर सुतुरमूर्ग क मीत होइ गवा हउँ ।  
३० मोर चमड़ी करिया पड़ि गइ बाटइ ।  
मोर तन बुखारे स तपत बाटइ ।  
३१ मोर वीणा करुण गीत गावइ क सधी बाटइ  
अउर मोर बाँसुरी स दुःख क रोवइ जइसे स्वर  
निकरत हीं ।  
३१ “मइँ आपन अँखिन क संग एक समझौता  
किहेउ ह

कि उ सबइ कउनो लड़की क वासना क निगाह स न लखहीं।  
 २ सर्वसक्तीमान परमेस्सर लोगन क संग कइसा करत ह  
 उ कइसे आपन ऊँच सरगे क घरे से ओनकर करमन क प्रतिफल देत ह  
 ३ परमेस्सर दुस्ट लोगन बरे संकट अउ विनास पठवत ह,  
 अउर जउन बुरा करम करत हीं ओनके बरे बर्बादी पठवत ह।  
 ४ मई जउन भी करत हउँ परमेस्सर जानत ह।  
 अउर मोरे हर कदम क उ लखत ह।  
 ५ “अउर मई झूठी जिन्नगी जिया हउँ  
 या झूठ बोलिके लोगन क मुख बनाए हउँ।  
 ६ तउ उ मोका खरी तरजू स तौलेइ,  
 तब परमेस्सर जान लेइ कि मई निरपराध हउँ।  
 ७ अगर मई खरा रास्ता स हटा होउँ,  
 अगर मई आपन आप क बुरे लालसा मँ लइ गइ होइ  
 या अगर मई आपन हाथ क पवित्तर नाहीं राखत हईं।  
 ८ तउ मोर उपजाई भइ फसल दूसर लोग खाइ जाई  
 अउर मोर फसलन क उजारिके लइ जाई।  
 ९ “अगर मई मेहररुअन बरे कामुक रहा होउँ,  
 या अगर मई आपन पड़ोसी क दुआरे क ओकरी पत्नी क संग व्याभिचार करइ क बरे ताकत रहा होउँ,  
 १० तउ मोर पत्नी दूसर लोगन क भोजन बनावइ  
 अउर ओकरे संग दूसर लोग सोवई।  
 ११ काहेकि यौन पाप लज्जा स भरा होत ह ?  
 इ अइसा पाप अहइ जेका निहचय ही सजा पावइ चाही।  
 १२ व्याभिचार उ पाप क समान अहइ, जउन बारत अउ बर्बाद कइ ड़ावत ह।  
 मोरे लगे जउन कछू भी अहइ विभिचार क पाप ओका बारि ड़ाइ।  
 १३ “अगर मई आपन दास-दासियन क समन्वा उ समइ निस्पच्छ नहीं रहेउँ  
 जब ओनका मोसे कउनो सिकाइत रही।  
 १४ तउ जब मोका परमेस्सर क समन्वा जाइ क होइ, तउ मई का करब ?  
 जब उ मोका मोरे करमन क सफ़ाई माँगइ बोलइ तउ मई परमेस्सर क का जावाब देव ?  
 १५ परमेस्सर मोका अउर मोरे सेवकन क हमरी आपन-आपन महतारी क गर्भ मँ बनाएस ह।

१६ “मई कबहुँ भी दीन जन क मदद क मना नाहीं किहेउँ।  
 मई राँइ मेहररुअन क सहारे क बिना नाहीं रहइ दिहेउँ।  
 १७ मई स्वार्थी नाहीं रहेउँ।  
 मई आपन भोजन क संग अनाथ बच्चन क भूखा नाहीं रहइ दिहेउँ।  
 १८ मई अइसे गदेलन क जेनके बाप नाहीं अहईं,  
 मई बाप जइसा रहेउँ ह।  
 मई जिन्नगी भइ राँइ मेहररुअन क धियान रखेउँ ह।  
 १९ जब मई कउनो क एह बरे कस्ट भोगत भए पाएउँ ह कि ओकरे लगे ओढ़ना नाहीं अहइ,  
 या मई कउनो दीन क बगैर कोट क पाएउँ।  
 २० तउ मई सदा ओन लोगन क ओढ़ना देत रहेउँ,  
 मई ओनका गरम राखइ क मई खुद आपन भेड़िन क ऊन बइपरेउँ,  
 तउ उ पचे मोका समूचइ मने स असीसत रहेन।  
 २१ मई कउनो अनाथे क खिलाफ कबहुँ आपन हाथ नाहीं उठाएस  
 जब कबहुँ मई ओका सहर क फाटके पइ मदद माँगत भए निहारेउँ।  
 २२ अगर मइ अइसा किहेउँ तउ मोर काँधा आपन जगह स छूट कइ गिर जाइ  
 अउर मोर बाजू आपन जोड़ स अलग होइ जाइ।  
 २३ मुला मई तउ ओनमाँ स कउनो बुरा करम नाहीं किहेउँ।  
 मई परमेस्सर क दण्ड स ड़ेरात हउँ।  
 ओकरी तेजस्विता स ड़ेरात हउँ।  
 २४ “मई कबहुँ आपन धन दौलत क भरोसा नाहीं किहेउँ,  
 अउर मई कबहुँ नाहीं चोखा सोने स कहेउँ कि ‘तू मोर आसा अहा।  
 २५ मई धने स सम्पन्न रहेउँ।’  
 मुला मई ओसे घमण्डी नाहीं भएउँ।  
 मई खूबइ धन कमाएउँ।  
 मुला उहइ नाहीं जेहसे आनन्दित भएउँ।  
 २६ मई कबहुँ भी नाहीं चमकत सूरज क पूजा किहेउँ  
 या मई सुन्नर चाँद क पूजा नाहीं किहेउँ।  
 २७ मई कबहुँ भी आपन हाथ क चूम कइ सुकज अउर चाँद क पूजा करइ क मूरखता नाहीं किहा रहा।  
 २८ अगर मई एनमाँ स कछू किहेउँ तउ उ मोर पाप होइ अउ मोका सजा मिलइ।

अगर मई ओन बातन क पूजा किहे होतेउँ  
तउ सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क अबिस्सासी  
होइ जातेउँ।

२९ “जब मोर दुस्मन बर्बाद भएन  
तउ मई खुस नाही भएउँ।

जब मोर दुस्मनन क दुख-मुसीबत डाली गवा,  
तउ मई ओकर बरे खुस नाही भवा।

३० मई आपन मुहँ खोलिके आपन दुस्मनन क  
सरापत भए पाप नाही किहेउँ

अउ मई ओकरे मोत क इच्छा नाही कहेस।

३१ मोर घरे क सबहि लोग जानत हीं

कि मई सदा अजनबी लोगन क खइया क दिहेउँ।

३२ मई सदा अजनबी लोगन क घरे मँ बोलाएउँ,  
ताकि ओनका राति मँ गलियन मँ सोवइ क न  
पइइ।

३३ दूसर लोग आपन पापे क छूपावइ क जतन  
करत हीं,

मुला मई आपन दोख कबहुँ नाही छुपाएउँ।

३४ मई कबहुँ नाही डेराउँ कि लोग का कहत रहत  
हीं।

मई कबहुँ चुप नाही रहेउँ अउ मई आपन घर बाहेर  
जाइ बरे कबहुँ नाही डेराउँ।

३५ “कास ! कउनो होत जउन मोर सुनत।

मोका आपन बात अपनी कइती स समझावइ द्या।  
कास ! सक्तीसाली परमेस्सर मोका अउर कास उ  
ओनँ बातन क लिखत

जउन मई ओकरी निगाहे मँ गलत किहे रहेउँ।

३६ काहेकि फुरइ ही मई उ लिकावट आपन खुद क  
काँधे पइ धइ लेब

अउर मई ओका मुकुट क तरह मूँडे पइ धइ लेब।

३७ “अगर परमेस्सर किहेस तउ जउन कछू मई  
किहेउँ ह, मई ओका परमेस्सर क समुझाउब।

मई परमेस्सर क लगे आपन मूँड़ि उठाइके जाब,  
जइसे मई कउनो मुखिया होउँ।

३८ “मई आपन भुइया पइ कबहुँ वेगुनाह क खुन  
नाहीं बहाया हउँ

एह बरे मोर मिट्टी या मोर धरती क खिलाफ कबहुँ  
आवाज नाही उठाएस।

३९ मई हेमेसा मजदूरन क फसल काटइ बरे ओनकर  
मजूरी दिहेउँ।

मई कबहुँ भी ओकर मालिक स जबरदस्ती अनाज  
नाहीं लिहेउँ।

४० “हाँ ! एनमाँ स अगर कउनो भी बुरा काम मई  
किहे होउ,

तउ गोहूँ क जगह पइ काँटा अउर जौ क बजाय  
खर-पतवर खेतन मँ उगा जाइ।”

अय्यूब क सब्द खतम भएन।

एलीहू क वचन

३२ ? फुन अय्यूब क तीनउँ मीत अय्यूब क  
जवाब देइ क जतन करब तजि दिहेन।  
काहे कि उ अपने नजर मँ सच्चा रहेन।<sup>२</sup> हुआँ  
एलीहू नाउँ क एक मनई भी रहा। एलीहू बारकेल  
क पूत रहा। बारकेल बुज क निवासी रहा। एलीहू  
राम क परिवारे स रहा। एलीहू क अय्यूब पइ  
बहोत किरोध आवा काहेकि अय्यूब अपने आप  
क सही ठहराएस बजाए परमेस्सर क सही ठहरइ  
क।<sup>३</sup> एलीहू अय्यूब क तीनउँ मीतन स भी कोहान  
रहा काहेकि उ पचे तीनउँ ही अय्यूब क सवालन  
क जुक्ति संगत जवाब नाही दइ पाए रहेन अउर  
इ साबित नाही कइ सकन कि अय्यूब कसूरवार  
अहइ।<sup>४</sup> हुआँ जउन लोग रहेन ओनमाँ एलीहू  
सबसे लहुरा रहा। एह बरे उ तब तलक बाट जोहत  
रहा जब तलक हर कउनो आपन-आपन बात पूरी  
नाहीं कइ चुका।<sup>५</sup> एलीहू जब इ लखेस कि अय्यूब  
क तीनहुँ मीतन क लगे कहेइ क अउर कछू नाही  
अहइ तउ ओका बहोत किरोध आवा।<sup>६</sup> तउ बुज क  
निवासी बारकेल क पूत एलीहू आपन बात कहब  
सुरु किहस। उ बोला :

“मई लहुरा अहउँ अउर तू लोग मोहसे जेठ अहा,  
मई एह बरे तोहका उ बतावइ मँ डेरात रहेउँ जउन  
मई सोचत रहेउँ।

७ मई मन मँ सोचेउँ, ‘बड़के क पहले बोलइ चाही,  
अउर ओका बुद्धि सिखाइ चाही।’

८ मुला मनई मँ परमेस्सर क आतिमा बुद्धि देत ह  
अउर सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क जरिये दिया  
भवा साँस मनई क गियान देत ह।

९ उमर मँ जेठ मनई ही नाही गियानी होत हीं।

का बस बड़ी उमर क लोग ही इ जानत हीं कि  
उचित का अहइ ?

१० “एह बरे मई जउन कछू जानत हउँ तोहका  
कहत हउँ।

तू पचे मोर बात सुना मई तू पचन्क बताउब कि  
मई का सोचत हउँ।

११ जब तलक तू लोग बोलत रह्या, मई बाट जोहत  
रहा।

मई तोहार बुद्धि सुनइ चाही रहा।

मई खामूस रह्या जब तू पचे बोलइ बरे सोच बिचार  
किहस।

१२ मई तोहरे मर्म स भरे सब्दन क अय्यूब क उत्तर  
देइ खातिर धियान स सुनत रहेउँ।

मुला तीनउँ ही इ सिद्ध नाही कइ पाया कि अय्यूब बुरा अहइ।

तोहमाँ स कउनो भी अय्यूब क तर्कन क जवाब नाही दइ पावा।

१३ तू लोगन क इहइ नाही कहइ चाही कि तू पचे गियान क पाइ लिहा ह।

लोग नाही, परमेस्सर निहचय ह अय्यूब क तर्कन क जवाब देइ।

१४ मुला अय्यूब मोरे खिलाफत मँ नाही बोलत रहा,

एह बरे मइँ ओन तर्कन क प्रयोग नाही करब जेकर प्रयोग तू पचे तीनहुँ किहा ह।

१५ “अय्यूब, तोहरे तीनहुँ मीत असमंजस मँ पड़ा अहइँ,

ओनके लगे कछू भी अउर कहइ क नाही अहइ, ओनके लगे जवाब दइ बरे अउर कछू नाही अहइ

१६ इ सबइ तीनहुँ लोग हिआँ चुप खड़ा अहइँ अउर ओनके लगे जवाब नाही अहइ।

तउ का अबहिं भी मोका प्रतीच्छा करइ चाही ? १७ नाही ! मइँ भी आपन जवाब देब।

मइँ भी बताउब तू पचन्क कि मइँ का सोचत हउँ। १८ काहेकि मोरे लगे कहइ क बहोत अहइ।

मोरे भितरे जउन आतिमा अहइ, उ मोका बोलइ क मजबूर करत ह।

१९ मइँ आपन भितरे अइसी नई दाखरस सा हउँ, जउन हाली ही बाहेर उफनइ क अहइ।

मइँ उ नई दाखरस मसक जइसा हउँ जउन हाली ही फट जाइ क अहइ।

२० तउ निहचय ही मोका बोलइ चाही, तबहीं मोका नीक लागी।

आपन मुँह मोका खोलइ चाही अउर मोका अय्यूब क सिकाइतन क जवाब देइ चाही।

२१ इ बहस मँ मइँ कउनो क पच्छ नाही लेबइँ अउ अय्यूब क वइसे ही पच्छ लेबउँ जइसे दूसर क होइ चाहीं।

मइँ कउनो क खुसामद न करब।

२२ मइँ नाही जानत हउँ कि कइसे कउनो क खुसामद कीन्ह जात ह।

अगर मइँ कउनो क खुसामद करइ जानत तउ हाली ही परमेस्सर ओका सजा देत।

१ “मुला अय्यूब अब, मोर संदेस सुना।

३३ ओन बातन पइ धियान दया जेनका मइँ कहत हउँ।

२ मइँ आपन बात कहइ क तइयार हउँ। मइँ आपन सब्द चुनत हउँ।

३ मोर मन सच्चा अहइ तउ मइँ सच सब्द बोलब।

ओन बातन क बारे मँ जेनका मइँ जानत हउँ मइँ सच कहब।

४ परमेस्सर क आतिमा मोका बनाएस ह, मोका सर्वसक्तीसाली परमेस्सर स जिन्नगी मिलत ह।

५ अय्यूब, सुना अउ मोका जवाब द्या अगर तू सोचत ह कि तू दइ सकत ह।

आपन जवाबन क तइयार रखा ताकि तू मोहसे तर्क कइ सक्या।

६ परमेस्सर क समन्वा हम दुइनउँ एक जइसे अहइँ,

अउर हम दुइनउँ क ही उ माटी स बनाएस ह। ७ अय्यूब तू मोहसे जिन डेरा अ।

मइँ तोहरे संग कटोर न होब। ८ “मुला अय्यूब, मइँ सुनेउँ ह कि तू जउन कहा करत ह।

९ तू इ कहे रह्या, ‘मइँ अय्यूब, दोखी नाही हउँ, मइँ पाप नाही किहेउँ, या मइँ कछू भी अनुचित नाही करत हउँ।’

१० अगर मइँ कछू भी अनुचित नाही किहेउँ, तउ भी परमेस्सर कछू खोट मोहमाँ पाएस ह।

परमेस्सर सोचत ह कि मइँ अय्यूब, ओकर दुस्मन हउँ।

११ एह बरे परमेस्सर मोरे गोड़े मँ बेड़ी डावत ह, मइँ जउन कछू भी करत हउँ, उ लखत रहत ह ?”

१२ “मुला अय्यूब, मइँ तोहका निहचय क संग बतावत हउँ कि तू इ बारे मँ गैर मुनासिब अहा।

काहेकि परमेस्सर कउनो भी मनई स जियादा जानत ह।

१३ तू काहे सिकाइत करत अहा कि परमेस्सर तोहरे इलजाम जवाब नाही देत ह

१४ मुला परमेस्सर निहचय ही हर उ बात क जेका उ करत ह स्पस्ट कइ देत ह

परमेस्सर अलग-अलग रीति स बोलत ह मुला लोग ओका समुझ नाही पउतेन।

१५-१६ होइ सकत ह कि परमेस्सर सपन मँ लोगन क काने मँ बोलत होइ,

या कउनो दिव्यदर्शन मँ राति क जब उ पचे आपन बिसतरा पइ गहिर निदिया मँ होइँ।

जब परमेस्सर क चितउनियन सुनत ही तउ बहोतइ डर जात हीं।

१७ परमेस्सर मनइयन क बुरी बात करइ रोकइ क होसियार करत ह,

अउ ओनका अंहकारी बनवइ स रोकइ क।



१८ परमेस्वर मनइयन क मउत क देस मैं जाइ स बचावइ खातिर होसियार करत ह ।

परमेस्वर मनई क नास स बचावइ बरे अइसा करत ह ।

१९ “कउनो मनई परमेस्वर क वाणी तब सुन सकत ह जब उ बिस्तरे पइ ओलरा होइ अउर परमेस्वर क सजा स दुःख भोगत होइ ।

उ मनई एँतनी गहिर पीरा मैं होता ह, कि ओकर हाइन दुःखत ही ।

२० फुन अइसा मनई कछू खाइ नाही सकत, उ मनई क एँतनी जियादी पीरा होत ह कि ओका सबन ते बढ़िया खइया क नाही सोहात ।

२१ ओकरे देहे क छय तब तलक होत जात ह, जब तलक उ कंकाल मात्र नाही होइ जात, अउर ओकर सबइ हाइन नाही देखाँइ लग जातिन ।

२२ अइसा मनई मउत क देस क निअरे होत ह, अउर ओकर जिन्नगी मउत क निअरे होत ह ।

२३ मुला होइ सकत ह कि कउनो सरगदूत, हजारन सरगदूत मैं स एक होइ जउन ओकरे उत्तिम चरित्तर क गवाही देइ ।

२४ उ सरगदूत उ मनई पइ दयालु होइ, उ दूत परमेस्वर स कहीं :

‘महारबानी कइ कइ मनई क मउत क देस स बचा । एकर दाम चुकावइ क एक रस्ता मोका मिली गवा अहइ ।’

२५ फिन मनई क देह जवान अउ खूब मजबूत होइ जाइ ।

उ मनई वइसा ही होइ जाइ जइसा उ तब रहा, जब उ जवान रहा ।

२६ उ मनई परमेस्वर क स्तुति करी अउर परमेस्वर ओकरी स्तुति क जवाब देइ ।

फुन उ परमेस्वर क व्यक्तित्व मैं खुसी खुसी आइ जाब ।

अउर उ बहोत खुस होइ काहेकि परमेस्वर ओका ओकर ईमानदारी बरे बदला देही ।

२७ फिन उ मनई मनइयन क मन्वा स्वीकार करी । उ कही : ‘मई पाप किहे रहउँ, भले क बुरा मई किहे रहेउँ,

मुला मोका एहसे क मिला !

२८ परमेस्वर मउत क देस मैं गिरइ स मोर आतिमा क बचाएस ।

मई अउर जियादा जिअब अउर फुन स जिन्नगी क रस लेब ।’

२९-३० “परमेस्वर मनई क संग ओका मउत क देस मैं दाखिल होवइ स रोक कि अहसा बार-बार करत ह ।

अइसा मनई फिन जिन्नगी क रस लेत ह ।

३१ “अय्यूब, धियान द्या अउर मोर बात सुना ।

तू चुप रहा अउर मोका कहइ द्या ।

३२ अगर तोहार लगे कहइ बरे कछू अहइ

तउ ओका कहा

काहेकि मई तोहका निर्दोख लखइ चाहत हउँ ।

३३ अय्यूब, अगर तोहका कछू नाही कहइ क अहइ तउ तू मोर बात सुना ।

चुप रहा, मई तोहका बुध्दिमान बनवइ सिखाउबउँ ।”

**३४** १ फिन एलीहू बात क जारी रखत भए कहेस:

२ “अरे ओ गियानी मनइयो ।

तू पचे धियान स सुना जउन बातन मई कहत हउँ । अरे ओ चतुर लोगो, मोह पइ धियान दया ।

३ कान ओन सबन्क परखत ह जेनका उ सुनत ह, जइसेन जीभ जउने खइया क छुअति ह, ओकार सुआद पता करत ह ।

४ तउ आवा इ परिस्थिति क परखा अउर खुद फइसला करा कि उचित का बाटइ ।

हम संग संग सीखब कि का खरा बाटइ ।

५ अय्यूब कहेस: ‘मई निर्दोख हउँ,

मुला परमेस्वर मोरे बरे निस्पच्छ नाही अहइ ।

६ मई निरीह अहउँ मुला लोग सोचत हीं कि मई बुरा अहउँ ।

उ पचे सोचत हीं कि मई एक झूठा हउँ अउर चाहे मई निर्दोख भी होउँ फुन भी मोर धाव नाही भरि सकत ।’

७ “अय्यूब क नाई कउनो भी मनई नाही अहइ जेकर मुँह परमेस्वर क निन्दा स भरा रहत ह ।

अय्यूब बरे परमेस्वर क बेज्जती करइ मैं आसानी स पानी क पीवइ जइसा अहइ ।

८ अय्यूब बुरे लोगन क साथी अबइ

अउर अय्यूब क बुरे लोगन क संगत भावत ह ।

९ काहेकि अय्यूब कहत ह,

‘अगर कउनो मनई परमेस्वर क हुकुम मानई क जतन करत ह तउ एहसे उ मनई क कछू भी भला न होइ ।’

१० “अरे ओ लोगो जउन समुझ सकत हवा, तउ मोर बात सुना,

परमेस्वर कबहुँ भी बुरा नाही करत ह ।

सर्वसक्तीमान परमेस्वर कबहुँ भी बुरा नाही करी ।

११ परमेस्वर मनई क ओकर कीन्ह करमन क फल देइ ।

उ मनइयन क जउन मिलइ चाही, देइ ।

१२ उ फुरइ अहइ परमेस्वर कबहुँ बुरा कारज नाही करत ह ।

सर्वसक्तीसाली परमेस्वर सदा निस्पच्छ रही ।

१३ कउनो इनसान ओका धरती क प्रभारी नाही बनाएस ।

कउनो भी मनई ओका इ सचमुच जगत क जिम्मेदारी नाही दिहस ।

१४ अगर परमेस्वर ठान लेत

तउ उ लोगन स जिन्नगी क साँस लइ लेत ह ।

१५ तउ धरती क सबहिं मनई मर जातेन,

फिन सबहिं लोग माटी बन जातेन ।

१६ “अगर तू पचे विवेकी अहा

तउ तू पचे ओका सुनब्या जेका मई कहत हउँ ।

१७ अइसा कउनो मनई जउन निआउ स घिना राखत ह

सासक नाही बन सकत ह ।

अय्यूब, का तू सोचत अहा कि तू परमेस्वर क दोखी साबित कइ सकत अहइ ?

१८ सिरिफ परमेस्वर अइसा अहइ जउन राजा लोगन स कहत रहत ह कि ‘तू पचे बेकार अहइ ।’

परमेस्वर नेता लोगन स कहत रहत ह कि ‘तू पचे दुस्ट अहा ।’

१९ परमेस्वर प्रमुखन स दूसर मनइयन क अपेच्छा अधिक पिरम नाही करत,

अउर परमेस्वर धन्नासेठन क अपेच्छा गरीबन स जियादा पिरम नाही करत ह ।

काहेकि सबहिं क परमेस्वर रचेस ह ।

२० होइ सकत ह रात मँ अचानक कउनो मनई मरि जाइ ।

परमेस्वर बहोत जल्दी ही लोगन क रोगी करत ह अउर उ पचे प्राण तउ देत हीं ।

परमेस्वर बगइर कउनो जतन क सक्तीसाली लोगन क उठाइ लइ जात ह ।

२१ “मनई जउन करत ह परमेस्वर ओका देखत ह । मनई जउन भी चरण उठावत ह परमेस्वर ओका जानत ह ।

२२ कउनो जगहिया अइसी अँधियारा नाही अहइ, चाहे उ जगह कइसा भी अँधियारा होइ,

जेह मँ कि कउनो भी दुस्ट मनई अपने क परमेस्वर स छुपाइ पावइस ।

२३ कउनो मनई बरे इ उचित नाही

कि उ परमेस्वर स निआउ क अदालत मँ मिलइ क समइ निहचित करइ ।

२४ परमेस्वर क प्रस्नन क पूछइ क जरूरत नाही, मुला परमेस्वर बरिआरन क नस्ट करी

अउर ओनकर जगह पइ

कउनो अउर क बइटाई ।

२५ तउ परमेस्वर जानत ह कि लोग का कर हीं ।

एह बरे परमेस्वर राति मँ दुस्टन क हराई, अउर ओनका नस्ट कइ देइ ।

२६ परमेस्वर बुरे लोगन क ओनके बुरे करमन क कारण नस्ट कइ देइ

अउर बुरे मनई क सजा क सब लखइ देइ ।

२७ काहेकि बुरे लोग परमेस्वर क आगया मनाइ क तजि दिहेन

अउर उ पचे बुरे लोग परवाह नाही करत हीं ओन कामन क करइ क जेनका परमेस्वर चाहत ह ।

२८ ओन बुरे लोग गरीबन क दुःख दिहन अउर ओनका मजबूर किहन परमेस्वर क मदद बरे

गोहरावइ क ।

गरीब मदद बरे गोहरावत ह, तउ परमेस्वर ओकर सुनत ह ।

२९ जब परमेस्वर खामोस रही क फइसला करत ह तउ कउनो मनई परमेस्वर क दोखी नाही ठहराइ

सकत ह ।

अगर परमेस्वर आपना मुख छिपा लेत ह

तउ कउनो भी रास्ट्र या कउनो मनई ओका नाही पाइ सकत ह ।

३० तउ फुन एक ठु अइसा मनई अहइ जउन परमेस्वर क खिलाफ अहइ अउर लोगन पइ

जुलम करत ह ।

तउ परमेस्वर ओका राजा बनइ नाही गइ सकत ह ।

३१ “होइ सकत ह कि कउनो परमेस्वर स कहइ,

‘मई अपराधी हउँ अउर फुन मई पाप नाही करब ।

३२ हे परमेस्वर, तू मोका उ सबइ बातन सिखावा जउन मई नाही जानत हउँ ।

अगर मई कछू बुरा किहेउँ तउ फुन, मई ओका नाही करबउँ ।’

३३ मुला अय्यूब, जब तू बदलइ क मना करत अहा, तउ क परमेस्वर तोहका वइसा प्रतिफल देइ,

जइसा तू चाहत अहा ?

इ तोहार फइसला अहइ इ मोर नाही अहइ ।

तू ही बतावा कि तू का सोचत अहा ?

३४ कउनो भी मनई जेहमाँ विवेक अहइ अउर जउन समझत ह उ मोरे संग सहमत होइ ।

कउनो भी विवेकवाला मनई जउन मोर सुनत, उ कही,

३५ 'अय्यूब, अबोध मनई क जइसी बातन करत अहा,

जउन बातन अय्यूब करत ह ओनमाँ कउनो सच्चाइ नाही ।'

३६ मोर इ इच्छा अहइ कि अय्यूब क परखइ क अउर भी जियादा कस्ट दीन्ह जाई ।

काहेकि अय्यूब हमका अइसा जवाब देत ह, जइसा कउनो दुस्ट मनई जवाब देत होइ ।

३७ अय्यूब पाप पइ किए जात ह अउर ओह पइ उ बगावत किहेस ।

तोहरे ही समन्वा उ परमेस्सर क खिलाफ बहोत सारे इलाजाम लगावत रहत ह ।"

**३५** १ एलीहू कहत चला गवा । उ बोल ।  
२ "मई अय्यूब, इ तोहरे बरे कहब उचित नाही कि

'मई अय्यूब, परमेस्सर क खिलाफ निआउ पइ हउँ ।'

३ अय्यूब, तू परमेस्सर स पूछत अहा, मनई परमेस्सर क खुस कइके का पाई ?

अगर मई पाप न करउँ तउ मोका का फायदा होइ ?

४ "अय्यूब, मई तोहका अउ तोहरे मीतन क जउन हिआँ तोहरे संग अहइँ जवाब देइ चाहत हउँ ।

५ अय्यूब ! ऊपर लख अकासे मँ निगाह उठाइके कि बादर तोहसे जियादा ऊँचा अहइँ ।

६ अय्यूब, अगर तू पाप करा तउ परमेस्सर क कछू नाही बिगड़त,

अउर अगर तोहार पाप बहोत होइ जाई तउ ओहसे परमेस्सर क कछू नाही बिगड़त ।

७ अय्यूब, अगर तू भला अहा तउ एहसे परमेस्सर क भला नाही होत,

तोहसे परमेस्सर क कछू नाही मिलत ।

८ अय्यूब, तोहार पाप खुद तोहरे जइसे मनई क नोस्कान पहुँचावत हीं,

तोहार नीक करम बस तोहरे जइसे मनई क हीं भला करत हीं ।

९ "अगर बुरे मनइयन क संग अनिआउ होत ह अउर बुरा बेउहार कीन्ह जात ह, तउ उ पचे मदद क पुकारत हीं,

उ पचे बड़के बड़के बरिआर क मदद पावइ क दोहाइ देत हीं ।

१० मुला बुरे मनइयन परमेस्सर स मदद नाही माँगतेन ।

उ पचे नाही कहत हीं, 'परमेस्सर जउन हमका रचेस ह उ कहाँ बा ?

परमेस्सर हम लोगन क रात मँ गावइ बरे गीत देत ह ।

११ उ बुरे मनइयन इ नाही कहा करतेन कि, परमेस्सर जउन गोरु

अउ चिरइयन स जियादा बुध्दिमान मनई क बनाएस ह उ कहाँ बा ?

१२ "अगर बुरे लोग परमेस्सर क मदद पावइ क दुहाइ देत हीं तउ परमेस्सर ओनका जवाब नाही देत ह ।

काहेकि उ पचे बहोत घमंडी अउर बुरा होत हीं ।

१३ इ सच अहइ कि परमेस्सर ओनकर बेकार क दुहाइ क नाही सुनी ।

सर्वसक्तीमान परमेस्सर ओनँ पइ धियान नाही देत ।

१४ अय्यूब, इहइ तरह जब तू परमेस्सर क समन्वा आपन मामला पइ

बहस कइ बरे इन्तजार करत ह,

अउर अगर तू सिकायत करत ह कि उ तोहरे समन्वा परकट नाही होइही,

तउ परमेस्सर तोहका जवाब नाही देब्या ।

१५ "अय्यूब, तू सोचत अहा कि परमेस्सर दुस्टन क सजा नाही देत ह

अउर परमेस्सर पाप पइ धियान नाही देत ह ।

१६ एह बरे अय्यूब आपन बेकार क बातन करत रहत ह ।

अय्यूब बहोत बोलतह मुला उ नाही जानत कि उ का कहत रहत ह ।"

**३६** १ एलीहू बात जारी राखत भए कहेस ।

२ "अय्यूब, मोरे संग तनिक देर अउर धीरा धरा ।

मई तोहका देखाँउब कि परमेस्सर क पच्छ मँ अबहिँ कहइ क अउर अहइ ।

३ मई आपन गियान क सब स बाँटव ।

मोका परमेस्सर रचेस ह ।

मई जउन कछू भी जानत हउँ मई ओकर प्रयोग तोहका इ देखाँवइ बरे करब कि परमेस्सर निस्पच्छ अहइ ।

४ अय्यूब, मई तोहका फुरइ कहत हउँ कि मई झूट नाही कहत हउँ ।

मई जानत कि मई का बात करत हउँ ।

५ "परमेस्सर महान अहइ मुला उ आम लोगन क तुच्छ नाही समुझत ह ।

परमेस्सर बहोत सामर्थी बाटइ अउ विवेक स पूर्ण बाटइ ।

६ परमेस्सर दुट्ट लोगन क जिअइ नाही देइ  
अउर परमेस्सर हमेसा गरीब लोगन क संग खरा  
बेउहार करत ह ।  
७ उ सबइ लोग जउन मुनासिब बेउहार करत हीं,  
परमेस्सर ओनकर धियान राखत ह ।  
उ राजा लोगन क संग ओनका सिंहासन देत ह  
अउर उ पचे सदा आदर पावत हीं ।  
८ मुला अगर लोग सजा पावत होई अउर अउर  
बेडियन मँ जकरि गवा होई ।  
अगर उ पचे पीरा भोगत रहत होई अउर संकटे मँ  
होई ।  
९ तउ परमेस्सर ओनका बताई कि उ पचे कउन सा  
बुरा करम किहेन ह ।  
परमेस्सर ओनका बताई कि उ पचे पाप किहेन ह  
अउर उ पचे अहंकारी रहेन ।  
१० परमेस्सर ओनका ओकर चिताउनी सुनइ क  
मजबूर करी ।  
उ ओनका पाप करइ स रोकइ खातिर आदेस देइ ।  
११ जदि लाग परमेस्सर क सुनिहीं अउर ओकर  
अनुसरण करिहीं  
तउ परमेस्सर ओनका खुसहाल दिन आनन्दित  
बरिस देब्या ।  
१२ मुला अगर उ पचे परमेस्सर क आग्या क  
नकारिहीं  
तउ उ पचे बिना जाने ही मउत क दुनिया मँ चला  
जइहीं ।  
१३ “अइसे लोग जेनका परमेस्सर क परवाह नाही  
अहइ उ पचे सदा कडुवाहट स भरा रहत हीं ।  
हिआँ तलक कि जब परमेस्सर ओनका सजा देत  
ह, उ पचे परमेस्सर स सहारा पावइ क विनती  
नाहीं करतेन ।  
१४ अइसे लोग जवान होत ही मरि जइहीं ।  
उ पचे भ्रस्ट लोगन क संग सर्मा स मरिहीं ।  
१५ मुला परमेस्सर दुखिन लोगन क बचाब ।  
परमेस्सर लोगन क जगावइ बरे विपत्ति पठवत ह  
ताकि लोग ओकर सुनइ ।  
१६ “सचमुच मँ परमेस्सर तोहार दुख-मुसीबत मँ  
तोहार मदद करइ चाहत ह ।  
उ तोहार बोझन क दुर करइ चाहत ह जउन  
तोहका कुचरत ह ।  
उ तोहार मेजे पइ भरपूर खइया रखइ चाहत ह ।  
१७ किन्तु तू दोख, निर्णय अउर निआव क बातन स  
भरा भवा अहा !  
१८ अय्यूब, तू आपन किरोध क परमेस्सर बरे संका  
क कारण जिन बना द्या ।

मुक्ति क बड़ा मूल्य तोहका राह स दुर भटकावइ  
क कारण जिन बना दया ।  
१९ तू इ जान ल्या कि न तउ जब तोहार समूचा धन  
अउर न ही तोहार सकती तोहार मदद कइ सकत  
ह ।  
२० तू राति क अवाई क इच्छा जिन करा ।  
जब लोग आपन टउरन स गाइब हो जात ह ।  
२१ अय्यूब बुरा करम करइ स तू होसियार रहा ।  
तोह पइ मुसीबतन पठइ गइ अहई ताकि तू पापे  
क ग्रहण न करा ।  
२२ “लखा, परमेस्सर क सकती ओका महान  
बनावत ह ।  
परमेस्सर सबहिँ स महानतम सिच्छक अबइ ।  
२३ कउनो भी मनई परमेस्सर स नाही कह सकत ह  
कि का करब ।  
कउनो भी परमेस्सर स नाही कहिँ सकत,  
‘परमेस्सर तू बुरा किहा ह ।’  
२४ परमेस्सर क कर्मन क बड़कइ करब तू जिन  
बिसरा ।  
लोग गीत गाइके परमेस्सर क सबइ काम क  
बड़कइ किहेन ह ।  
२५ परमेस्सर क करम क हर कउनो मनई लखि  
सकत ह ।  
दूर देसन क लोग ओन कर्मन क लखि सकत हीं ।  
२६ इ फुरइ अहइ कि परमेस्सर महान अहइ ।  
ओकरी महिमा क हम नाही समुझ सकित ह ।  
परमेस्सर क उमर क बरिसन क गनती क कउनो  
गन नाही सकत ।  
२७ “परमेस्सर पानी क धरती स ऊपर उठावत ह  
अउर ओका बर्खा अउ कुहरा क रूप मँ बदल देत  
ह ।  
२८ परमेस्सर बादरन स लोगन पइ  
भरपूर पानी बरसावत ह ।  
२९ का कउनो मनइ इ ब्यान कइ सकत ह कि  
परमेस्सर कइसे बादरन क फैलावत ह,  
या ओकर घर, आकास मँ बिजुरि क गरज क समझ  
सकत ह  
३० लखा, परमेस्सर कइसे आपन बिजुरि क अकासे  
मँ चारिहुँ कइती बिखेरत ह  
अउर कइसे समुझदार क गहिरे हींसा क ढाँपि लेत  
ह ।  
३१ परमेस्सर रास्ट्रन क नियंत्रण मँ रखइ  
अउर ओनका भरपूर भोजन देइ बरे बादरन क  
उपयोग करत ह ।  
३२ परमेस्सर आपन हाथे स बिजरी क पकरि लेत ह

अउर जहाँ, उ चाहत ह. हुआँ बिजुरि क गिरइ क हुकुम देत ह।

३३ गर्जन लोगन क तूफाने क अवाइ क चिताउनी देत ह।

इ गर्जन दिखावत ह कि इ दुस्तता क खिलाफ किरोध मैं अहइ।

३४ "हे अय्यूब, जब एँन बातन क बारे मैं मई सोचत हउँ,

मोर हिरदइ बड़े जोर स धक धक करत ह।

३५ हर कउनो सुनइ, परमेस्सर क वाणी बादर क गर्जन जइसी सुनाई देत ह।

अनका गरजत भी ध्वनि क जउन परमेस्सर क मुँहे स आवति अहइ।

३६ परमेस्सर आपन बिजुरी क सारे अकासे स होइके चमकइ क पठवत ह।

उ सारी धरती क ऊपर चमका करत ह।

३७ बिजुरी क कौधइ क पाछे परमेस्सर क गर्जन भरी वाणी क सुना जाइ सकत ह।

जब परमेस्सर आपन अदभुत वाणी क संग गरजत ह।

तब परमेस्सर क वाणी गरजत ह तउ बिजुरी कौधत ह तब।

३८ परमेस्सर क गरजत भइ वाणी अदभुत अहइ।

उ अइसे बड़े करम करत ह, जेनका हम समुझ नाही पावत अही।

३९ परमेस्सर बर्फ स हुकुम देत ह,

'तू धरती पइ गिरा'

अउर परमेस्सर बर्षा स कहत ह

'तू धरती पइ जोर स बरसा।'

४० परमेस्सर अइसा एह बरे कहत ह कि सबहिं मनई जेनका उ बनाएस ह जान लेइ कि उ का कइ सकत ह।

उ ओकर प्रमाण अहइ।

४१ पसु आपन खोहन मैं पराइ जात हीं, अउर हुआँ ठहरा रहत हीं।

४२ ओनका कमरन स आँधी आवत हीं,

अउ हवा सर्दि मौसम लियावत ह।

४३ परमेस्सर क साँस बर्फ बनवत ह,

अउर समुदरन क जमाइ देत ह।

४४ परमेस्सर बादरन क जल स भरा करत ह,

अउ बिजुरी क बादर क जरिये बिखेर देत ह।

४५ परमेस्सर बादरन क चारिहूँ कइँती मोड़ देत ह

ताकि उ पचे उहइ कइ सकइ जेका उ ओनका करइ क हुकुम दिहेस ह उ पचे पूरी धरती पइ छाड़ जात ह।

४६ परमेस्सर लोगन क सजा देइ बरे कबहुँ बाढ़ लिआवत ह।

कबहुँ आपन सहानुभूती देखावइ बरे बादरन क पठवत ह अउर धरती पइ पानी बरसावत ह।

४७ "अय्यूब, तू छिन बरे रुका अउ सुना।

रुक जा अउ सोचा ओन अदभुत कारणन क बारे मैं जेनका परमेस्सर किया करत ह।

४८ अय्यूब, का तू जानत अहा कि परमेस्सर बादरन पइ कइसे काबू राखत ह?

का तू जानत ह कि परमेस्सर आपन बिजुरी क काहे चमकावत ह?

४९ का तू जानत ह कि आकास मैं बादर कइसे लटका रहत हीं?

इ सबइ बादरन एक ठु उदाहरण अहइ।

परमेस्सर क गियान संपूर्ण अहइ अउर इ सबइ बादर परमेस्सर क अदभुत कारज अहइ।

५० मुला अय्यूब, तू इ सबइ बातन क नाही जानत ह।

तू बस एँतना जानत अहा कि तोहका पसीना आवत ह अउर तोहार ओढ़ना तोहसे चिपका रहत हीं

जब सब कछू आराम करत रहत होत ह अउर दक्खिन स गरम हवा बहत ह।

५१ अय्यूब, का तू परमेस्सर क मदद आकास मण्डल क तानइ मैं

अउर ओका झलकत भए दर्पण क नाई चमकावइ मैं कइ सकत अहा?

५२ "अय्यूब, हमका बतावा कि हम परमेस्सर स का कहीं?

हम ओसे कछू भी कहइ क सोच नाही पाइत काहेकि हम पर्याप्त कछू भी नाही जानित।

५३ का परमेस्सर क बतावा जाइ कि मई ओकरे खिलाफ बोलइ चाहत हउँ।

इ वइसे ही होइ जइसे आपन विनास माँगबा।

५४ लखा, कउनो भी मनई चमकत भए सूरज क नाही लख सकत ह।

जब हवा बादरन क उड़ाइ देत ह ओकरे पाछे उ बहोतइ उज्जवर अउ चमचमात भवा होत ह।

५५ अउ परमेस्सर भी ओकरे समान अबइ।

परमेस्सर क सुनहरी महिमा चमकत ह।

परमेस्सर अदभुत महिमा क संग उत्तर कइँती स आवत ह।

५६ सर्वसक्तीमान परमेस्सर सचमुच महान अहइ, हम परमेस्सर क नाही जान सकित।

परमेस्सर सदा ही लोगन क संग निआउ, अउ निस्पच्छ होइके बेउहार करत ह।

उ कउनो लोग क संग ना इनसाफी क संग पीड़ा  
नाहीं देत ह ।

२५ एह बरे लोग परमेस्सर क आदर करत हीं,  
मुला परमेस्सर ओन अभिमानी लोगन क आदर  
नाहीं देत ह जउन खुद क बुद्धिमान समुझत  
हीं ।”

परमेस्सर अय्यूब स बोलत ह

३८ १ फिन यहोवा बौडर मँ स अय्यूब क  
जवाब दिहस । परमेस्सर कहेस ।

२ “इ कउन मनई अहइ  
जउन मूर्खता स भरी भइ बातन करत अहइ ?”

३ अय्यूब, तू मनई क तरह सुदृढ़ बना ।  
जउन सवाल मइँ पूछउँ ओकर जवाब देइ क  
तइयार होइ जा ।

४ “अय्यूब, बतावा तू कहाँ रह्या, जब मइँ भुइँया  
क रचना किहे रहेउँ ?

अगर तू एँतना समुझदार अहा तउ मोका जवाब  
दया ।

५ अय्यूब, अगर तू एँतना हाज़िर जवाब अहा तउ  
मोका बता कि इ संसारे क विस्तार कउन तय  
किहेस ?

कउन इ संसार क नापइ वाला सूत स नापेस ?

६ इ धरती क नीव काहे पइ धरी गइ अहइ ?  
कउन धरती क नीव क रूप मँ सवन त जियादा  
महत्व क पाथर क धरेस ह

७ जब परमेस्सर अइसा करत रहेन तउ भोर क  
तारन एक संग खुस होइके गाना गाएन ।

अउर सरगदूतन खुस होअके चिल्ला उटेन ।

८ “अय्यूब, जब सागर धरती क गरम स फूट बहत  
निकरा,

तउ कउन ओका रोकइ बरे दुआर क बँद किहे रहा ।

९ उ समइ मइँ बादरन स समुदर क ढाँपि दिहेउँ  
अउ अधियारा मँ सागर क लपेट दिहे रहेउँ (जइसे  
गदेली क चादर मँ लपेटा जात ह ।)

१० सागर क चउहद्दी मइँ निहचित किहे रहेउँ  
अउर ओहमाँ ताला डाइके दुआरन क पाछे रख  
दिहे रहेउँ ।

११ मइँ समुदरे स कहेउँ, ‘तू हिआँ तलक आइ  
सकत ह मुला अउर जियादा आगो नाही ।  
तोहार घमण्डी लहरन हिआँ पइ रुकि जइहीं ।’

१२ “अय्यूब, का तू कबहुँ आपन जिन्नगी मँ भोर क  
हुकुम दिहा ह निकरि आवइ  
अउर दिन क सुरु करइ क ?

१३ अय्यूब, का तू कबहुँ भिन्सारे क प्रकास क  
धरती पइ छाइ जाइ क कहा ह

अउर का कबहुँ ओहसे दुस्सन क लुकाइ क  
जगहिया क तजि देइ क मजबूर करइ क  
कहा ह ?

१४ जब भिन्सारे क प्रकास धरती पइ पड़त ह  
तउ धरती क रूप व आकृति अइसा प्रगट होत ह  
जइसे नरम मिट्टी क मुहर स दबाइ स होत ह ।  
एकर रूप रेखा ओढ़नन क सलवटन क नाई उभरत  
ह ।

१५ दुस्त लोगन स प्रकास लइ लीन्ह गवा ह ।  
नीक अउर ओन बाजूअन क जउन कि उ पचे बुरा  
करम करइ बरे उठाएस तोड़ दीन्ह ग रहेन ।

१६ “अय्यूब, बतावा का तू कबहुँ सागर क गहिर  
तहे मँ गवा अहा  
जहाँ स सुरु होत हका तू कबहुँ सागर क स्त्रितों  
पइ चला अहा ?

१७ अय्यूब, का तू कबहुँ उ फाटकन क लख्या ह,  
जउन मउते क लोक लइ जात हीं ?

का तू कबहुँ ओन फाटकन क लख्या जउन मउत  
क अधियार जगह क लइ जात हीं ?

१८ अय्यूब, तू जानत अही कि इ धरती केतनी बड़ी  
अहइ ?

तू मोका बतावा अउर तू इ सब कछु जानत अहा ।

१९ “अय्यूब, प्रकास कहाँ स आवत अहइ ?

अउर अधियारा कहा स आवत ह ?

२० अय्यूब, का तू प्रकास अउ अधियारा क अइसी  
जगह लइ जाइ सकत ह जहाँ स उ सबइ  
आए होइ ?

जहाँ उ सबइ रहत हीं हुआँ पइ जाइ क मारग का  
तू जानत अहा ?

२१ अय्यूब, मोका निहचय अहइ कि तोहका सारी  
बातन मालूम अइँ काहेकि तू बहोत ही बूढ़ा  
अहा ।

जब वस्तुअन क रचना भइ रही तब तू हुआँ रह्या ।

२२ “अय्यूब, का तू कबहुँ ओन भण्डार क कोठरियन  
मँ गना अहा

जहाँ मइँ बरफ अउ ओलन क धरा करत हउँ ?

२३ मइँ बरफ अउ ओलन क विपत्ति क समइ मँ अउ  
जुद्ध

अउर लड़ाइ क समइ मँ उपयोग करइ बरे बचाए  
राखत हउँ ।

२४ अय्यूब, का तू कबहुँ अइसी जगह गवा अहा,  
जहाँ स सूरज उगत ह

अउ जहाँ स पुरवइया सारी धरती पइ छाइ जाइ  
बरे आवत ह

२५ अय्यूब, भारी बर्खा बरे अकास मँ कउन नहर  
खोदेस ह,

अउर कउन गरजनवाले बिजली क रस्ता बनाएस ह

२६ अय्यूब, कउन हुआँ भी पानी बरसाएस,

जहाँ कउनो भी नाही रहत ह

२७ उ बर्खा उ खानी भुईया क खूब देर क पानी देत ह

अउ घास जामब सुरु होइ जात ह ।

२८ अय्यूब, का बर्खा क कउनो बाप अहइ ?

ओस क बूदन क कउन बनावत अहइ ?

२९ अय्यूब, बरफ क महतारी कउन अहइ ?

आकास क पाला क कउन पइदा करत ह ?

३० पानी जमिके चट्टान जइसा कटोर बन जात ह, अउर सागर क ऊपर क सतह जम जावा करत ह ।

३१ “अय्यूब, सप्तर्षि तारन क का तू बाँध सकत ह ?

का तू मिरगसरा का बन्धन खोल सकत ह ?

३२ अय्यूब, का तू तारा समूहन(कहकसाँ) क ठीक वेला पइ निकार सकत ह ?

का तू भालू क ओकरे बच्चन क संग अगुअइ कइ सकत ह ?

३३ का तू ओन नेमन क जानत ह, जउन नभ पइ सासन करत हीं ?

का तू ओन नेमन क धरती पइ लागू कइ सकत ह ?

३४ “अय्यूब, का तू गोहराइके बादरन क आदेस दइ सकत ह,

कि उ पचे भारी बर्खा क साथ घेरि लेइँ ।

३५ अय्यूब बतावा, का तू बिजुरी क जहाँ चाहत्या पठइ सकत अहा ?

अउर का तोहरे निअरे आइके बिजुरी कही अय्यूब, हम हिआँ अही बतावा तू का चाहत ह ?”

३६ “मनई क मन मैं विवेक क कउन राखत ह ?

लोगन क चिजियन क समझइ बरे छमता कउन देत ह ?

३७ अय्यूब कउन आपन बुद्धि स बादरन क गनेस ह ?

कउन आकास क पानी क चाम थेले क उंडेल सकत ह ?

३८ बर्खा धूरि क कीचंड बनाइ देत ह

अउर माटो क लौदा आपुस मैं चिपक जात हीं ।

३९ “अय्यूब, का तू सिंह क आहार पाइ सकत ह ?

का तू मुखान सेरनी क बच्चन क पेट भरि सकत ह ?

४० उ सबइ सेर आपन खोहन मैं पड़ा रहत हीं

अउर सिकार बरे झाड़ी मैं दुबक क घात लगनवइ बरे बइटा रहत हीं ।

४१ अय्यूब, कउआ क कबेला चारा पाए बगइर एहर ओहर भटकत भए परमेस्सर क दुहाइ देत हीं ।

कउन ओनका चारा देत ह ?

३९ ? “अय्यूब का तू जानत अहा कि कब पहाड़ी बोकरियन बियात हीं ?

का तू कबहुँ लख्या जब हिरणी बियात ह

४२ अय्यूब, का तू जानत ह पहाड़ी बोकरियन

अउ महतारी हरिणियन केतने महीने आपन बच्चन क गर्भ मैं राखत हीं ?

का तोहका पता अहइ कि ओनकर बियाइ क उचित समइ का अहइ ?

४३ का तू जानत ह क उ पचे बच्चा क जनम दइ बरे कब झुकत ह ।

का तू जानत ह कि उ पचे आपन बच्चन क कब जनम देत ह ।

४४ पहाड़ी बोकरियन अउर हरिणि महतारी क बच्चन खेतन मैं हट्टा कट्टा होइ जात हीं ।

फुन उ पचे आपन महतारी क तजि देत हीं, अउर फुन लउटिके वापस नाही अउतेन ।

४५ “अय्यूब, जंगली गदहन क कउन अजाद छोड देत ह ?

कउन ओनकर रस्सन क खोलेस अउर ओनका बन्धन स अजाद किहेस ?

४६ इ मइँ परमेस्सर हउँ जउन बनेर गदहा क घर क रूप मैं रेगिस्तान दिहेउँ ।

मइँ ओनका रहइ बरे उजाइ धरती दिहेउँ ।

४७ बनेर गदहा सोर स भरा भवा सहरन क लगे नाही जात ह

अउर कउनो भी मनई ओका काम करवावइ बरे नाही साधत ह ।

४८ बनेर गदहन पहाइन मैं घूमत हीं

अउर उ पचे हुआँइ घास चरत रहत हीं ।

उ पचे हुआँइ पर हरिअर घास चरइ क हेरत रहत हीं ।

४९ “अय्यूब, बतावा, का कउनो जंगली साँइ तोहरी सेवा बरे राजी होइ ?

का उ तोहरे चरही मैं राति क रुकी ?

५० अय्यूब, का तू जंगली बर्खा पइ जुआ रख पइ आपन खेत जोतँवाइ सकत ह ?

का घाटी क तोहरे वास्ते जोतँइ बरे उ पचन पइ जुआ रखइ जाब्या ?

५१ जंगली साँइ बहोत मजबूत होत ह ।

मुला का तू आपन काम करइ बरे ओन पइ भरोसा कइ सकत ह ?

१२ का तू ओह पइ भरोसा कइ सकत ह कि उ तोहार अनाज बटोरइ

अउर ओका दाँवइ मँड़ाइ ॥क खरिहाने मँ लिआवइ।

१३ “सुतुरमुर्ग जब खुस होत ह उ आपन पंख फड़फड़ावत ह।

मुला ओकर पंख सारस क पंख जइसे नाहीं होतेन।

१४ मादा सुतुरमुर्ग धरती पइ अण्डा देत ह।

सबइ अण्डा रेत मँ गरम होइ जात ह।

१५ मुला सुतुरमुर्ग बिसरि जात ह कि कउनो ओकरे

अण्डन पइ चलिके कुचर सकत ह,

या कउनो बनेर पसु ओनका तोड़ सकत ह।

१६ मादा सुतुरमुर्ग आपन नान्ह बच्चन पइ कठोर होइ जात ह

जइसे उ पचे ओकर बच्चन नाहीं अहइ।

अगर ओकर बच्चन मरि भी जाई तउ भी ओका

चिन्ता नाहीं होतह, अउर ओकर सब काम अकारथ होत ह।

१७ परमेस्सर सुतुरमुर्ग क विवेक नाहिं दिहेस, अउर उ ओका कउनो समझदारी नाहीं दिहस ह।

१८ मुला जब सुतुरमुर्ग दउड़इ क उठत ह

तब धोड़न अउ ओकरे सवार पइ हँसत ह।

१९ “अय्यूब, बतावा का तू धोड़न क बल दिहा

अउर का तू ही ओकर गटई पइ फहरती अयाल जमाया ह ?

२० अय्यूब, बतावा जइसे टिडडी कूद जात ह तू वइसे धोड़ा क कुदाया ह

घोड़ा ऊँची अवाजे मँ हिनहिनात ह अउर लोग डेराइ जात हीं।

२१ घोड़ा घुस अहइ कि उ बहोत बलवान बाटइ अउर आपन खुरे स धरती क खतन रहत ह।

जुदध मँ जात भवा घोड़ा तेज दौड़ जात ह।

२२ घोडा डरे क हँसी उड़ावत ह काहेकि उ कबहुँ नाहीं डेरात।

घोड़ा कबहुँ भी जुदध स मुँह नाही मोड़त ह।

२३ घोड़ा क बगल मँ तरकस थिरकत रहत हीं।

घोड़सवारन क भलन अउ हथियार धूपे मँ चमचामत रहत हीं।

२४ घोड़ा बहोत उत्तेजित अहइ, मैदान पइ उ तेज चाल स दउड़त ह।

घोड़ा जब बिगूल क आवाज सुनत ह तब उ सान्त खड़ा नाहीं रहि सकत।

२५ बिगूल क ध्वनी पइ घोड़ा हिन ‘हिनावत’ ह। उ बहोत ही दूर स जुद्ध क सूँघ लेत ह।

उ सेना क सनापती क आदेस अउर जुध्या क हाहाकार अउ जयजयकार क सुन लेत ह।

२६ “अय्यूब, का तू बाज क सिखाया आपन पखनन क फइलाउव अउर दक्खन कईती उड़ि जाब।

२७ अय्यूब का तू उकाब क उड़इ क अउर ऊँच पहाड़न मँ आपन झोझ बनावइ क आगया देत ह।

२८ उकाब चट्टाने पइ रहा करत ह।

ओकर किला चट्टान होत ह।

२९ उकाब किला स आपन सिकार पइ निगाह राखत ह।

उ बहोत दूर स आपन सिकार क लखि लेत ह।

३० गिद्ध क बच्चन लहु चाटा करत हीं।

जहाँ भी ल्हासन पड़ा होत हीं हुवाँ गिद्ध बटुर जात हीं।”

१ यहोवा अय्यूब स कहत ह:

२ “अय्यूब तू सर्वसक्तीमान परमेस्सर स तर्क किहा।

तू मोर निन्दा किहस।

अब तोहका जवाब दइ चाही।”

३ एह पइ अय्यूब कहइ बरे देत भए परमेस्सर स कहेस:

४ “मई तउ कछू कहइ बरे बहोत ही तुच्छ हुउँ।

मई तोहसे का कहि सकत हउँ ?

मई आपन हाथ

आपन मुँहे पइ रख लेब।

५ मई एक दाई कहेउँ मुला अब मई जवाब नाही देबउँ।

फुन मई दुबारा कहेउँ मुला अब अउर कछू नाही बोलब।”

६ एकरे पाछे यहोवा आँधी मँ बोलत भए अय्यूब स कहेस।

७ “अय्यूब, तू मनई क तरह तइयार होइ ज।

मई तोहसे कछू सवाल पूँछव अउर तू ओन सवालन क जवाब मोका देब्या।

८ “अय्यूब का तू सोचत अहा कि मई निआउ स पूरा नाही हउँ।

का तू मोका बुरा काम करइ क दोखी मानत अहा ताकि तू इ देखौइ सका कि तू उचित अहा ?

॥३९:१२ दाँवइ मँड़ाइ खेले क काटे क पाछे झुरान दाना ओर पउधा क खरिहाने मँ लिआवइ क बाद दाना क धिलका स अलग कीन्ह जात ह। पिटनी सा या बर्धा क बँधा क मँड़ाइ अउ दवाँइ कीन्ह जात ह।



१ अय्यूब, बतावा का मोर सस्त्र एतना  
सक्तीसाली अहइ जेतना कि  
मोर(परमेस्सर) सस्त्र अहइ! ?  
का तू आपन वाणी क ओतना ऊँच गरजिके बोल  
सकत ह जेतना मोर वाणी अहइ! ?  
१० अगर तू वइसा कइ सकत ह तउ तू खुद क आदर  
अउर महिमा द्या  
अउ ओढ़ना क तरह वफादारी क सान क ओढ़  
ल्या ।  
११ अय्यूब, अगर तू मोरे समान अहा, तउ  
अभिमानी लोगन स घिना करा ।  
अय्यूब तू ओन अंहकारी लोगन पइ आपन किरोध  
बरसावा अउ तू ओनका विनम्र बनाइ दया ।  
१२ हाँ, अय्यूब, ओन अंहकारी लोगन क लखा  
अउर तू ओनका विनम्र बनाइ दया ।  
ओन दुस्टन क तू कुचर दया जहाँ भी उ पचे खड़ा  
होइ ।  
१३ तू सबहिं घमण्डियन क माटी मँ गाइ दया  
अउर ओनकइ देहन पइ कफन लपेटिके तू कब्रन  
मँ धइ दया ।  
१४ अय्यूब, अगर तू एँन सबइ बातन क कइ सकत  
ह तउ मइ तहार परसंसा करब  
काहेकि तू खुद क बचाइ सकत ह ।  
१५ “अय्यूब, लखा मइ उ बहमोथ (जलगजे) §§क  
पैदा किहेउँ ।  
अउर उ मइ ही ह जउन तोहका बनाएँ ह ।  
उ बहमोथ उहइ तरह घास खात ह, जइसे गइया  
घास खात ह ।  
१६ बहमोथ क बदन मँ बहोत ताकत होत ह ।  
ओकरे पेटे क माँसपेसियन बहोत ताकतवर होत  
हीं ।  
१७ बहमोथ क पूँछ मजबूत अइसी होत ह जइसे  
देवदार क वृच्छ खड़ा रहत ह ।  
ओकरे गोड़े क माँसपेसियन बहोत मजबूत होत  
हीं ।  
१८ बहमोथ क हाड़न काँसा क तरह मजबूत होत  
हीं,  
अउर गोड़ ओकरे लोहे क ढूँढन जइसे ।  
१९ बहमोथ महानतम पसु अहइ जेका मइ बनाएँ उँ  
ह ।  
हिआँ तलक कि ओकर सिरजनहार भी ओका लगे  
तरवार लइ क जात ह ।

२० बहमोथ ओन घासे क खात ह जउन पहाड़े पइ  
उपजात ह  
जहाँ बनेर पसु खेलत हीं ।  
२१ बहमोथ कमल क पउधन क नीचे सोवत रहत  
ह  
अउ कीचंड मँ सरकण्डन क आइ मँ छूपा रहत ह ।  
२२ कमल क पउधन बहमोथ क आपन छाया मँ  
छिपावत हीं ।  
उ बेंत क पेड़न क खाले रहत ह, जउन नदी क  
निचके उगत हीं ।  
२३ अगर नदी मँ बाढ़ आइ जाइ तउ भी जलगज  
परात नाहीं ह ।  
अगइ यरदन नदी भी ओकरे मुँहे पइ थपड़ियावइ  
तउ भी उ डेरात नाहीं ह ।  
२४ बहमोथ क कउनो भी हुक लगाइ क नाहीं पकड़  
सकत ह ।

कउनो भी ओका जाली मँ नाहीं फँसाइ सकत ।  
१ “अय्यूब बतावा, का तू लिब्यातान क  
कउनो मछरी क काँटा स धइ सकत ह  
का तू एकर जिभ क रसी स बंध सकत ह ?  
२ अय्यूब, का तू लिब्यातान क नाक मँ नकेल डाइ  
सकत हया  
ओकरे जबड़न मँ काँटा फँसाइ सकत ह  
३ अय्यूब, का तू लिब्यातान क अजाद होइके बरे  
तोहसे विनती करी ?  
का उ तोहसे मीठी मीठी बातन करी ?  
४ अय्यूब, का तू लिब्यातान तोहसे सन्धि करी  
अउर सदा तोहरी सेवा क तोहका वचन देइ ?  
५ अय्यूब, का तू लिब्यातान क वइसे ही खेलब्या  
जइसे तू कउनो चिड़िया स खेलत ह  
का तू ओका रस्सा स बँधब्या जेहसे तोहार  
दासियन ओहसे खेल सकइ ।  
६ अय्यूब, का तू मछुआरा लिब्यातान क तोहसे  
बेसहइ क कोसिस करिहीं ?  
का उ पचे ओका कटिहीं अउर ओनका बइपारियन  
क हाथे बेचि सकहीं ?  
७ अय्यूब, का तू लिब्यातान क खाल मँ अउर माथे  
पइ भाला फेक हमला कइ सकत ह ?  
८ “अय्यूब, लिब्यातान पइ अगर तू हाथ डावा तउ  
जउन भयंकर जुद्ध होइ,  
तू कबहुँ भी विसाहि नाहीं पउब्या अउर फुन तू  
ओहसे कबहुँ जुद्ध न करब्या ।

§§४०:१५ बहमोथ (जलगजे) इ स्पसट नाहीं अहइ कि इ कउन तरह क जानेवर अहइ । होइ सकत ह कि इ दरियाइ घोड़ा अहइ या हाथी ।

१ अउर अगर तू सोचत ह कि तू लिब्यातान क पकड़ सकत ह, तउ इ बात क तू भूल जा। काहेकि ओका पकड़इ बरे कउनो आसा नाही अहइ।  
 तू तो बस ओका लखइ भर सही डेराइ जाब्या।  
 १० कउनो भी एतना वीर नाही अहइ, जउन लिब्यातान क जगाइके भड़कावइ।  
 “तउ फुन अय्यूब बतावा, मोरे विरोध मैं कउन टिक सकत ह!  
 ११ कउनो भी मनई जउन कि मोहे स मुकाबला करह उ सुउच्छित नाही रब्या।  
 सारे अकासे क खाले जउन कछू भी अहइ, उ सब कछू मोर ही अहइ।  
 १२ “अय्यूब मई तोहका लिब्यातान क सकती क बारे मैं बताउब।  
 मई ओकर सकती अउर रुप क सोभा क बारे मैं बताउब।  
 १३ कउनो भी मनई ओकर बाहरी आवरण (खाल) क भेद नाही सकत।  
 ओकर खाल दोहरी कवच क नाई अहइ।  
 १४ लिब्यातान क कउनो भी मनई मुँह खोलइ बरे मजबूर नाही कइ सकत ह।  
 ओकरे भी जबडे क दाँत सबहिं क भयभीत करत हीं।  
 १५ लिब्यातान क पिठिया पइ ढालन क कतार होत हीं,  
 जउन आपुस मैं जुड़ी होत हीं।  
 १६ इ सबइ ढालन आपुस मैं एतनी सटी होत हीं कि हवा तलक ओहमाँ प्रवेस नाही कइ पावत ह।  
 १७ इ सबइ ढालन एक दूसरे स जुड़ी होत हीं।  
 उ सबइ मजबूती स एक दूसरे स जुड़ी भई अहइ कि कउनो भी ओनका उखाड़िके अलग नाही कइ सकत।  
 १८ लिब्यातान जब छींकत ह तउ अइसा लागत ह जइसे बिजली सी कौधं गइ होइ।  
 आँखी ओकर अइसी चमकत हीं जइसे कउनो तेज प्रकास होइ।  
 १९ ओकरे मुँहना स बरत भइ मसान निकरत हीं, अउर ओहसे आगी क चिनगारियन बिखरत हीं।  
 २० लिब्यातान क नथुनन स धुआँ अइसा नकरत ह,  
 जइसे उबलत भइ हाँड़ी स भाप निकलत होइ।  
 २१ लिब्यातान क फूँक स कोयला सुलग उठत हीं अउर ओकरे मुँहे स लपक निकरत हीं।  
 २२ लिब्यातान क गटई बड़ी जबरदस्त अहइ, अउर लोग ओसे उरिंके दूर पराइ जात हीं।

२३ ओकरे खाल मैं कहीं भी कोमल जगह नाही अहइ।  
 उ लोहा क तरह कठोर अहइ।  
 २४ लिब्यातान क हिरदइ चट्टान क तरह होत ह। ओकर हिरदइ चक्की क नीचे क पाट क तरह सख्त अहइ।  
 २५ लिब्यातान स सरगदूत भी डर जात हीं। लिब्यातान जब पूँछ फटकारत ह, तउ ओन सबइ भाग जात हीं।  
 २६ लिब्यातार पइ जइसे ही भालन, तीर अउ तरवार पड़त हीं उ सबइ उछरिंके दूर होइ जात ह।  
 २७ लोहा क मोटी छड़न क उ तिनका जइसा अउर काँसा क सड़ी लकड़ी क तरह तोड़ देत ह।  
 २८ बाण लिब्यातान क नाहीं भगाइ पावत हीं। ओह पइ पाथर फेंकना, एक सुखा तिन्का फेंकन क नाई अहइ।  
 २९ लिब्यातान पइ जब मुगदर पड़त ह तउ ओका अइसा लागत ह माना उ कउनो बिनका होइ। जब लोग ओह पइ भालन फेंकत हीं, तब उ हँसा करत ह।  
 ३० विब्यातान क पेट क नीचे सिरा टूटा भए मट्टी क बासन क नाई तेज अहइ। जब उ चलत ह तउ कीचड़ मैं अइसा निसान छोड़त ह माना कि खेतन मैं हेगा लगावा गवा होइ।  
 ३१ लिब्यातान पानी क अइसे मथत ह, माना कउनो हाड़न उबलत होई।  
 उ अइसे बुलबुले बनावत ह माना बासन मैं खउलत भवा तेल होइ।  
 ३२ लिब्यातान जब सागर मैं तैरत ह तउ आपन पीछे उ सफेद झागन जइसी राह छोड़त ह, जइसे कउनो उज्जर बारे क सफेद बिसाल पूँछ होइ।  
 ३३ लिब्यातान सा कउनो अउर जन्तु धरती पइ नाहीं अहइ।  
 उ अइसा पसु अहइ जेका निडर बनाववा गवा।  
 ३४ उ हर एक घमण्डी जानेबर क ऊपर नजर रखत ह  
 सबहिं जंगली पसुअन क उ राजा अहइ।”

अय्यूब क यहोवा क जवाब

४२ १ एँह पइ अय्यूब यहोवा क जवाब दे भए कहेस।  
 २ “यहोवा, मई जानत हउँ कि तू सब कछू कइ सकत अहा।

तू सबइ योजना बनाइ सकत अहा अउर तोहर सबइ योजना क कउनो भी नाहीं बदल सकत अउर न ही एका रोका जाइ सकत ह ।

३ यहोवा, तू इ सवाल पूछ्या कि 'इ अबोध मनई कउन अहइ ? जउन इ सबइ मूर्खता स भरी बातन कहत अहइ ?'

यहोवा, मई ओन चीजन क बारे मँ बातन किहेउँ जेनका मई समझत नाहीं रहेउँ ।

यहोवा, मई ओन चीजन क बारे मँ बातन किहेउँ जउन मोरे समुझ पावइ बरे बहोत अचरज भरी रहिन ।

४ "यहोवा, तू मोस् कहया, 'हे अय्यूब सुना अउर मई बोलब ।

मई तोहसे सवाल पूँछब अउर तू मोका जवाब देव्या ।'

५ यहोवा, बीते भए काल मँ मई तोहरे बारे मँ सुने रहेउँ

मुला खुद आपन आँखिन स मई तोहका देखि लिहेउँ ह ।

६ एह बरे अब मई खुद आपन बरे लज्जात हउँ । मई आपन जिन्नगी क राह बदलइ क इच्छा दिखावइ बरे

धूर अउर राखी मँ बैठा करत हउँ ।"

यहोवा क अय्यूब क संपत्ति क लउटाउब

७ यहोवा जब अय्यूब स आपन बात कइ चुका तउ यहोवा तेमान क निवासी एलीपज स कहसः "मई तोहसे अउर तोहरे दुइनउ दोस्तन स कोहान हउँ काहेकि तू मोरे बारे मँ उचित बातन नाहीं कहे रहया । मुला अय्यूब मोरे बारे मँ उचित बात कहे रहा । अय्यूब मोर दास अहइ । ५ एह बरे अब एलीपज तू सात बर्धा अउर सात टु भेडिन लइके मोर दास अय्यूब क लगे जा अउर आपन बरे होमबलि क रूप मँ ओनकर भेंट चढावा । मोर सेवक अय्यूब तोहरे बरे परथना करी । तब निहचइ ही मई ओकरी परथना क जवाब देहउँ । फुन मई तोहका वइसी सजा नाहीं देब जइसे सजा दीन्ह जाइ चाही रही काहेकि तू बहोतइ मूर्ख रहया ।

मोरे बारे मँ उचित बातन नाहीं किह्या जबकि मोरे सेवक अय्यूब मोरे बारे मँ उचित बातन कहे रहा ।"

९ तउ तेमान क निवासी एलीपज, सूह क निवासी बिल्दद अउर नामात क निवासी सोपर यहोवा क आग्या क मानेस एँह पइ यहोवा अय्यूब क पराथना सुन लिहस ।

१० इ तरह जब अय्यूब आपन मीतन बरे परथना कइ चुका तउ यहोवा अय्यूब क फुन स कामयाब किहस । परमेस्वर जेतना ओकरे लगे पहिले रहा, ओहसे भी दुगुना ओका दइ दिहस । ११ अय्यूब क सबहिं भाई अउ बहिनियन अय्यूब क घर वापस आइ गएन अउर कउनो जउन अय्यूब क पहिले जानत रहा, ओकरे घरे आवा । अय्यूब क संग उ सबइ एक बड़की दावत मँ खाना खाएन । काहेकि यहोवा अय्यूब क बहोत कस्ट दिहे रहा, एह बरे उ पचे अय्यूब क दिलासा दिहेन । ओन मँ स हर कउनो अय्यूब क सोने क सिक्का अउर सोना क कान क बाली भेंट मँ दिहस ।

१२ यहोवा अय्यूब क जिन्नगी क पहिले हींसा स भी जियादा ओकरी जिन्नगी क पिछला हींसा क आपन आसीरवाद दिहस । अय्यूब क लगे चौदह हजार भेड़, छः हजार ऊँट, दो हजार बैल जउर एक हजार गदहिन होइ गइन । १३ अय्यूब क सात पूत अउ तीन बिटियन भी होइ गइन । १४ अय्यूब आपन सब स बड़की बिटिया क नाउँ राखेस यामीना । दुसर की बिटिया क नाउँ धेरस कसीआ । अउर तीसरी क नाउँ राखेस केरेन्हप्पूक । १५ सारे प्रदेश मँ अय्यूब क बिटियन सब स सुन्नर मेहररुअन रहिन । अय्यूब आपन पूतन क साथ आपन दौलत क एक हींसा आपन बिटियन क भी वसीयत मँ दिहस ।

१६ एकरे पाछे अय्यूब एक सौ चालीस साल तलक अउर जिअउ रहा । उ आपन बच्चन, आपन पोतन, आपन परपोतन अउर परपोतन क भी संतानन यानी चार पीढ़ियन क लखइ बरे जिअत रहा । १७ जब अय्यूब क मउत भइ, उ समइ उ बहोत बुढान रहा । ओका बहोत नीक अउर लम्बी जिन्नगी प्राप्त भइ रही ।